श्रीगणेशाय नमः ।



श्रीसूर्यनारायणाय नमः ।



श्रीः ।

अथ शीघ्रबोधविषयानुक्रमणिका ।

प्रथमप्रकरणम् १.

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीः ।

अथ शीघ्रबोधः ।

(भाषाटीकासमेतः)



श्लोकः ।

भासयंतंजगद्भासानत्वाभास्वंतमव्ययम् ॥
क्रियतेकाशिनाथेनशीघ्रबोधायसंग्रहः ॥१॥

टीका–प्रकाशमान जगत्में अपनीकांति से ऐसे सूर्य-नारायण अविनाशी को नमस्कार करके काशिनाथजी शीघ्रबोधार्थ ग्रंथ संग्रह करते हैं ॥ १ ॥

रोहिण्युत्तररेवत्योमूलंस्वातिर्मृगोमघा ॥
अनुराधाचहस्तश्चविवाहेमंगलप्रदाः ॥ २ ॥

टीका–रोहिणी, तीनों उत्तरा, मूल, स्वाती, रेवती, मृग-शिर, मघा, अनुराधा, हस्त यह ग्यारह नक्षत्र विवाहमें मंगलके दाताहैं ॥ २ ॥ इति विवाहनक्षत्राणि ।

माघेधनवतीकन्याफाल्गुनेसुभगाभवेत् ॥
वैशाखेचतथाज्येष्ठेपत्युरत्यतवल्लभा ॥ ३ ॥

टीका–माघमासमें विवाह करे तो कन्या धनवती होय, फाल्गुनमें सौभाग्यवती होय, वैशाखमें तथा ज्येष्ठमें विवाह होय तो अपने पतिको अत्यत प्यारी होय ॥ ३ ॥

आषाढेकुलवृद्धि स्यादन्येमासाश्चवर्जिताः।
मार्गशीर्षमपीच्छति विवाहेकेपिकोविदा ४

टीका–जो आषाढमासमें विवाह करे तो कुलकी वृद्धि होय, अन्ये मासकहिये और जो महीने हैं सो विवाहमें वर्जित हैं और मार्गशीर्ष जो है सो कोई आचार्य विवाहको शुभ कहते हैं ॥ ४ ॥ इति विवाहमासाः।

अमावस्याचरिक्ताचवारवेलाचजन्मभम् ॥
गंडांतंक्रूरवाराश्चवर्जनीयाःप्रयत्नतः ॥ ५ ॥

टीका–अमावस्या और रिक्ता तिथि कहिये ४। ९। १४ वारवेला सूर्यार्कइत्यादि और जन्मको नक्षत्र और क्रूरवार रवि, मंगल, शनि और गडांत यह विवाह में यत्नपूर्वक वर्जे हैं ॥ ५ ॥

नंदाभद्राजयारिक्तापूर्णाश्चतिथय क्रमात् ॥

वारत्रयंसमावर्त्यास्तिथयःप्रतिपन्मुखाः ६॥

टीका—नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा यह पांच नाम तिथिनके कहेहैं, तिनमें नंदा कहिये १।६।११, भद्रा कहिये २।७।१२, जया कहिये ३।८।१३, रिक्ता कहिये ४।९।१४ पूर्णा कहिये ५।१०।१५ प्रतिपदासों गनिये ॥ ६ ॥ इति तिथिनाम।

तुर्योर्केसप्तमश्चंद्रेद्वितीयोभूमिनंदने ॥
चंद्रपुत्रेपंचमश्चदेवाचार्येतथाष्टमः ॥ ७ ॥

टीका—अब वारवेला कहते हैं. रविवारको चौथे याममें अर्धयाम ४ और चंद्रको ७ भौमको २ बुधको ५ गुरुवारको ८ यामार्ध ॥ ७ ॥

दैत्यपूज्येतृतीयश्चशनौषष्ठश्चनिंदितः ॥
प्रहारार्धेशुभेकार्येवारवेलाचकथ्यते ॥ ८ ॥

टीका—और शुक्रवार ३ शनिवारको ६ इसप्रकारसे इन यामनके अर्धयामनमें वारवेला जानिये, ये शुभकार्यमें निंदित हैं. इकीस कोठेके चक्रमें समझलेना ॥ ८ ॥ इति वारवेला।

वारवेलाचक्रम्.

४	७	२	५	८	३	६	याम.
३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	घटि.
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार.

भद्राकर्कटयोगंचतिथ्यंतंयमघंटकम् ॥ द-
ग्धातिथिंचभांतंचकुलिकंचविवर्जयेत् ॥९॥

टीका—भद्रा अरु कर्कटयोग अरु तिथिके अंतकी घडी २ अरु यमघंट योग अरु दग्धा तिथि अरु नक्षत्रके अंतकी घडी १ अरु कुलिक योग इतने योग विवाहमें वर्जित हैं ॥९॥

दशम्यांचतृतीयायांकृष्णपक्षेपरेदले ॥ सप्त
म्यांचचतुर्दश्यांविष्टि पूर्वदलेस्मृता ॥१०॥
एकादश्यांचतुर्थ्यांच शुक्लपक्षेपरेदले ॥ अ-
ष्टम्यांपूर्णिमायांचविष्टि पूर्वदलेस्मृता ११॥

टीका—अब कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष की कौनसीतिथिमें पूर्वदल अथवा परदल विषे विष्टि जो भद्रा होवीहै सो चक्रविषे समझलीजे १०।११

अथपूर्वदलभद्रातिथिपक्ष.			
कृष्ण	३	१०	परार्द्ध
कृष्ण.	७	१४	पूर्वार्द्ध
शुक्ल	४	११	परार्द्ध
शुक्ल	८	१५	पूर्वार्द्ध

मेषमकरवृषकर्कटस्वर्गे कन्यामिथुनतुला
धननागे ॥ कुंभमीनअलिकेसरिमर्त्यौ वि
चरतिभद्रात्रिभुवनमध्ये ॥ १२ ॥

टीका—ये भद्रा स्वर्गलोक अरु मृत्युलोक अरु पाताल लोक तीनोंविषे वास करतीहै. मेष, मकर, वृष, कर्क, इन चंद्रमामें स्वर्गलोकमें जानिये. कन्या, मिथुन, तुला, धनके चंद्रमामें. भद्रा पाताललोकमें. अरु कुंभ, मीन, वृश्चिक, सिंह चंद्रमामें. भद्राका मृत्युलोकमें वास जानिये ॥ १२ ॥

स्वर्गेभद्राशुभंकार्यंपातालेचधनागमम् ॥
मृत्युलोकेयदाविष्टिःसर्वकार्यविनाशिनी ॥

टीका—जो स्वर्गलोकमें भद्रा होय तो शुभकार्यको करै और पातालमें होय तो द्रव्यलाभ होय. जो मृत्युलोकमें होय तो सर्वकार्य विनाश करै ॥ १३ ॥

सम्मुखेमृत्युलोकस्थापातालेचअधोमुखी ॥
ऊर्ध्वस्थास्वर्गगाभद्रासंमुखेमरणप्रदा १४॥

टीका—जो मृत्युलोकमें भद्रा होय तो सन्मुख कहिये पातालमें अधोमुख. स्वर्गमें ऊर्ध्वमुख. इनमें जो सन्मुख भद्रा होय तो मृत्युकी दाताहै ॥ १४ ॥

दिवाभद्रायदारात्रौरात्रिभद्रायदादिने ॥ त-
दाविष्टिकृतोदोषोनभवेत्सर्वसौख्यदा॥१५॥

टीका—जो कृष्णपक्षमें सप्तमी चौदशिकी और शुक्लपक्षमें अष्टमी पूर्णिमाकी पूर्वदल भद्रा दिनसंज्ञक है सो रात्रिमें आनि परे और शुक्लपक्षमें ४ । ११ कृष्णपक्षमें ३ । १० की पर दलभद्रा रात्रिसंज्ञक है सो दिनमें परै तो भद्राको दोषनहींहै. ये भद्रा सुखकी दाताहै ॥ १५ ॥ इति भद्रानिर्णयः ।

मीनेचापेद्वितीयाचचतुर्थीवृषकुंभयो ॥ मेषकर्कटयोःषष्ठीकन्यायुग्मेषुचाष्टमी॥१६॥ दशमीवृश्चिकेसिंहेद्वादशीमकरे तुले ॥ एतास्तुतिथयोदग्धाःशुभेकर्मणिवर्जिताः ॥१७॥

टीका—मीनके अरु धनके सूर्यनमें द्वितीया २.अरु वृषभ-कुंभ, सूर्यनमें चौथ ४, मेष, कर्क सूर्यमें ६ कन्या, मिथुन सूर्यनमें८, वृश्चिक, सिंह सूर्यनमें १०, मकर, तुला रविमें १०, इनसक्रांतिनमें इतनी तिथी दग्धा जानिये शुभकार्यके विषे वर्जित करीहैं ॥ १६ ॥ १७ ॥ दग्धातिथिः ।

मासांतेदिनमेकंतुतिथ्यंतेघटिकाद्वयम् ॥ घटिकानांत्रयंमांतेविवाहेपरिवर्जयेत॥१८॥

टीका—मासांत कहिये संक्रांतिके अंतका एकदिन, तिथ्यंत कहतेहैं. तिथिके अंतकी द्वय घटी. भांत जो है नक्षत्रके अंतकी तीन घटी. ये विवाहमें वर्जित हैं ॥ १८ ॥

मासांतेम्रियतेकन्यातिथ्यंतेस्यादपुत्रिणी ॥
नक्षत्रांतेचवैधव्यंविष्टौमृत्युर्द्वयोर्भवेत् १९॥

टीका—मासके अंतमें भामरे परै तौ (भामरे नाम फेरोकूं कहतेहैं) कन्याकी मृत्यु होय. तिथ्यंतमें अपुत्रिणी होय. नक्षत्रके अंतमें विधवा होय. भद्रानमें विवाह होय तौ कन्या वर दोनोंकी मृत्यु होय ॥ १९ ॥

सूर्येचसप्तमीसोमेषष्ठीभौमेचपंचमी ॥ बुधे चतुर्थीदेवेज्यतृतीयाभृगुनंदने ॥२०॥ द्वितीयावर्जनीयाचप्रतिपच्चशनैश्चरे ॥ कुलिकाख्योहियोगोयंविवाहादौनशस्यते ॥ २१ ॥

टीका—अब कुलिकयोग कहते हैं, सो चक्रमें समझ लीजे. चक्रमें लिखे हुये इन वारनको इन तिथिनमें कुलिकयोग होताहै ॥ २० ॥ २१ ॥

अथकुलिकयोगतिथिचक्रम्.

र.	च	म	बु	गु	शु	श	वार.
७	६	५	४	३	२	१	तिथि.

इति कुलिकयोगः ।

अवर्गोगरुडोज्ञेयोविडाल स्यात्कवर्गक ॥
चवर्गं सिंहनामास्याट्टवर्गं कुक्कुर स्मृतः २२
सर्पाख्याःस्यात्तवर्गोपिपवर्गोमूषक स्मृत ॥
यवर्गोमृगनामास्यात्तथामेषःशवर्गक २३

टीका—अवर्गादि अष्टौ व्यापार विवाहादि विचारिवेको कहते हैं, जाके नामको जो अक्षर पहिला होय सो वो वही वर्ग कहिये जिनमें अ, इ, उ, ए, ये अवर्ग हैं औ गरुडवर्ग कहवे हैं क, ख, ग, घ, ङ ये बिडालवर्ग च, छ, ज, झ, ञ, ये सिंहवर्ग ट, ठ, ड, ढ, ण, ये श्वानवर्ग कहते हैं त, थ, द, ध, न ये सर्पवर्ग प, फ, ब, भ, म, ये मूषकवर्ग य, र, ल, व, मृग वर्ग श ष, स, ह, मेंढावर्ग ॥ २२ ॥ २३ ॥

स्ववर्गात्पंचमेशत्रुश्चतुर्थेमित्रसञ्ज्ञकः ॥ उ-
दासीनेतृतीयश्चवर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ २४ ॥

टीका—अपने वर्गते पांचवों वर्ग वैर जानिये चौथे मित्रता और तीसरे वर्गसों उदासीनता है ॥ २४ ॥ इति अष्टकवर्गः ॥

अश्विनीमृगरेवत्योहस्त पुष्यः पुनर्वसुः ॥
अनुराधाश्रुति स्वातीकथ्यतेदेवतागणः२५

टीका—अश्विनी, मृग, रेवती, हस्त पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, स्वाती ये देवतागण कहिये ॥ २५ ॥

तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्चतिस्रोऽप्यार्द्राचरोहिणी
भरणीचमनुष्याख्योगणश्चकथितोबुधैः२६

टीका—पूर्वा ३, उत्तरा ३, आर्द्रा, रोहिणी, भरणी इनमें जन्म होय तो मनुष्यगण जानिये ॥ २६ ॥

कृत्तिकाचमघाश्लेषाविशाखाशततारकाः ॥
चैत्राज्येष्ठाधनिष्ठाचमूलंरक्षोगणःस्मृतः ॥

टीका—कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चैत्रा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा ये नक्षत्र राक्षसगण कहिये ॥ २७ ॥

स्वगणेपरमाप्रीतिर्मध्यमादेवमर्त्ययोः ॥
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहोदेवरक्षसोः२८॥

टीका—जो स्त्रीपुरुष एकही गण होय तो अधिक प्रीति होय. देव मनुष्य होय तो मध्यम प्रीति होय, मनुष्य अरु राक्षस गण होय तो मृत्यु होय अरु देव राक्षस होय तो कलह होय ॥ २८ ॥

षष्ठेस्त्रीपुंसयोर्वैरंमृत्युःस्यादष्टमेध्रुवम्॥ द्वि-
द्वादशेच दारिद्र्यंनवमेपंचमेकलिः ॥ २९॥

टीका—स्त्रीकी राशिते पुरुषकी राशि ६ होय तो वैर जानिये और स्त्री पुरुषते आठवें राशि आवै तो मृत्यु होय स्त्रीते आठै पुरुष होयतो शुभहै और २।१२ होय तो दारिद्रय होय और९।५होय तो कलह होय॥२९॥इतिराशिमेलनम्।

मीनालिकर्कटाविप्राः क्षत्रिमेषोहरिर्धनुः ॥
शूद्रोयुग्मतुलाकुंभौवैश्यो कन्यावृषोमृगः ॥

टीका—मीन, वृश्चिक, कर्क ये राशि ब्राह्मणवर्ण जानो मेष सिंह धन ये क्षत्रियवर्ण हैं मिथुन, तुला, कुंभ ये शूद्र-वर्ण हैं. कन्या, वृषभ, मकर ये वैश्य वर्ण हैं ॥ ३० ॥

नोत्तमामुद्वहेत्कन्यांब्राह्मणीं च विशेषतः ॥
म्रियतेहीन वर्णश्चब्रह्मणारक्षितोयदि ॥३१॥
विप्रवर्णेचयानारीशूद्रवर्णेचयः पतिः ॥ ध्रुवं
भवतिवैधव्यंशक्रस्यदुहितायदि ॥ ३२ ॥

टीका—जो कन्या उत्तमवर्ण होय वो अरु पुरुष हीनवर्ण

होय तो पुरुषकी निश्चय मृत्यु होय. याते उत्तम वर्ण कन्याते विवाह वर्जित है. तामें ब्राह्मणी विशेषकरके मने है. अरु जो ब्राह्मणवर्ण कन्यासों शूद्रवर्ण वरको विवाह होय तो जो शक्र-की कन्या होय तोभी वो निश्चयकरकैविधवा होय ३१।३२

पौष्णादिकंषट्कमुशंतिपूर्वं माद्रादिकंद्वाद-शमध्यभागम् ॥ पौरंदराद्यंनवकंभचक्रपरंच भागंगणकाविदग्धाः ॥ ३३ ॥

टीका—रेवती नक्षत्र आदिदेकै षट् ६ नक्षत्र पूर्वभागकहिये. और आर्द्रादि देकै १२ द्वादश नक्षत्र मध्यभागके हैं ज्येष्ठा आदि देकै नव नक्षत्र परभाग कहिये हैं ॥ ३३ ॥

पूर्वभागेपतिःश्रेष्ठोमध्यभागेचकन्यका ॥ परभागेचनक्षत्रेद्वयोःप्रीतिर्महीयसी ॥ ३४॥

टीका—पूर्वभागी पति होय और मध्यभागी स्त्री हो तो पति श्रेष्ठ कहिये. जो मध्यभागी स्त्री होय और परभागी पुरुष होय तो श्रेष्ठ कहिये. और स्त्री पुरुष दोनों परभागी होय तो आपुसमें अधिक प्रीति होय ॥ ३४ ॥

सिंहंविनावशाःसर्वेद्विपदानांचतुष्पदा ॥
भक्ष्याजलचरास्तेपांभयस्थानेसरीसृपाः ॥

टीका–द्विपद जोहै ताके वश और सब जीव हैं. परंतु एकसिंह नहीं है द्विपद और चतुष्पद इत्यादिक मनुष्य के सब वश हैं और जलके जीव जो हैं वे मनुष्यके भक्षणही हैं परंतु सर्प विछ राशी भयकारकहै ॥ ३५ ॥

मकरस्यपूर्वभागोमेषसिंहधनुर्वृषाः ॥ च-
तुष्पदा कीटसंज्ञ कर्कःसर्पश्चवृश्चिकः॥३६॥
तुलाचमिथुनंकन्यापूर्वार्द्धंधनुषश्चयत् ॥
द्विपदास्तुमृगार्द्धतुकुंभमीनौजलाश्रितौ ३७

टीका–मकरराशिको पहिले अर्धभाग, उत्तराषाढके तीनों चरण, अरु श्रवणके डेढचरणपर्यंतको चंद्रमा अरु मेष अरु सिंह अरु आधी धन अरु वृषभ ये ऐसे चतुष्पद चौपायेकी संज्ञा जानिये और कर्कराशि कीट संज्ञा है, वृश्चिक सर्पसंज्ञा है और तुला, मिथुन, कन्या और आधी धनको पहिलो भाग ये द्विपद जानिये कुंभ, मीन जलचर जानिये ॥ ३६ ॥ ३७॥ इति राशिवश्यप्रीतिः ।

अथ योनिचक्रम्.

अश्वि	रे	पु	रो.	आ.	पू.फा	पु.	उ.फा.	स्वा	ज्ये	चि.	पू.पा.	ध	ऽभि
श.	भ.	कृ	मृ.	मू.	म	ऽश्ले	उ.भा	ह.	ऽनु	वि.	श्र.	पू.	उ.ष.
घोड़ा	ग	छा	ना	श्वा.	मूषा	बि.	गो	भैं.	हि	व्या	वान	सिं	नकु

अश्विनीवारुणश्चाश्वोरेवतीभरणीगजः ॥ पुष्यश्चकृत्तिकाछागो नागश्चरोहिणीमृगः ॥ ३८ ॥ आर्द्रामूलमपिश्वाचमूषकःफाल्गुनीमघा ॥ मार्जारोदितिराश्लेषागोजातिरुत्तराद्वयम् ॥ ३९ ॥ माहिषःस्वातिहस्तौचमृगो ज्येष्ठानुराधिका ॥ व्याघ्रश्चित्रा विशाखाच श्रुत्याषाढौचमर्कटः ॥४० ॥ वसुभाद्रपदौसिंहोनकुलोऽभिजिद्विश्वयोः ॥ योनयःकथितामानांवैरमैत्रीविचार्यताम् ॥ ४१ ॥

टीका—इन चारों श्लोकोंका अर्थ योनिचक्रमें समझलेना चौदह योनिकोष्ठकके सन्मुख सबके अपने अपने कोष्ठक लिखे हैं ३८।३९।४०।४१ ॥ इतियोनिविचारनिर्णयः ॥

अथ योनिवैरम्

गोव्याघ्रगजसिंहमश्वमहिषं श्वैणचवभ्रूरगं वैरवानरमेषकंच सुमहत्तद्वद्बिडालोंदुरु ॥ लोकानांव्यवहारतोनिगदितं ज्ञात्वाप्रयत्ना दिदर्दंपत्योर्नृपभृत्ययोरपिसदा वर्ज्यंशुभ-स्यार्थिभिः ॥ ४२ ॥

टीका—गाई व्याघ्रको वैर. हाथी सिंहको वैर. घोडा भैंसाको वैर. नकुल सर्पको वैर. वानर मेंढाको वैर. बिलाव मूषकको वैर. ऐसो वैरभाव त्यागिकै योनिभीलि विचारिये यत्नपूर्वक स्त्रीपुरुष और स्वामिसेवकसों और अनेक लौकिक विवाहहेतुमें जरूर है ॥४२॥ इति योनिवैरम् ।

मरणपितृमात्रोश्चसंग्राह्यंनवपंचकम् ॥ वरस्यपंचमेकन्याकन्यायानवमेवरः ॥४३॥ एतत्त्रिकोणकंग्राह्यंपुत्रपौत्रसुखावहम् ॥ षडष्टकेभवेन्मृत्युर्यत्नंतस्यविचारयेत् ४४॥

टीका—जो पुरुषकी राशितें कन्याकी राशि ९ होय तो

तिसकरके पिताकी मृत्यु होय. और जो कन्याकी राशितें पुरुषकी राशि ५ होयतो ताकी माताकी मृत्यु होय और जो वरकी राशितें ५ पांचई राशि कन्याकी होय और कन्याकी राशितें ९ नवमें वरकी राशि होय तो यह त्रिकोण शुभ है. पुत्रपौत्रके सुखको दाता है और जो ६ छठे, आठवें८, होय तो मृत्यु होय तातें यत्न करि विचारिये ॥ ४३ ॥ ३४ ॥

इति राशिमेलनम्।

वरस्यभास्करबलंकन्यायाश्चगुरोर्बलम् ॥
द्वयोश्चंद्रबलंग्राह्यंविवाहोनान्यथाभवेत् ४५

टीका–वरको सूर्यबल चाहिये. और कन्याको बृहस्पतिका बल चाहिये और वरकन्याको चंद्रबल चाहिये ॥ ४५॥

अष्टमेचचतुर्थेचद्वादशेचादिवाकरे ॥ विवाहितोवरोमृत्युंप्राप्नोत्यत्रनसंशयः ॥ ४६ ॥

टीका–जो वरको सूर्य ४ । ८ । १२ होय तो विवाह करै मृत्यु होय ॥ ४६ ॥

जन्मन्यथद्वितीयेवापंचमेसप्तमेपिवा ॥ नवमेचदिवानाथेपूजयापाणिपीडनम् ॥ ४७ ॥

एकादशेतृतीयेवाषष्ठेवादशमेपिवा ॥ वरस्य शुभदोनित्यंविवाहेदिननायक ॥ ४८ ॥

टीका—जो वरकी राशिसे सूर्य १ । २ । ५।७ । ९ होय तो या परिहार वाक्यसों सूर्यकी पूजा दान जपादिक करके विवाह शुभ है. और जो ११ । ३ । ६ । १० रवि होय तो विवाह शुभ कहिये कल्याणको दाता है ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ इति रविबलम् ।

अष्टमेद्वादशेवापिचतुर्थेवाबृहस्पतौ ॥ पूजा तत्रनकर्तव्याविवाहेप्राणनाशक ॥ ४९ ॥

टीका—जो कन्याको बृहस्पति ४ । ८ । १२ होय तो विवाह भये सौ प्राणको घात करै ॥ ४९ ॥

षष्ठेजन्मनिदेवेज्येतृतीयेदशमेपिवा ॥ भूरि पूजापूजितःस्यात्कन्यायाः शुभकारक ५०

टीका—जो कन्याको बृहस्पति ६ । १ । ३ । १० होवे तो वडीपूजा दानादिक देके विवाह कीजै तो शुभ होय ॥ ५० ॥

एकादशेद्वितीयेवापंचमेसप्तमेपिवा ॥ नव मेचसुराचार्यकन्यायाःशुभकारक ॥५१॥

टीका—जो कन्याको बृहस्पति ११।२।५।७।९ होय तो विशेषकरके शुभ हे ॥ ५१ ॥ इति गुरोर्बलम् ।

गौरीअष्टाब्दकावापिनववर्षाचरोहिणी ॥ द
शवर्षाभवेत्कन्याअतऊर्ध्वरजस्वला ॥५२॥

टीका—अष्टवर्षमें गौरीकी संज्ञा जानिये और नववर्षमें रोहिणी, दशवर्षमें कन्यासंज्ञा जानिये. ताके उपरान्त रजस्वला कहते हैं ॥ ५२ ॥

गौरीगुरोर्बलेदेयारोहिणीभास्करस्यच ॥
कन्याचंद्रबलेदेयासर्वदोषविवर्जिता ॥५३॥

टीका—गौरीको बृहस्पतिका बल देवे. रोहिणीको सूर्यबल चाहिये और कन्याको चंद्रबल मुख्यहे ॥ ५३ ॥ इति वर्षाणि ।

आद्यचंद्रः श्रियंकुर्यान्मनस्तोषंद्वितीयके ॥
तृतीयेधनसंपत्तिंचतुर्थेकलहागमम् ॥५४॥
पंचमेज्ञानवृद्धिंचषष्ठेसंपत्तिमुत्तमाम् ॥ सप्त

मेराजसन्मानमरणंचाष्टमेतथा ॥ ५५ ॥ नवमेधर्मलाभंचदशमे मानसेप्सितम् ॥ एकादशेसर्वं लाभंद्वादशेहानिमेवच ॥ ५६ ॥

१	कन्यांप्राप्ति
२	मनसंतोष
३	धनसंपत्ति
४	कलहागम.
५	कामवृद्धि
६	संपत्ति
७	राजसन्मान
८	मृत्युभय
९	धर्मलाभ
१०	मनोवांछा.
११	सर्वलाभ.
१२	हानि

टीका—अब कन्याको और वरको चन्द्रबल कहा है, ताको इस चक्रपर समझ लीजे ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

● अथान्यमतेविशेष ।

गुर्विंद्वर्कबलागौरीगुर्विंदुबलरोहिणी ॥ रवींदुबलजाकन्याप्रौढालग्नबलास्मृता ॥ ५७ ॥

टीका—गौरी जो है ताको बृहस्पति, चन्द्रमा—सूर्य तीनहूको बल चाहिये, सो शुभ है रोहिणीको गुरु और चंद्रमाका बल विचारिये कन्याको रवि और चन्द्रमाका बल चाहिये प्रौढाको लग्नबलही बहुत है ॥ ५७ ॥

जीवोजीवप्रदाताचद्रव्यदाताचचंद्रमा ॥ तेजोदाताभवेत्सूर्योभूमिदातामहीसुतः ५८ जीवहीनामृताकन्यासूर्यहीनोमृतोवर ॥

चंद्रेहीनेगतालक्ष्मीःस्थानहानिःकुजंविना ॥

टीका–बृहस्पति जीवके रक्षाके दाता हैं. चंद्रमा धनके दाता हैं. सूर्य तेजके दाता हैं और मंगल भूमिदाता हैं. बृहस्पति हीन होय तो कन्याकी मृत्यु होय. जो सूर्य हीन होय तो वरकी मृत्यु होय. चंद्रमा हीन होय तो लक्ष्मी क्षीण होय मंगल हीन होय तो स्थानहानि करै ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

गौरींददन्नागलोकेवैकुंठेरोहिणींददत् ॥
कन्यांददन्मृत्युलोकेरौरवंतुरजस्वलाम् ॥ ६० ॥

टीका–गौरीदान करे तो पाताललोकमें सुखको प्राप्ति होय, रोहिणीदान करे तो वैकुंठवास पावे. जो कन्यादान करे तो मृत्यु लोकके सुखकी प्राप्ति होय. जो रजस्वलादान करे सो रौरवमें पडे ॥ ६० ॥

संप्राप्तैकादशेवर्षेकन्यायानाविवाहिता ॥ मा
सेमासेपिताभ्रातातस्याः पिबतिशोणितम् ॥

टीका–जो ग्यारहवें वर्षका विवाह नहीं होय तो महीना महीना प्रति जो रजस्वला होय उसका रुधिर पिता और ज्येष्ठभ्राताको पान करना होता है ॥ ६१ ॥

द्वादशैकादशेवर्षेतस्याः शुद्धिर्नजायते ॥

पूजाभि शक्तुर्नर्वापितस्यलग्नंप्रदापयेत् ६२

टीका—जो ग्यारह बारह वर्षकी कन्या होय तो उम विचारिके पूजा दान करिके विवाह कीजे ॥ ६२ ॥

माताचैवपिताचैवज्येष्ठभ्रातातथैवच ॥
त्रयश्चनरकंयांतिदृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ६३

टीका—जो रजस्वला कन्याको देखे तो माता, पिता, ज्येष्ठ भ्राता ये तीनो नरकके अधिकारी होते हैं ॥ ६३ ॥

अथ नाडीविचार।

आदिमध्यांतकवापिअतमध्यादिभानिच।
अश्विन्यादिक्रमेणैवरेखत्र्यं तंसुसलिखेत्॥ ६४ ॥ ऊर्ध्व गावदरेखा स्युस्तिर्यग्रेखा दशस्मृता ॥ सर्पाकारलिखेद्वानांनाडीचक्रंवदेद्बुध ॥ ६५ ॥ नाडीदोषस्तुविप्राणांवर्णदोषश्चक्षत्रिये ॥ग-

आदिमध्यांतनाडीचक्र		
आ	मध्य	अंत्य
अ	भ	कृ
आ	मृ	रो
पु	पु	आ
उ	पू	म
ह	चि	स्वा
ज्ये	अ	वि
मू	पू	उ
श	ध	श्र
पू	उ	रे

णदोषश्चवैश्येषुयोनिदोषस्तुपादजात् ६६॥

टीका—आदि, मध्य, अंत, अंत, मध्य, आदि इस प्रकार अश्विनीते रेवतीपर्यंत गनिये. चार रेखा खडी और दश रेखा तिर्छी याहीप्रकार सताईस कोष्ठकोंको नाडीचक्र पंडितजन कहतेहैं. नाडीविचार ब्राह्मणको, वर्णविचार क्षत्रियको, गण-विचार वैश्यको, योनिविचार शूद्रको विशेषकरके चाहिये ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

एकनाडीस्थनक्षत्रेदंपत्योर्मरणंध्रुवम् ॥
सेवायांचभवेद्धानिर्विवाहेचाशुभंभवेत् ६७॥

टीका—जो वर कन्या एक नाडीके नक्षत्रनविषे दोनोंको जन्म होय तो दोनोंको मृत्यु होय और नाडीके वेधमें विवाहकरे तो हानि होय ॥ ६७ ॥

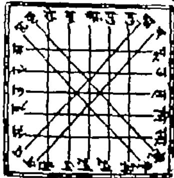
आदिनाडीवरंहंतिमध्यनाडीचकन्यकाम्॥
अंत्यनाडीद्वयोर्मृत्युर्नाडीदोषंत्यजेद्बुधः ६८

टीका—जो आदिनाडी को वेध होय तो वरको अरिष्ट करे और मध्यको वेध होय तो कन्याको दूषितहै. अंतनाडी-को वेध लगे तो दोनोंकी मृत्यु होय ॥ ६८ ॥

एकनक्षत्रजातानानाडीदोषोनविद्यते ॥
अन्यर्क्षपतिवेधेपुविवाहोवर्जित सदा ॥६९॥ ,

टीका–जो वर कन्या एकही नक्षत्रको जन्म होय तो एक नाडीका दोष न मानिये औरही औरनक्षत्र जन्म होय तो विवाह सर्वथा वर्जितहै ॥ ६९ ॥ इतिनाडीनिर्णयः ।

पचोर्ध्वा स्थापयेद्रेखा पचातिर्यक्मुखास्तथा ।द्वयोश्चकोणयोर्द्वेद्वेचक्रेपंचशलाककम्
ईशानेकृत्तिकादेयाक्रमादन्यानिभानिच ॥
ग्रहास्तेपुप्रदातव्यायेचयत्रप्रतिष्ठिता ७१॥
लग्नस्यनिकटेयाचगताभवतिपूर्णिमा ॥
)वन्नक्षत्रस्थितश्चन्द्रोदातव्योगणकोत्तमै ७२



टीका–पंचरेखा ऊर्ध्वकी से पांचतिरछे और दुय दुयरेखा कोननमें धरे तिसको पचशला काचक्रकहतेहैं ॥ इशानदिशा आदिसे कृत्तिका आदि नक्षत्र धरिये क्रमपूर्वकसे ॥ लग्नके निकटगत पूनौ तिती पूर्णिमा

हो तिस नक्षत्रपर चंद्रमा धरिये. इस प्रकार उत्तमगणक जो पंडितहै सो कहता है ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

लत्तापातोयुतिर्वेधोजामित्रंबुधपंचकम् ॥
एकार्गलोपग्रहौचक्रांतिसाम्यंनिगद्यते७३॥
दग्धातिथिश्चविज्ञेयादशदोषामहाबलाः ॥
एतान्दोषान्परित्यज्यलग्नंसंशोधयेद्बुधः७४

टीका—अब दोष कहतेहैं. लत्ता १, पात २, युति ३, वेध ४, जामित्र ५, बधपंचक ६, एकार्गल ७, उपग्रह ८, क्रांतिसाम्य ९, दग्धातिथि १०, ये दश दोष महाबलवान् हैं। इनसे बचायके लग्न साधिये ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

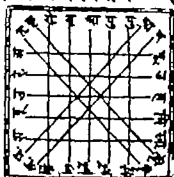
नक्षत्रंद्वादशंभानुस्तृतीयंलत्तयाकुजः ॥
षष्ठंजीवोष्टमंमंदोहंतिदक्षिणतःसदा ॥७५॥
वामेनसप्तमश्चांद्रिर्नवमंसिंहिकासुतः ॥
हंतिभंपंचमंशुक्रोद्वाविंशंपूर्णचंद्रमाः ॥७६॥

टीका—जो नक्षत्रको लग्न होय तेही नक्षत्रते दाहिने गने सूर्य, भौम, गुरु, शनि ये चारग्रह याप्रकार लात मारतेहैं. १२ रवि ३ भौम ६ गुरु ८ शनि

एकनक्षत्रजातानांनाडीदोषोनविद्यते ॥
अन्यर्क्षपतिवेधेषुविवाहोवर्जित सदा ॥६९॥

टीका–जो वर कन्या एकही नक्षत्रको जन्म होय तो एक नाडीका दोष न मानिये औरही औरनक्षत्र जन्म होय तो विवाह सर्वथा वर्जितहै ॥ ६९ ॥ इतिनाडीनिर्णयः।

पंचोर्ध्वा स्थापयेद्रेखा पंचतिर्यङ्मुखास्तथा ।द्वयोश्चकोणयोर्द्वेद्वेचक्रपंचशलाककम् ईशानेकृत्तिकादेयाक्रमादन्यानिभानिच ॥ ग्रहास्तेषुप्रदातव्यायेचयत्रप्रतिष्ठिता ७१॥ लग्नस्यनिकटेयाचगतामथतिपूर्णिमा ॥ तन्नक्षत्रस्थितश्चन्द्रोदातव्योगणकोत्तमै ७२



टीका–पंचरेखा ऊर्ध्वकी थे पांचतिरछे और द्वय द्वयरेखा कोणनमें धरे तिसको पंचशला काचक्रकहतेहैं ॥ ईशानदिशा आदिसे कृत्तिका आदि नक्षत्र धरिये क्रमपूर्वकसे ॥ लग्नके निकटगत पूनौं तिथी पूर्णिमा

हो तिस नक्षत्रपर चंद्रमा धरिये. इस प्रकार उत्तमगणक जो पंडितहै सो कहता है ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

लत्तापातोयुतिर्वेधोजामित्रंबुधपंचकम् ॥
एकार्गलोपग्रहौचक्रांतिसाम्यंनिगद्यते७३॥
दग्धातिथिश्चविज्ञेयादशदोषामहाबलाः ॥
एतान्दोषान्परित्यज्यलग्नंसंशोधयेद्बुधः ७४

टीका—अब दोष कहतेहैं. लत्ता १, पात २, युति ३, वेध ४, जामित्र ५, बधपंचक ६, एकार्गल ७, उपग्रह ८, क्रांतिसाम्य ९, दग्धातिथि १०, ये दश दोष महाबलवान् हैं इनसे बचायके लग्न साधिये ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

नक्षत्रंद्वादशंभानुस्तृतीयंलत्तयाकुजः ॥
षष्ठंजीवोष्टमंमंदोहंतिदक्षिणतःसदा ॥७५॥
वामेनसप्तमश्चांद्रिर्नवमंसिंहिकासुतः ॥
हंतिभंपंचमंशुक्रोद्वाविंशंपूर्णचंद्रमाः ॥७६॥

टीका—जो नक्षत्रको लग्न होय तेही नक्षत्रते दाहिने गने सूर्य, भौम, गुरु, शनि ये चारग्रह याप्रकार लात मारतेहैं. १२ रवि ३ भौम ६ गुरु ८ शनि

छात मारते हैं ७ और वामभाग होके सातवें नक्षत्रको बुध छात मारते हैं ७ नवमें राहु ९ पांचवे शुक्र ५ और बाईसे नक्षत्रको २२ चन्द्रमा लात मारते हैं ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

रवेर्लत्ताहरेद्वित्तंकुजस्यकुरुतेमृतिम्॥बृहस्पतेर्बंधुनाशशनेःकुर्यात्कुलक्षयम् ॥७७॥ बुधस्यकुरुतेत्रासंलत्ताराहोर्विनाशयेत् ॥ शुक्रस्यतु स्वदानित्यत्रासदातुकलानिधेः ॥७८॥

टीका—सूर्यकी छात लागे वो सपंचि हरे. भौमकी छात लागे वो मृत्युकरे. बृहस्पतिकी छात लागे तो बंधुको नाश करे. शनिकी छात लागे तो कुलका क्षय करे. राहुकीलातसे नाश होय शुक्रकी छात लागे तो दुःखदायक है बुधकी छात भासकरे ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

सूर्ययुक्ताच्चनक्षत्राद्दोषपातोविधीयते ॥ मघाऽऽश्लेषाचचित्राचसानुराधाचरेवती ७९ श्रवणोपिचैषट्कोऽयपातदोषोनिगद्यते ॥ अश्विनीमवधिंकृत्वागणयेद्भभावधि ८०॥

टीका-जो नक्षत्रमें सूर्यहोय उसी नक्षत्रसे पातदोष कहिये. मघा, आश्लेषा, चित्रा, अनुराधा रेवती, श्रवण ये छः पात कहैं. इन नक्षत्रोंको सूर्यके संयोगते छः भाँतिके पात कहते हैं. प्रथम सूर्यके नक्षत्रते सताईस रेखा खैंचिये. नक्षत्रपात कहते हैं थोडे करिये. फिर अश्विनीआदि देके फेरेके नक्षत्रलौं गनिये जो थोडे नक्षत्रमें गिनती पूरीहोय तो पातदोष लगे ॥ ७९ ॥ ८० ॥ इतिपातचक्रम्।

पावकःपवमानश्चविकारःकलहोपरः ॥
मृत्युःक्षयश्चविज्ञेयंपातषट्कस्यलक्षणम् ८१

टीका-अब छः भाँतिके पातनाम लक्षण-पावक १, पवमान २, विकार ३, कलह ४, मृत्यु ५, क्षय ६, ये छहों पात अपने फल करते हैं ॥ ८१ ॥

पातेनपतितोब्रह्मापातेनपतितोहरिः ॥
पातेनपतितःशंभुस्तस्मात्पापंविवर्जयेत् ८२

टीका-पातने ब्रह्माको पतन करो और विष्णुका पतन करो और शिवको पतन करो, तासों विवाहमें पातदोष विशेष करके वर्ज्य है ॥ ८२ ॥

चित्रागतेपातविचित्रदेशेमैत्रेमघामालवके निषिद्ध ॥ पौष्णश्रुतीचोत्तरदेशजात सर्वत्रवर्ज्यश्चभुजंगपात ॥ ८३ ॥

टीका–चित्रा नक्षत्रका पात विचित्र देशमें वर्जित है. अनुराधाका पात मालवदेशमें निषिद्धहै मघा जो है सो मालव देशमें वर्जित है और रेवती और श्रवण इनका पात उत्तरमें निषिद्ध है और आश्लेषापात सर्व देशमें वर्जितहै ॥ ८३ ॥ इतिपात ।

यत्रगृहेभवेच्चंद्रोग्रहस्तत्रयदाभवेत् ॥ युतिदोषस्तदाज्ञेयोविनाशुक्रशुभाशुभम् ॥

टीका–जेही नक्षत्रका चन्द्रमा होय और उसी नक्षत्रमें और कोई ग्रह होय तो युतिदोष कहते हैं, परंतु शुक्र बिना शुभसंयुक्त शुभ, अन्यतम अशुभ है ॥ ८४ ॥

रविणासंयुतोहानिंभौमेननिधनंशशी ॥ करोतिमूलनाशंचराहुकेतुशनैश्चरैः ॥ ८५ ॥

टीका–जो सूर्य चंद्रमाके साथ होयतो हानिकरे,भौम होय तो मृत्यु करै और राहु, केतु,शनैश्चर होय तो मूलनाशकरै ८५

वर्गोत्तमगतश्चंद्रःस्वोच्चंवामित्रराशिगः ॥
युतिदोषश्चनभवेद्दंपत्योःश्रेयसीसदा॥८६॥

टीका—जो चंद्रमा षड्वर्गविषे श्रेष्ठ वर्गनमें होय तो अथवा उच्चको होय तो वा मित्रराशिका होय तो युतिदोषका नाश-करे स्त्रीपुरुष दोनों सुखी रहै ॥ ८६ ॥ इति युतिदोषः ।

एकरेखास्थितिर्वेधोदिननाथादिभिर्ग्रहैः ॥
विवाहेतत्रमासंतुनजीवतिकदाचन ॥ ८७॥

टीका—जो नक्षत्रका लग्न होय और वाही नक्षत्ररेखासों सूर्य आदिमेंसे कोई ग्रह होय तो वाको वेध कहिये तो विवाह भये पीछे एक महीनाके अंतमें मृत्यु करे ॥ ८७ ॥

अश्विनीपूर्वफाल्गुन्याभरणीचानुराधया ॥
अभिजिच्चापिरोहिण्या कृत्तिकाचविशाख-
या ॥८८॥ मृगश्चोत्तरषाढेनपूर्वाषाढातथार्द्र
या ॥पुनर्वसुश्चमूलेनतथापुष्यश्चज्येष्ठया ॥
॥ ८९ ॥ धनिष्ठयातथाश्लेषामघापिश्रवणे
नच ॥ रेवत्युत्तरफाल्गुन्याहस्तेनोत्तरभाद्र-

पात् ॥९०॥ स्वात्याशतभिषाविद्धाचित्रया पूर्वभाद्रपात्॥ विद्धान्येतानिवर्ज्यानिविवाहेमानिकोविदे ॥९१॥

टीका—अश्विनीसे और पूर्वाफल्गुनीसे एक रेखा है ऐसे जो दोनों ठौर एक रेखा होय तो वेध कहिये ऐसे अट्ठाईस नक्षत्रनको जानिये ये वेधपंचशलाकाचक्रमें समझलेना ॥ ॥ १ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥

रविवेधेचवैधव्यंकुजवेधेकुलक्षयम् ॥ बुधवेधेभवेद्वन्ध्याप्रव्रज्यागुरुवेधत ॥९२॥ अपुत्राशुक्रवेधेचसौरेचंद्रेचदु खिता ॥ परपुरुषरताराहौ केतौ स्वच्छंदचारिणी ॥९३॥

टीका—जो सूर्यको वेध लगे तो विधवा होय मंगलको वेध लगे तो कुलका क्षय होय बुधको वेध लगे तो वन्ध्या होय गुरुको वेध लगे तो सन्यासिनी होय शुक्रको लगे तो पुत्र न होय शनिचंद्रमाको वेध लगे तो दुःखी होय राहुको वेध लगे तो परपुरुषगामिनी होय केतुका वेध होय तो स्वच्छंदचारिणी होय ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

शनिराहुकुजादित्यायदाजन्मर्क्षसंस्थिताः ॥
विवाहिताचयाकन्यासाकन्याविधवाभवेत्

टीका-शनि, राहु, भौम, सूर्य इनमें कोऊ ग्रह विवाह समयमें जन्मनक्षत्रपर होय तो कन्या विधवा होय ॥ १४ ॥

चतुर्दशंचनक्षत्रंजामित्रंलग्नभात्स्मृतम् ॥ शु
भयुक्तंतदिच्छंतिपापयुक्तंचवर्जयेत् ॥१५॥

टीका-जो लग्नके नक्षत्रते चौदहे नक्षत्रपर कोऊ ग्रह होय तो जामित्रदोष कहिये जो सौम्यग्रह होय तो शुभहै ॥१५॥

चंद्रश्चांद्रिर्भृगुर्जीवोजामित्रेशुभकारकाः ॥
स्वर्भानुभानुमंदाराजामित्रेनशुभप्रदाः १६

टीका-जो चंद्रमा बुध बृहस्पति और शुक्र ये ग्रह जन्मके नक्षत्रते जामित्रपै होय तो शुभ कहिये और जो शनि राहु केतु होय तथा भौम चौदहे जामित्रपै होय तो अशुभहै १६

चंद्राद्वालग्नतोवापिग्रहावर्ज्याश्चसप्तमे ॥ ल-
ग्नस्थितोग्रहानूनंव्याधिवैधव्यकारकाः १७

टीका-चंद्रमाते वा लग्नके राशिते सातवें कोऊ ग्रह होय तो व्याधि और वैधव्य करे ॥ १७ ॥ इति जामित्रदोषः ।

धार्या तिथिमांस१५।१२।१०।८।४।दशा-
ष्टवेदा सक्रांतितोयातदिनैश्चयोज्या ॥
ग्रहेर्विभक्तायदि पंचशेषोरोगस्तथाग्निर्नृप
चौरमृत्युः॥ ९८॥

टीका—अब पंचक कहते हैं, तिथि कहिये १५ मास कहिये १२ दश १० अष्ट ८ वेद ४ संक्रांतिके जो दिन गये होंय तिनको युक्त करके नव ९ को भाग दीजे, जो पांच शेष बचे सो पंचक जानिये ऐसेही पांचों अंक विचारके रोग पंचक १५ म अग्निपंचक बारहमें १२ राज्यपंचक दशवें १० और चोरपंचक ८ में मृत्युपंचक ४ में ॥ ९८ ॥

यद्यर्कवारे किलरोगपचकंसोमेन्चराज्यंक्षि
तिजेचवह्निः ॥ सौरौचमृत्युर्धिषणेन्चचौरो
विवाहकालेपरिवर्जनीया ॥ ९९ ॥

टीका—रविवारको जो रोगपंचक लगे वो सोमको राज्यपंचक लगे वो मंगलको अग्निपंचक शनैश्चरको मृत्युपंचक भृगुवारको चोरपंचक ये विवाहमें होय तो वर्जितहैं ॥९९॥

रोगंचौरंत्यजेद्रात्रौदिवाराज्याग्निपंचकम् ॥
उभयोःसंध्ययोर्मृत्युरन्यकालेननिंदिताः ॥

टीका–रोग, चोरपंचक रात्रिको अशुभ है और राज्य अग्निपंचक दिनमें वर्जित है. दोनोंके संधिनमें मृत्युपंचक निंदित है और समयमें वर्जित नहीं है ॥ १०० ॥ इति पंचकनिर्णयः ।

सूर्यभात्पंचमेविद्युन्नक्षत्रेशूलमष्टमे ॥ चतुर्द शेशनेःपातःकेतुरष्टादशेतथा ॥ १०१ ॥ ऊन विंशेभवेदुल्कानिर्घातश्चाद्विविंशके ॥ त्रयो विंशतिकेकंपःपंचविंशेतुवज्रकः ॥ १०२ ॥

टीका–सूर्यके नक्षत्रते पांचवें कोई ग्रह होय तो विद्यु-द्दोष लगे और ८ वें शूलदोष लगे, चौदपर १४ शनिपात दोष लगे. अठारहपर १८ केतुदोष लगे, १९ पर उल्का २२ पर निर्घात २३ पर कंप २५ पर वज्रदोष लगे ॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ इतिविद्युदादियोगाः ।

पुत्रनाशकरीविद्युत्पत्युः शूलोविनाशकः ॥

भार्या तिथिर्मास१५।१२।१०।८।४।दशाष्टवेदा संक्रांतितोयातदिनैश्चयोज्या ॥ अङ्कैर्विभक्तायदि पंचशेषोरोगस्तथाग्निर्नृप चौरमृत्युः॥ ९८ ॥

टीका—अब पंचक कहते हैं, तिथि कहिये १५ मास कहिये १२ दश १० अष्ट ८ वेद ४ संक्रांतिके जो दिन गये होंय तिनको युक्त करके नव ९ को भाग दीजे, जो पांच शेष बचे वो पंचक जानिये ऐसेही पांचों अंक विचारके रोग पंचक १५ में अग्निपंचक बारहमें १२ राज्यपंचक दशवें १० और चोरपंचक ८ में मृत्युपंचक ४ में ॥ ९८ ॥

यद्यर्कवारे किलरोगपंचकंसोमेचराज्यंक्षितिजेचवह्निः ॥ सौरौचमृत्युर्धिषणेचचौरो विवाहकालेपरिवर्जनीया ॥ ९९ ॥

टीका—रविवारको जो रोगपंचक लगे तो सोमको राज्यपंचक लगे तो मंगलको अग्निपंचक शनैश्चरको मृत्युपंचक भृगुवारको चोरपंचक ये विवाहमें होय तो वर्जितहैं ॥ ९९ ॥

६शोभनेकृत्तिकादेयाअ
नुराधाश्चगंडके।रोहिणी
चसुकर्माख्येधृतौज्येष्ठा
प्रकीर्तिता७गंडेमूलंमृग
शूलेवृद्धौचार्द्रानिगद्यते।
पूर्वाषाढाध्रुवेप्रोक्ताव्या
घातेचपुनर्वसुः८हर्षणेचो
त्तराषाढावज्रेपुष्यः प्रकी
र्तितः ॥ अभिजिच्चतथासिद्धावाश्लेषाव्यति
पातके ॥ ९ ॥ वरीयसिश्रुतिर्देयापरिघेचम
घातथा ॥ शिवेधनिष्ठादातव्यासिद्धौपूर्वाच
फाल्गुनी ॥ १० ॥ साध्येशतभिषादेयाशुभे
चोत्तरफाल्गुनी ॥ पूर्वभाद्रपदाशुक्लेहस्तेब्र
ह्मप्रकीर्तितः ॥ ११ ॥ उत्तराभाद्रपच्चैंद्रेचि
त्रादेयाचवैधृतौ ॥ सूर्याचंद्रमसोर्योगेभवेदे
कार्गलंतदा ॥ १२ ॥ त्रयोदशतिरोरेखा

	मृ	
रो		आ
कृ		पु
भ		पु
अ.		श्ले.
रे.		म.
उ.		पू.
पू.		उ
श		ह
ध.		चि
श्र.		स्वा
अ		वि
उ		अनु.
पू		ज्ये.
	मृ	

शने पातोवशघातीकेतुर्देवरनाशक ॥१०३॥
द्रव्यनाशकरीचोल्कानिर्घातोवधुनाशक ॥
कंपःकंपयतेनित्यंवज्रेस्त्रीव्यभिचारिणी ॥

टीका—विद्युदोष लगे तो पुत्रका नाश करै, शूलदोष पतिका नाश करै, शनिका पातदोष वशघात करै केतुदोष देवरका नाश करै, उल्कादोष द्रव्यका नाश करै, निर्घात भ्राताको नाश करै, कंप नित्यही कंपावे, वज्रदोष लगे तो स्त्री व्यभिचारिणी होय ॥१०३॥१०४॥इति विद्युदादिफलम्।

योगांकेविषमेचैकोदेयोष्टाविंशति समे ॥
अर्द्धकृत्वाश्विनीपूर्वांमंकभमूर्ध्निदीयते१०५

टीका—जो योगके अंक विषम होय तो एक जोरिये और सम अंक होय तो अठाईस जोरिये सो आधा करिये, अश्विनी से पूर्व जो अंक होय सो मूर्ध्निपर लिखिये ॥ १०५ ॥

विष्कंभेचाश्विनीदेयाप्रीतौस्वातिर्निगद्यते।
सौभाग्येचविशाखास्यादायुष्मान्भरणीयुतः।

	मृ	
रो		आ.
कृ		पु.
भ		पु
अ.		श्ले
रे.		म.
उ.		पू
पू.		उ
श		ह
ध		चि
श्र.		स्वा
अ		वि
उ		अनु.
पू		ज्ये.
	मू	

६शोभनेकृत्तिकादेयाअनुराधाच्चगंडके ।रोहिणीचसुकर्माख्येधृतौज्येष्ठाप्रकीर्तिता७गंडेमूलंमृगःशूलेवृद्धौचाद्रानिगद्यते । पूर्वाषाढाध्रुवेप्रोक्ताव्याघातेचपुनर्वसुः८हर्षणेचोत्तराषाढावज्रेपुष्यः प्रकीर्तितः ॥ अभिजित्स्वतथासिद्धावाश्लेषाव्यतिपातके ॥ ९ ॥ वरीयसिश्रुतिर्देयापरिघेचमघातथा ॥ शिवेधनिष्ठादातव्यासिद्धौपूर्वाचफाल्गुनी ॥ १० ॥ साध्येशतभिषादेयाशुभेचोत्तरफाल्गुनी ॥ पूर्वाभाद्रपदाशुक्लेहस्तेब्रह्माप्रकीर्तितः ॥ ११ ॥ उत्तराभाद्रपच्चैंद्रेचित्रादेयाचवैधृतौ ॥ सूर्याचंद्रमसोर्योगेभवेदेकार्गलंतदा ॥ १२ ॥ त्रयोदशाविरोरेखा

एकोर्ध्वामूर्ध्र्यभिस्मृता ॥योगकिप्रासनक्षत्रे
ज्ञेयमेकार्गलंबुधे ॥ ११३ ॥

टीका–एकार्गलचक्रकी नवोदशरेखा तिरछी खेंचे एक रेखा ऊर्ध्व खेंचे योगके अंक और जो नक्षत्र कहे हैं वे सूर्य चंद्रके योग एक रेखासे होय तो एकार्गल दोष कहिये विष्कंभ योगको और अश्विनीको कहा है एसेही क्रमसे चक्रमें समझ लीजे ॥ ११३ ॥ इत्येकार्गलनिर्णयः ।

ऊर्ध्वास्तिस्रस्तिरस्तिस्रोमध्येमीनंलिखेद्बुधः
सूर्याचंद्रमसौदृष्टौक्रांतिसाम्यंनिगद्यते।१४
मीनःकन्यकयायुक्तोमेषस्सिंहेनसगतः ॥
मकरेणवृषक्रांतिश्चापोपिमिथुनेनच ॥१५॥
कर्केणवृश्चिकोविद्धोवेधश्चतुलकुंभयोः ॥
क्रांतिसाम्ये कृतोद्वाहोनजीवतिकदाचन ।

टीका–तीन रेखा ऊर्ध्व और तीन तिरछी खेंचके मध्य-की रेखापर मीन, कन्या और तिरछीपर मिथुन, धन, ऊर्ध्व भामिसके क्रमसों सब सबको धरिके चक्र बनाइये वामें

एक रेखापर चंद्र सूर्य परे तो क्रांतिसाम्यदोष कहिये. मीन और कन्याको वेध जानिये. ऐसेहि सब राशिनको वेध चक्रनमें समझलीजिये.तुला कुंभसों, कन्यावृश्चिकसों, मिथुनधनसों, मकर वृषभसों, मेष सिंहसों, इन राशिनसों परस्पर समझ करके त्याग कर दीजिये. यह वध विवाहादिक और अनेक कार्यमें वर्ज्य है ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥

	११	१२	१	
१०				२
९				३
८				४
	७	६	५	

क्रांतिसाम्येचकन्यायायदिपाणिग्रहोभवेत्
कन्यावैधव्यतांयातिईशस्यदुहितायदि १७

टीका—जो क्रांतिसाम्यमें विवाह होय तो कन्या विधवा होय. ईश कहिये महादेव तिनकी पुत्री होय तोभी ॥ ११७ ॥

इति क्रांतिसाम्यम् ।

मर्मवेधः कंटकश्चशल्यंछिद्रंचतुर्थकम् ॥
एतद्वेधचतुष्कंतुपरित्याज्यंप्रयत्नतः ॥१८॥

टीका—अब चार दोष कहतेहैं. मर्मवेध १, कंटक २, शल्य ३, छिद्र ४, इन दोषनको यतन कर बचाइये. यह गणकजनकी आज्ञाहै ॥ ११८ ॥

लग्नेपापेमर्मवेधःकंटकोनवपञ्चके ॥
चतुर्थेदशमेशल्यंछिद्रंभवतिसप्तमे ॥११९॥

टीका—लग्नमें पापग्रह होय तो मर्मवेध कहिये और चौथे, दशमे पापग्रह होय तो शल्यदोष कहते हैं और सप्तम स्थानमें पापग्रह होय तो छिद्रदोष जानिये नवम ९ पंचम ५ पापग्रह हो तो कंटकदोष कहिये ॥ ११९ ॥

मरणंमर्मवेधेस्यात्कंटकेचकुलक्षयः ॥
शल्येचनृपतेर्भीतिःपुत्रनाशश्चछिद्रके १२०

टीका—जो मर्मदोषमें विवाह होय तो मृत्यु जानो और कंटकमें होय तो कुटुंबकी क्षय होय और शल्यदोष लगे तो राजाका भय होय, छिद्रमें होयतो पुत्रका नाश करे ॥ १२० ॥

इतिवेधचतुष्टयदोष ।

जन्ममासेजन्मभेचनचजन्मदिनेपिच ॥
ज्येष्ठेनज्येष्ठगर्भस्यविवाहंकारयेत्क्वचित् ॥

टीका—जन्मका मास, जन्मका नक्षत्र, जन्मका दिन और प्रथमगर्भकी उत्पत्तिवालेका विवाहविषे वर्जित करे हैं परंतु जो गर्भकेविषे कहो सोई ज्येष्ठत्व अनेकमतांतरमें भाषाप्यहै १२१

नकन्यावरयोर्ज्येष्ठेज्येष्ठयोःपाणिपीडन
म्॥द्वयोरेकतरेज्येष्ठेनज्येष्ठोदोषमावहेत् ॥

टीका-जो वर तथा कन्या दोनों प्रथमगर्भके होंय तो ज्येष्ठमासमें विवाह विशेष करके वर्जित है और एक ज्येष्ठ होय और नहीं होय तो ज्येष्ठमें विवाह कीजे दोष नहीं है कारण तीन ज्येष्ठ नहीं चाहिये ॥ १२२ ॥

सिंहेगुरौगतेकार्योनविवाहःकदाचन ॥
मेषस्थितेदिवानाथेसिंहेज्येचशुभप्रदः१२३

टीका-सिंहस्थ बृहस्पतीमें विवाह नहीं करना. केवल मेषके सूर्यमें करिये तो सिंहको गुरुभी शुभफलदायक है२३॥

रवौसार्धत्रयोभागाःपंचचंद्रेगुरौत्रयः ॥ द्वंद्वे
शुक्रेंदुपुत्रेस्याद्विश्वाभागप्रदायकाः ॥२४ ॥
प्रत्येकंसार्धभागाश्चमंदमंगलराहुषु ॥ ग्रहा
बलयुताविश्वाप्रयच्छंतिनदुर्बलाः ॥ १२५ ॥

टीका-सूर्यके ३॥ भाग, चंद्रमा ५ भाग, गुरुके ३ भाग बुधके २ भाग, ॥१२४॥ और शनि, मंगल, राहु, केतु इन ग्रहोंको डेढ़ डेढ़ भाग रूप विश्वा देतेहैं. जौलौं ये

बलिष्ठ रहें तौलौं विभादेतेहैं दुर्बल होनेसे नहीं देतेहैं ॥ २५ ॥
इति विंशोपकफलम् ।

केंद्रेसप्तमहीनेचद्विन्त्रिकोणेशुभाऽशुभाः ॥
धनेशुभप्रदश्चंद्रःपापाःषष्ठेचशोभना ॥२६॥
तृतीयेकादशेसर्वेसौम्याःपापाःशुभप्रदाः ॥
तेसर्वेसप्तमस्थानेमृत्युदावरकन्ययोः २७॥

टीका–केंद्रस्थान कहिये लग्न, चतुर्थ सप्तम दशम, १।४।७।१०। जो इन स्थानविषे शुभग्रह होय तो श्रेष्ठहैं अकेले सातवें स्थान अशुभहै शुभग्रह करके शुक्र, बुध, बृहस्पति और शुक्लदशमीते कृष्णपक्षकी ५ पर्यंतका चंद्रमा श्रेष्ठ बली होताहै और सूर्य, राहु शुक्र २ ते दशमी १० पर्यंतका चन्द्रमा ये चार ग्रह जानिये, भौम, शनि, केतु कृष्णपक्षमीते ३० तांइको चन्द्रमा ये पापग्रह हैं लग्नते २ धन स्थान चन्द्रमा शुभहै पापग्रह लग्नते ३ । ६ स्थान शुभहैं ॥ १२६ ॥ और ३ । ११ । स्थान सर्व ग्रह शुभहैं और सौम्य क्रूर पापग्रह, ७स्थान नेष्टहैं॥ १२७॥इति फलदग्रहाः ।

शनि सूर्यश्चलग्नेस्तेचंद्रोलग्नेऽष्टमेरिपौ ॥

कुजोलग्नेऽष्टमेचास्तेशुक्रोद्यूनेऽष्टमेरिपौ २८
गुरुर्मृत्यौसैंहिकेयोलग्नेतुर्येचसप्तमे ॥ बुधो-
ष्टमेचयामित्रेविवाहप्राणनाशकः ॥ १२९ ॥
क्रूरयोरंतरंलग्नंचंद्रंचपरिवर्जयेत् ॥ वरंहंति
ध्रुवंलग्नंशीतरश्मिश्चकन्यकाम् ॥ १३० ॥

टीका—शनि, सूर्य जो लग्नमें सातवें होंय और चंद्रमा १।६।८ और भौम १।८।७और शुक्र ७।८।६ बृहस्पति ८ राहु १।७।४ अरु बुध ८।७ ये ग्रह इतने स्थानोंमें विवाह-विषे प्राणनके नाश करनेवाले हैं और ग्रहमध्य चंद्रमा होय तो अथवा लग्न होय तो वर्जनीयकहैं, वरको शीघ्रही मृत्युकोदाताहैं॥ २८।२९।१३०॥ इतिशुभाशुभग्रहनिर्णयः।

तुलाचमिथुनंकन्यापूर्वार्द्धौधनुषोवृषः ॥ ए
तेलग्नाःशुभानित्यामध्यमाश्चापरेस्मृताः ॥

टीका—तुला, मिथुन, कन्या, वृष तथा धनका पूर्वार्द्ध इतने लग्न शुभहैं. और लग्न मध्यम हैं ॥ १३१ ॥

लत्तामालवकेदेशेपातश्चकुरुजांगले ॥
एकार्गलंचकाश्मीरेवेधंसर्वत्रवर्जयेत् ॥ ३२॥

टीका—लत्तादोष मालवदेशमें वर्जनीय है. पातदोष कुरु जांगलदेशमें निषिद्ध है एकार्गलदोष काश्मीर देशमें मने है. और वेधदोष सर्व देशमें वर्जितहै ॥ १३२ ॥

अथ मेषादिराशीनां नवांशकचक्र लिख्यते

१मे	२वृ	३मि	४क	५सिं	६क	७तु	८वृ	९ध	१०म	११कुं	१२मी
मे	म	तु.	क.	मे	म	तु	क	मे	म	तु.	क.
वृ	कुं	वृ	सिं.	वृ	कुं	वृ	सिं.	वृ	कुं	वृ.	सिं
मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध.	क
क	मे	म	तु.	क	मे	म	तु.	क	मे	म	तु.
सिं.	वृ	कुं	वृ	सिं.	वृ	कुं	वृ	सिं.	वृ	कुं	वृ.
क	मि	मी.	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	क
तु.	क	मे	म	तु.	क	मे	म	तु	क	मे	म.
वृ.	सिं.	वृ	कुं	वृ	सिं.	वृ	कुं	वृ	सिं.	वृ	कुं
ध	क	मि	मी	ध	क	मि.	मी	ध	क	मि	मी
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

मेषेनवांशामेषाद्यावृषेचमकरादिकाः॥ मिथुनेचतुलाद्याःस्यु कर्कटेकर्कटादिकाः॥ ३३॥ मेषाद्यौचधनुःसिंहौगोकन्यामकरादिकौ ॥ तुलाद्यौयुग्मकुंभोच कर्काद्यौमीनवृश्चिकौ ॥ १३४ ॥ गोतुलायुग्मकन्यानांनवांशाश्च

भदाःस्मृताः ॥ धनुषः प्रथमोभागोविवाहे ऽन्येचमध्यमाः ॥ १३५ ॥

टीका—मेष आदि दे बारह राशिके नवांशक कहते हैं. लग्नके नवमें भागको नवांशक कहते हैं. लग्न १ नक्षत्र २ नवांशक भोग्य करते हैं. सो मेष, सिंह, धन इन तीनोंका पहिले नवांशमें मेषते नवपर्यंत गनिये. और वृष, कन्या, मकर इन तीनोंका नवांश मकर आदिदेके कन्यापर्यंत मानिये और मिथुन, तुला, कुंभ इन तीनोंका नवांश तुला आदि देके मिथुनपर्यंत गनिये और कर्क, वृश्चिक, मीन इन तीनोंका नवांश कर्क आदि मीनपर्यंत गनिये. सो चक्रमें समझ लीजे. वृष, तुला, मिथुन, कन्या इनका नवांश शुभ है और धनका पहिला शुभ अशुभ मिश्रित है और नवांश जो हैं सो विवाहमें मध्यम हैं ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥

अंशस्यपतिरंशेचतन्मित्रंवाशुभोपिवा ॥ पश्यतेवाशुभोज्ञेयःसर्वेदोषाश्चनिष्फलाः३६॥

टीका—अंशका पति जो है नवांशका स्वामी, सो अपने नवांशकमें हो अथवा इसका मित्र वा और शुभग्रह देखतेहोंय शुभफल करे और दोषनको निष्फल करै ॥ १३६ ॥

शुक्लाष्टमींसमारभ्यफाल्गुनस्यदिनाष्टकम्
पूर्णिमामवधिंकृत्वात्याज्यहोलाष्टकंबुधे ॥
शतुद्रयांचविपाशायामैरावत्यांत्रिपुष्करे ।
होलाष्टकविवाहादौत्याज्यमन्यत्रशोभनम्

टीका–फाल्गुनके शुक्लपक्षकी अष्टमीसे पूर्णिमातक होला ष्टक होतेहैं ॥ १३७ ॥ सो शतुद्रीनदीके तीर, विपाशा नदीके तीर, इरावतीनदीके तीर, इन देशोंमें और त्रिपुष्करमें विवाहादिक उत्तम कार्यविषे वर्जितहैं और अन्यत्र शुभहैं ॥ १३८ ॥ इति होलाष्टकम् ॥

दिनेसदांधावृषमेषसिंहाराज्ञौचकन्यामिथुनकुलीर ॥ मृगस्तुलालिर्वधिरोपराह्नेसध्या सुकुब्जाघटधन्विमीना ॥ १३९ ॥

टीका–दिनमें ये अंध लग्न हैं–वृष, मेष, सिंह, रात्रिके अंधे–कन्या, मिथुन, कर्क, अपराह्नमें बहरे–मकर, तुला, वृश्चिक, सध्यामें कुबरे–धन, कुंभ, मीन ॥ १३९ ॥

दिवांधोवरहंताचराज्यधोधननाशक ॥ दुःख दोवधिरोलग्न कुब्जोवंशविनाशकः ॥ १४० ॥

टीका-दिनके अंधे लग्नमें फेरें होय तो वरकी हानि होय, रात्रिके अंधे लग्नमें फेरें होय तो धनको नाश करे और बहरे लग्नमें पाणिग्रहण होय तो दुःखदायक है और कुबरे लग्नमें विवाह होय तो वंशनाश होय ॥ १४० ॥

यत्रचैकादशश्चंद्रोद्वितीयोवातृतीयकः॥ गोधूलिकःसविज्ञेयःशेषाधूलिमुखाः स्मृताः४१

टीका-जो ग्यारहस्थानमें चंद्रमा होय अथवा दूसरे तीसरे होय सो गोधूलिक है और शेषस्थानमें चंद्र होनेसे धूलिमुख कहतेहैं ॥ १४१ ॥

कुलिकःक्रांतिसाम्यंचलग्नेषष्ठाष्टमेशशी ॥ तदागोधूलिकस्त्याज्यःपंचदोषैश्चदूषितः ॥

टीका-कुलिकयोग और क्रांतिसाम्य अरु लग्नमें छठे और आठवें चंद्रमा होय तो गोधूलिक लग्नमें विवाह नहीं करना. लग्न पांच ५ दोषकर दूषितहै ॥ १४२ ॥

यदानास्तंगतोभानुर्गोधूल्यापूरितंनभः ॥ सर्वमंगलकार्येषुगोधूलिश्चप्रशस्यते १४३॥

टीका-जबलगि सूर्य अस्त ना होय और गायनकी खुरनकी धूर आकाशमें पूरित होरही हो तो यह घडी मंगल-

सब कार्यविषे मंगलकी दाताहै तिसको गोधूलि कहतेहैं ॥ १

अष्टमेजीवभौमौचबुधौवाभार्गवोऽष्टमे ॥
लग्नेषष्ठाष्टमेचंद्रस्तदागोधूलिनाशकः४४॥

टीका—जो लग्नसे आठवें स्थानमें भौम, गुरु, बुध शुक्र ये ग्रह होंय, अथवा लग्नमें वा छठे आठवें १ । ६ । ८ चन्द्रमा होय तो वह गोधूलि नाशक होय है ॥ १४४ ॥

इति गोधूलिकः ।

लग्नादेकादशेसर्वेलग्नपुष्टिकराग्रहाः ॥ तृतीयेचाष्टमेसूर्य सूर्यपुत्रश्चशोभन ॥ १४५ ॥
चंद्रोधनेतृतीयेचकुज षष्ठेतृतीयके ॥ बुधेज्योनवपञ्चद्वित्रिचतुःपंचदशेस्थितौ १४६
शुक्रोद्वित्रिचतुःपचधर्मकर्मतनुस्थितः ॥ राहुर्दशाष्टषट्पंचत्रिनवद्वादशेशुभः ॥१४७॥

टीका—लग्नसे ग्यारहवें स्थानमें सर्वग्रह शुभ हैं और ३ सूर्य, और ८ शनि ॥ ४५ ॥ और चन्द्रमा २ । ३ और भौम ३ । ६ और बुध, बृहस्पति ९ । ६ । २ । ३ । ४ । ५ । १० और शुक्र ९ । ३ । ४ । ५ । ९ । १० । १ इनस्थानोंमें शुभहैं, और राहु के

१०।८।६।५।३।९।१२ इतने स्थानमें शुभ-
फलदायक हैं ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ इतिरव्यादयः पुष्टिकराग्रहाः॥

छायापादैरसोपेतैरेकविंशशतं भजेत् ॥ ल-
ब्धांकेघटिकाज्ञेयाःशेषांकेचपलाःस्मृताः ॥

टीका—अथ दिन नापवेको कहतेहैं. अपनी छाया डील-की अपने पांवकर नापिये. जेई पाउं छाया होय तामें ६ और मिलावे. फिर एकसौ एक्कीसमें १२१ तिनको भाग दीजे जो भाग पाइये सो घडी दिन जाने. जो चढ़ता होय तो चढ़ता दिन जाने और जो उतरता होय तो बाकी दिन रह्या जाने. भाग हरेते शेष बचे तिने साठगुने करके भाग प्रमाण अंकनपर फैलायके पल कर लीजे, सोई पल जानिये ॥ १४८ ॥ इति घटिकापलानां ज्ञानम् ।

पूर्वाषाढानुराधाचज्येष्ठाश्लेषाचरेवती ॥ वि
शाखाचयदामूर्ध्नितदास्यादष्टमोदयः॥४९॥
सूर्यभान्मौलिभंगण्यंसप्तहीनंचशेषकम्॥द्वि
गुणंचद्विहीनंगतारात्रिःस्फुटाभवेत् १५०॥
मस्तकेमृगशीर्षेचमूलेचनवमोदयः॥ अन्य

दृक्षयदामूर्धितदास्यादष्टमोदय ॥ १५१ ॥

टीका–अथ रात्रिगत निर्णय पूर्वाषाढा, अनुराधा, ज्येष्ठा, आश्लेषा,रेवति विशाखा इन नक्षत्रनमें कोऊ नक्षत्र माथेपर होयतो आठवें नक्षत्रपर उदयजानिये॥ १४९॥और जो नक्षत्रका सूर्य होय तासों जो नक्षत्र शिरपर होय ताको गनि लीजे, पुनि सातका भागदीजे शेष बचे न्यून कीजे, तामें द्य और घटाइये जो रात्रिगत घ भोग्य जानिये ॥ १५०॥और मृगशिर वा मूल माथेपर होय तो नवमें नक्षत्रको उदय जानिये और जो अन्य नक्षत्र माथेपर होय तो आठवें नक्षत्रको उदय कहिये ॥ १५१ ॥ इति रात्रिज्ञानम् ।

किंकुर्वंतिग्रहाःसर्वेयस्यकेंद्रेबृहस्पति ॥
मत्तमातंगयूथानांशतंहंतिचकेसरी ॥१५२॥

टीका–जो केंद्रस्थान१।४।७।१० इन भावमें बृहस्पति अकेले होय और सकल ग्रह अरिष्टक होय तो क्या करसक्ते हैं। जैसे अकेले सिंह सैकडों हाथियोंका समूहमारे सो इनि भांति ऐसे सो और ग्रहजनित अरिष्टनको नाश करै॥ १५२॥

शुक्रोदशसहस्राणिबुधोदशशवानिच ॥

लक्षमेकंतुदोषाणांगुरुर्लग्नेऽव्यपोहति॥१५३॥

टीका—जो लग्नमें शुक्र होय तो दशहजार दोषनको हनै, और बुध तो हजार और गुरु तो लक्ष दोषनको हनै॥ १५३॥

सर्पाकारंलिखेच्चक्रंविवाहेचत्रिनाडिकम् ॥
अश्विनीप्रमुखंभंचदत्त्वासाम्यंविचारयेत्॥
॥५४॥एकनाडीस्थनक्षत्रेदंपत्योर्मरणंध्रुवम्
सेवायांचभवेद्धानिर्विवाहेत्वशुभंभवेत्१५५

टीका—सर्पआकार लिखकर त्रिनाडी करके अश्विनीप्रमुख ३ नक्षत्र एक नाडीमें राखिये ऐसे ९ ठिकाणें मुखसों लेकर पुच्छतक २७ सत्ताईस नक्षत्र राखिये ॥१५४॥एक नाडीमें विवाहलग्नको नक्षत्र आवै तौ अशुभ होय. सेवा ते (चाकरी करे सो) हानि होय ॥ १५५ ॥



परिघार्धंव्यतीपातंवैधृतिंसकलंत्यजेत्॥ वि
ष्कंभेघटिकाःपंचशूलेसप्तप्रकीर्तिताः॥५६॥

षड्गंडेचातिगंडेचनवव्याघातवज्रयोः॥ ए
तेतुनवयोगाश्चवर्ज्यालमेसदाबुधैः ॥ ५७॥

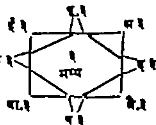
टीका—जो नवयोग निषिद्ध तिनकीघडी पढिलेने वर्जित है सो ऐसी, परिघ घटी ३० व्यतीपात और वैधृति ये संपूर्ण त्याग करे विष्कंभकी घडी५ शूलकी ७ त्यागिये ॥ ५६ ॥ और गंड तथा अतिगंडकी ६ व्याघातकी ८ वज्रकी ९ शुभकार्यमें वर्जित हैं ॥ ५७ ॥

व्यतीपातेभवेन्मृत्युर्गंडांतिमरणंध्रुवम् ॥ अ-
ग्निदग्धोभवेद्वज्रेरुजश्चैवापिगंडके॥ ५८॥वै-
धव्यवैधृतौचैवविष्कमेकामचारिणी ॥ वी
र्यहीनोतिगंडेचव्याघातेमृतवत्सका॥५९॥
परिघेचभवेद्दासीमद्यमांसरतासदा॥१६०॥

टीका—व्यतीपातमें विवाह करे तो मृत्यु होय अरु गंडांतमें करे तो निश्चय मृत्यु करे. वज्रमें आग लगे गंडमें रोग होय ॥ ५८ ॥ वैधृतिमें वैधव्य होय, विष्कंभमें कामातुरहोय अतिगंडमें धातुक्षय होय व्याघातमें मृतवत्सा होय याने बालक मरिजाँय परिघमें पराई दासी होय, अरु मांस मदिरादिक सेवन करे ॥ ५९ ॥ १६० ॥ इति निषिद्धयोगः।

पट्टाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणसमन्वितम् ॥ यस्मिन्नृक्षे भवेत्सूर्यस्तदाद्यं मध्यगं त्रयम् ॥ ६० ॥ त्रयस्त्रयश्च सर्वत्र ततः पूर्वा-दितोलिखेत् ॥ नक्षत्रत्रितयेमध्येपक्षद्वयवि नाशनम् ॥ ६१ ॥ पूर्वस्थानेभवेल्लक्ष्मीर्धन धान्यसमागमः॥ अग्निकोणेभवेन्मृत्युर्नारी कुलविनाशिनी ॥ ६२ ॥ दक्षिणेदुर्भगानारी दारिद्र्यंमृत्युमाप्नुयात् ॥ नैर्ऋत्येपुत्रलाभश्च सुखंसौभाग्यमेवच ॥ ६३ ॥ पश्चिमेविधवा कन्यावायव्येव्यभिचारिणी॥उत्तरेधनधा-न्यानिचैशानेसुखसंपदः ॥ ६४ ॥ मांगल्यं सर्वकार्येषुपट्टचक्रंविचारयेत् ॥ गर्गाचार्ये-णसंप्रोक्तंसर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १६५ ॥

टीका—पट्टचक्रके सूर्यके नक्षत्रते दिनके नक्षत्रलौं गनिये पुनः मध्यके कोठामें ३ भरिये. ऐसे क्रमते पूर्वादि दिशा-



मध्ये ३ तीन नक्षत्र आठों दिशाओंमें धरिये जौनदि शामें दिनका नक्षत्र परे तो ताको फल कहिये पूर्व होय, तो लक्ष्मी धन धान्य होय, अग्निमें मृत्यु, कुलविनाश, दक्षिणमें दुर्भगा स्त्री, दारिद्र्य, मृत्यु. नैर्ऋत्यमें पुत्रलाभ, सौभाग्य, सुख, पश्चिममें वैधव्य होय वायव्यमें व्यभिचारिणी, उत्तरमें धन, धान्य, सुख, ईशान्यमें सुख संपदा ॥ १६५ ॥ इति श्रीकाशिनाथभट्टाचार्यकृतौ शीघ्रबोधविवाहप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥



श्रीः ।

अथ द्वितीयप्रकरणम् ।

द्विरागमनमुहूर्त.

मातृयुग्मंहयोमैत्रं श्रुतियुग्मंकरत्रयम् ॥ पुनर्वसुद्वयंपूषामूलंचाप्युत्तरात्रयम् ॥ १ ॥ विषमेवत्सरेमासेमार्गेमेषेचफाल्गुने । मकरेमिथुनेमीनेलग्नेकन्यातुलाधनुः ॥ २ ॥ भौमार्किवर्जितावारागृह्यंतेचद्विरागमे ॥ षष्ठीरिक्ता द्वादशीचअमावास्याचवर्जिताः ॥ ३ ॥

टीका—रोहिणी, मृग, अश्वि. अनु. श्र. ध. ह. चि. स्वा. पु. पु. पू. षा. मू० उत्तरात्रय इतने नक्षत्र द्विरागमनको श्रेष्ठ हैं, और विवाहसे विषम वर्ष श्रेष्ठ है, अगहन, फाल्गुन, वैशाख ये मास हैं. म. मि. मी. क. तु. ध. ये लग्न श्रेष्ठ हैं. अरु मंगल शनिवार, षष्ठी द्वादशी अमावास्या रिक्तातिथी वर्जितहैं ॥ ३ ॥

अथद्विरागमनार्थमुक्तमासादिचक्रम्.									
रो.	मृ.	अश्वि	उ	ह	च	पू	चि	स्वा.	नक्षत्रे.
मूल	धृ.	पू.षा	मृ	हस्त	उ.षा.	उ.भा.	•	•	
१	१	५	७	९	११	११	१५	१७	वर्षे
मार्गशीर्ष			फाल्गुन			वैशाख			मास,
मि	क	तु	ध	म	मी	•	•	•	लग्न
र.	चं	बु	गु.	शु	०	•	•	•	वार.
१	२	३	५	७	८	१०	११	१२	तिथि,

आर्द्रात्रयंभाद्रयुग्मंमृगः पूषाश्रुवि करः॥ मूलत्रयगुरोसूर्येभौमेरिक्ताविनातिथिः॥४॥ आद्येद्वयेत्रयेमासेलग्नेकन्याझषेस्थिरे ॥चापेपुंसवनंकुर्यात्सीमंतंचाष्टमेतथा ॥ ५ ॥ शुभेत्रिकोणेकेंद्रस्थेपापेषष्ठेत्रिलाभगे ॥ पुत्रकामःस्त्रियंगच्छेन्नरोयुग्मासुरात्रिषु ॥६॥ पुनर्वसुद्वयेहस्तत्रयेमैत्रद्वयेमृगे । मूलोत्तरा धनिष्ठासुद्वादशैकादशेदिने ॥७॥ अन्यत्रापिशुभेयोगेवारेबुधशशांकयोः॥ भानोर्गुरोःस्थिरेलग्नेबालनामकृतंशुभम्॥८॥ मैत्रत्र

येहरिद्वंद्वेविधिद्वंद्वेऽदितिद्वये ॥ स्वातिहस्तोत्तराषाढापूषार्यमद्वयेषुच ॥ ९ ॥ सिंहत्रयेघटेलग्नेमासयोस्त्रिचतुर्थयोः ॥ यात्रातिथौच निष्कास्यःशिशुर्नैवार्कभौमयोः ॥ १० ॥

टीका—आर्द्रा इति, आर्द्रा. पु. पु. पू. भा. उ. भा.मृ. रे. अ.ह. मू.पू.षा.उ.षा.इन नक्षत्रोंमेंसीमंतकीजिये. अरु र. मं. गु. वार लीजिये. रिक्ता ४।९।१४ ये तिथि वर्जित हैं ॥ ४ ॥ अरु पुंसवन कर्मको १ । २ । ३ मास अरु ६।१२।२।५।११।८ लग्न कीजे. मुख्यगर्भके मासमें पुंसवनकर्म पूजा दान स्थिरता निमित्त कीजे. अरु सीमंत अष्टमास ८ में कीजे ॥ ५ ॥ इति सीमंतपुंसवनविष्णुपूजा ॥ शुभइति ॥ जो त्रिकोण ५ । ९ केंद्र १।४।७।१० इनमें सौम्य अरु ३।६।११इनमें पापग्रह होय तो लग्नमें जो स्त्री प्रसंग करे तो संतान होय परंतु रात्रि अंधलग्न त्याज्य हैं ॥ ६ ॥ इतिगर्भाधानम् ॥ पुनरिति ॥ पु. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. मृ. मू. उ. घ. ये नक्षत्र अरु ११।१२ दिन. बु. चं. र. गु. वार अरु २।५।८।११ लग्नमें बालकको नाम धरिये ॥ ७ ॥ ८ ॥ इतिनामप्रकरणम् ॥ मैत्रति ॥ अनु.

श्ये मू म प रो मृ पु स्वा ह उ धा रे पू षा उ म ये नक्षत्र अरु सिंह, कन्या, तुला, कुंभ ये लग्न अरु तीसरे चौथे मासमें शुभतिथि जो यात्रामें शुभ कहिये अरु भौम, शनि त्यागिके बालकको नक्षत्रदर्शन करावे ॥ ९ ॥ १० ॥

अथआधरणी यंत्रम्.								अथबालकनामकरणयंत्रम्							
ना	पु	पु	स्वा	श्रवा	मृ.	रे	अ.	पु.	पु.	उ.	चि.	स्वा	श्र	धे	पू
द	मृ.	पुना	श्रवा	म.	र	उ.	मं.	[illegible]	ध	अ.	मृ.	[illegible]	पू.	पू.	[illegible]
वार	१	२	३	५	६	७	८	११	२	५	८	[illegible], नामकरणं			
१	११	१६	१३	वि.	१	२	३								
मा.	६	२	५	८	११	९	१२								

पुनर्वसुद्वयंचित्राविशाखामरणीद्वयम् ।मूल
मार्द्रामघाहेयाश्रवणोदशमस्तथा ॥ ११ ॥
सोमशुक्रबुधानारीप्रसूतास्नानकर्माणि ॥ हे
याप्रतिपदाषष्ठीनवमीचतिथिक्षयम् ॥१२ ॥

टीका–पुनर्वस्वि ति २। पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा वि म ह मू. आ म भ ये दश न क्षत्र प्रसूतिस्नानको

अथबालनिष्कासनयंत्रम्.						
पु	[illegible]	मृ	अ	ध	रो	०
मृ.	पु	पु	ह	स्वा	ह	श्र.
रे	[illegible]	ह	पू.	[illegible]	[illegible]	०
५	८	११	५	१०	१२	०
[illegible]	च.	बु.	[illegible]	शि	[illegible]	०

वर्जितहैं. सोम शुक्र बुध ये वार वर्जित हैं. अरु १ । ६ । ९ । ३० । ये तिथि वर्जितहैं. इनमें प्रसूतिस्नान न करिये॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ इति प्रसू० ।

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यां धनिष्ठायांच रेवती ॥ गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवांबरम् ॥ १३ ॥ लग्ने मीने च कन्यायां मिथुने च वृषः शुभः । पुण्ये पुनर्वसुद्वंद्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥ १४ ॥

टीका—हस्त इति । ह. चि. स्वा. वि. अनु. अश्वि-नी, ध. रे. पु. पु. रो. ऊ.

स्त्रीनवांबर.				पुरुषनवांबरमुहूर्ताः					
ह	चि	स्वा	ह	चि	स्वा	वि	अनु	पु	पु.
वि	अनु.	ज्ये	भ.	रो	उ ३	ध	रे	गु	बृ
मू	अश्वि	ध रे	शु.	१२	६	३	२	९	९
बु	शु	बृ	ति.	थि.	३	८	१३	५	१०
पू	१२ ६	३ २	१५	ये	ति	थि	शु	भ	०

तीनों उत्तरा गुरु, शुक्र, बुध ये वार. मीन, कन्या, मिथुन, वृष ये लग्न स्त्रीको नवीन वस्त्र धारणके लिये शुभ जानिये. ॥ १३ ॥ १४ ॥ इति वस्त्रधारणम् ।

रोहिण्युत्तररेवत्योर्मूलं स्वात्यनुराधयोः ॥ ध

निष्ठाचत्रयःपूर्वाज्येष्ठायांमृगशीर्षके ॥१५॥
एतेयत्रागताभानिप्रसूतिस्नानकोविदैः॥ वा
रेभौमार्कयोर्जीवेस्नानमुक्तंसदैवहि ॥ १६ ॥
मूलादितिद्वयंग्राह्यंश्रवणश्चमृगःकरः ॥ ज
लवाप्यर्चनेहेयाःशुक्रमदार्कभूमिजा ॥१७॥

टीका—अथ प्रसूतिविशेषस्नानं च पुनः प्रसूति कूप जलादिपूजन मुहूर्त वर्णन करते हैं रोहिणीति रोहिणी,तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाती अनुराधा, धनिष्ठा, पूर्वात्रय, ज्येष्ठ, मृगशिर.ये चौदह नक्षत्र त्यागिके जितने जो नक्षत्र रहते लीजे अरु भौम, रवि, गुरु ये वार शुभहैं प्रसूति स्नानको विशेष शुभ हैं ॥१५॥१६॥ इति पुनः प्रसूतिस्नानं मूले

अथ स्त्रीप्रसूतिस्नानचक्रम्.							
अश्वि	रो.	म	उफ.	पु	ह	चि	स्वा
अनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श
पू३	उ३	वार	सू	मं	गु	बु	शु
१	३	५	७	८	१०	११	१२
१३	१४	१५	६.	ति	प	मा	०

ति। मृ पु पु अ मृ ह ये नक्षत्र मास हैं शुक्र, शनि,रवि, भौम ये वारत्यागिकेप्रसूतिकोकूपजलाशयपूजन उत्तमहै१७॥

नवान्नभोजनेग्राह्यंवस्त्रेप्रोक्तमशेषतः ॥ बा

राधिकौसूर्यसोमौनक्षत्रंश्रवणोमृगः ॥ १८॥
आद्यान्नप्राशनेपूर्वासपार्द्रावरुणोयमः ॥ न
क्षत्राणिपरित्यज्यवारेभौमार्कनंदने ॥ १९॥
द्वादशीसप्तमीरिक्तापर्वनंदास्तुवर्जिताः । ल
ग्नेषुचझषोग्राह्योवृषकन्याचमन्मथः ॥ २० ॥
शुक्लपक्षेशुभयोगेसंग्राह्यःशुभचंद्रमाः॥ मासे
षष्ठाष्टमेपुंसांस्त्रियोमासिचपंचमे ॥ २१ ॥

टीका—नवान्नइति. नये अन्नको भोजन अरु नवीन वस्त्र धारणविषे शनि. रवि ये वार वर्जितहैं. अरु श्रवण मृगशिर अरु रवि. सोम ये वस्त्रके मुहूर्तविषे. नवान्नभोजनते अधिक हैं॥ १८॥ इति नवान्नभोजनम्.॥ आद्येति अब बालक के अन्नप्राशनके मुहूर्तविषे इतने नक्षत्रवर्जित हैं. तीनों पूर्वा.

अथप्रथमान्नप्राशनमुहूर्त्तयंत्रम्.

अश्वि	कृ	रो.	मृ	पु	पु	म.	उ.
ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	भ.
श्र.	ध.	उ.	रे.	न.	सू	चं.	बु
गु.	शु.	वार.	२	३	५	१०	१३
ति.	२	३	६	११	कृ.	शु	उ.
या.	मं	द्र.	पू	र.	पूर.	वसं.	६
८	मा	सा.	स्त्रि.	य	५	मा.	स.

आश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा, भरणी अरु भौम शनिवार अरु १२।७।४।९।१४।३०।१।६।११। तिथिअरुव्यतीपातयोग ये सब वर्जितहैं अरु भौम, बुध, मिथुन, कन्या ये लग्न शुभ हैं अरु शुक्लपक्षविषे उत्तम शुभयोगमें कीजे अरु शुभ चंद्रमा होय अरु छठवां मास पुत्रके अन्नप्राशनमें मास है अरु कन्याके पांचवे मासमें कीजे ॥ १८ ॥ १९॥२०॥२१॥

इतिअन्नप्राशनमुहूर्त ।

पुनर्वसुद्वयंज्येष्ठामृगश्चश्रवणद्वयम् ॥ हस्त त्रयेचरेवत्यांशुक्लपक्षोत्तरायणे ॥२२ ॥ लग्नं गोस्त्रीधनु कुंभोमकरोमन्मथस्तथा ॥सौम्ये वारेशुभेयोगेचूडाकर्मस्मृतं बुधैः ॥ २३ ॥ ह स्तत्रयेहरिद्वंद्वपूर्वाश्वमृगपंचके ॥मूलेपौष्णे चनक्षत्रेबुधेऽर्कगुरुशुक्रयोः ॥ २४ ॥

टीका—पुनर्वसित्विति, पु पु ज्ये मृ श्र ध ह चि स्वा रे. ये नक्षत्र अरु शुक्लपक्ष, उत्तरायण ॥ २२ ॥ अरु वृष, क कु ध म मि ये लग्न बार, बुध, शुक्र ये बार सर्वोंमें श्रेष्ठ हैं

जन्म मास अरु रिक्ता ये मुंडन अरु भूषणधारणमें वर्जित हैं ॥ २३ ॥ इति चूडाकर्म॥हस्तेति। ह.चि. स्वा.श्र.ध.पू. ३ मृ.आ. पु. पु. आश्ले.मू. रे. ये नक्षत्र अरु रवि, बुध, गुरु, शुक्र ये वार शुभ हैं ॥ २४ ॥

चूडाकर्ममुहूर्तयंत्रम्.

पु.	पु	ज्ये.	मृ	श्र	५	ह.	०
चि	स्वा	रे	न	शु	क्र	प	क्ष.
११	१२	१	२	३	रा	शि	च
बु.	बृ.	शु.	वा	२	२	६	११
१०	३	ल.	म.	२	३	५	६
७	१०	१	१२	ति	थि.	भ	द्रा
व्य	सौ	पा.	स	व	ज्यं	दे.	०

देवोत्थानेमीनचापेलग्ने वर्षेचपञ्चमे॥ विद्यारंभोत्रवर्ज्यश्चपठनाध्यायरिक्तकाः॥ २५॥

रिक्तायांचअमावस्यांप्रतिपच्चविवर्जयेत् ॥ बुधेंदुवासरेमूर्खःशनिभौमोमृतिप्रदः॥२६॥

विद्यारंभेगुरुःश्रेष्ठोमध्यमौभृगुभास्करौ॥ बुधेंदूचोपविद्यायांशनिभौमौपरित्यजेत्२७॥

पूर्वाषाढाश्विनीहस्तत्रयेचश्रवणत्रये ॥ ज्येष्ठाभगेमृगेपुष्येरेवत्यांचोत्तरायणे ॥ २८ ॥

द्वितीयायांतृतीयायांपंचम्यांदशमीत्रये ॥

सूर्यशुक्रसुराचार्येवारेपक्षेवथासिते ॥२९॥ छ
म्रेवृषेधनुःसिंहेकन्यामिथुनयोरपि॥ व्रतबंधः
शुभेयोगेव्रह्मक्षत्रविशांपते ॥ ३० ॥ पापो
भौमःशनिःकेतुःक्रूरोराहूरविस्तथा॥ सौम्य
सोमोवुधश्चैवगुरुःशुक्रस्तथैवच ॥ ३१ ॥

टीका—देव इति । देवोत्थान कहिये कार्तिक शुक्ल ११ ते आषाढ शुक्ल ११ तांई अरु मीन धनु लग्न पांचवें वर्ष तांई षष्ठी अमावास्या परीवा, सौमी, चौदस ये तिथि वर्जित हैं. अरु बुध, गुरुवारमें विद्यारंभ करें तो मूर्ख होय शनि भौम मृत्यु होय ॥ २५ ॥ २६ ॥ विद्याइति । विद्यारंभको गुरुवार श्रेष्ठ है. शुक्र, रवि मध्यम है बुध, सोम अल्पविद्याको करैहैं शनि मंगल सर्वथा त्याज्य हैं ॥ २७ ॥

अथयज्ञबंध मुहूर्तचक्रम्								
पू	अश्वि.	ह.	चि	स्वा.	अ	श्र.	ध	रे.
लम	वृ.	वृ	६	क	क.	क.	ए.	वृ.
मे	वृ	मी.	वृ	मी	क	क	रा	ध.
२	१	११	१०	११	१२	ति	[illegible]	[illegible]
च	त	२	९	५	१	च	म	[illegible]
ता.	प.	च.	त	वि.	पं.	सप	[illegible]	[illegible]

इति विद्यारंभः ॥ यज्ञोपवीतमुहूर्त पूर्वाइति ॥ पू षा ध हस्त. चित्रा स्वा श्र. ध शतभि पूर्वफा मृ रे. उत्तरायण

सूर्य, २।३।५।१०।११।१२। तिथी रवि, शुक्र, गुरुवार शुक्लपक्ष अरु वृष, धनु, सिंह, कन्या, मिथुन लग्न शुभयोग ये व्रतबंधनको शुभ हैं. इनमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनोंका कह्याहै. वडे ग्रंथमें चारों वेदके ब्राह्मणनके मुहूर्त जुदे जुदे भेदहैं ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ इतिय० मुहूर्त ।

श्रुतित्रयेऽदितिद्वंद्वे मैत्रेहस्तत्रयोत्तरे ॥ अश्वि विधियुगेमूलेपूषाश्वे सौम्यवासरे ॥३२॥ द्वि स्वभावेघटेलग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते ॥ चैत्रपौ षौहरिस्वापंवर्षंचयुगलंत्यजेत् ॥ ३३ ॥

टीका—श्रुतीति। श्र.ध.श.पु. अ.ह.उ.३ पू. पु.रो.मृ.मू.रे. अश्वि.नक्षत्र अरु सौम्यवार शुभहै.।३२। अरु मि.क.ध.मी.कुं. शुभहैं. चैत्र, पौष, आषाढ शुक्ल ११, ते कार्तिक शुक्ल ११ लौं समवर्ष त्याज्यहैं, ॥ ३३ ॥ इतिकर्णवेधः ॥

अथकर्णवेधमुहूर्तयंत्रम्.

स्वा.	उ३	पूफा	रो	मृ.	पू.	रे.	ऽश्वि
श्र.	ध	श.	पु.	पु.	अ.	ह.	चि.
चं	बु	बृ.	शु	वा.	३	२	९.
१२	११	क.	वे.	शा	ज्ये.	धा.	मा.
मृ	फा	मा	१	३	५	७	व.

पूर्वाषाढादितिद्वंद्वे विधियुग्मंहरित्रयस्वाउत्त

सूर्यशुक्रसुराचार्यवारेपक्षेवथासिते ॥२९॥ उ
क्षेवृषेधनुःसिंहकन्यामिथुनयोरपि॥ व्रतबंधः
शुभेयोगेभ्रह्मक्षत्रविशांपते ॥ ३० ॥ पापो
भोमःशनि केतु क्रूरोराहूरविस्तथा॥ सौम्यः
सोमोबुधश्चैवगुरुःशुक्रस्तथैवच ॥ ३१ ॥

टीका—देव इति । देवोत्थान कहिये कार्तिक शुक्ल ११ से आषाढ शुक्ल ११ ताईं अरु मीन धनु लग्न पांचवें वर्ष ताईं षष्ठी अमावास्या परीवा, नौमी, चौदस ये तिथि वर्जित हैं. अरु बुध, चंद्रवारमें विद्यारंभ करें तो मूर्ख होय शनि भौम मृत्यु होय ॥ २५ ॥ २६ ॥ विद्यइति । विद्यारंभको गुरुवार श्रेष्ठ है. शुक्र, रवि मध्यम है. बुध, सोम उपविद्याको कहेहैं शनि मंगल सर्वथा त्याज्य हैं ॥ २७ ॥ इति विद्यारंभः ॥ यज्ञोपवीतमुहूर्त पूर्वाइति ॥ पू षा भ हस्त चित्रा स्वा अ. ध शतभि पूर्वफा. म रे. उत्तरायण

अथव्रतबंध मुहूर्तचक्रम.								
पू	उषे	ह.	चि	स्वा.	अ	श्र	ध	रे.
मा	पू.	पु	रे.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मे	कुं	मी.	वृ.	मी	[illegible]	त	ध	व.
२	३	११	१०	११	१२	ति	[illegible]	[illegible]
५	[illegible]	२	२	५	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सि.	[illegible]	स्व	[illegible]	[illegible]

सूर्य, २।३।५।१०।११।१२। तिथी रवि, शुक्र, गुरुवार शुक्लपक्ष अरु वृष, धनु, सिंह, कन्या, मिथुन लग्न शुभयोग ये व्रतबंधनको शुभ हैं. इनमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनोंका कत्याहै. बडे ग्रंथमें चारों वेदके ब्राह्मणनके मुहूर्त जुदे जुदे भेदहैं ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ इतिय० मुहूर्त ॥

श्रुतित्रयेऽदितिद्वंद्वे मैत्रे हस्तत्रये तथोत्तरे ॥ भगे विधियुगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे ॥३२॥ द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते ॥ चैत्रपौषौ हरिस्वापं वर्षं च युगलं त्यजेत् ॥ ३३ ॥

टीका—श्रुतीति। श्र.ध.श.पु. अ.ह.उ.३ पू. पु.रो.मृ.मू.रे. अश्वि.नक्षत्र अरु सौम्यवार शुभहै.।३२। अरु मि.क.ध.मी.कुं. शुभहैं. चैत्र, पौष, आषाढ शुक्ल ११, ते कार्तिक शुक्ल ११लौं समवर्ष त्याज्यहैं॥ ३३ ॥ इतिकर्णवेधः।

अथकर्णवेधमुहूर्तयंत्रम्.

स्वा	उ३	पूफा	रो	मृ.	मू	रे	अश्वि.
श्र	ध.	श.	पु	पु.	अ.	ह.	चि.
च.	बु	बृ	शु	वा	३	२	७
१२	११	कु.	वै.	शा.	ज्ये.	क्रा	मा
मृ.	फा	मा.	१	२	५	५	ब.

पूर्वाषाढादितिद्वंद्वविधियुग्महरित्रयमूलहस्त

राफाल्गुनीहस्तत्रयंमूलचरेवती॥३४॥मैत्रा श्विनीचलभानिसिंहःकन्याघटोवृष ॥ मिथु नमकरोग्राह्यंवास्तुकर्मणिकोविदे ॥३५॥ श्रावणश्चाथवैशाख कार्तिक फाल्गुनस्तथा मासेषुमार्गशीर्षश्चवास्तुकर्मणिशस्यते३६॥ वज्रव्याघातशूलानिव्यतीपातश्चगण्डक ॥ वि ष्कंभःपरिघोवर्ज्योवारोभौमश्चभास्करः ॥

टीका–पूर्वाहवि। पूर्वापाढा, पु.पु रो मृ श ध श ह फा. ह. चि स्वा मू. रे. अनु अ ये नक्षत्र, सिं क कुं वृ मि मकर. लग्न भा, वै का फा ये मार्गशीर्ष मास

अथवास्तुकर्ममुहूर्तचक्रम.							
उ.	पू.	पू.	मृ.	अ	ध	श	रे.
ह.	ह	चि	स्वा	पु	रे.	अनु	अश्वि.
म.	५	६	११	२	३	१०	क.
श्रा.	वै	का.	फा.	मृ.	मा.	मी	औ
सो.	सो.	प्रति.	शु.	बु	श.	बृ.	ध.
ति.	त्रि.	व्या.	शू.	गं.	व.	प.	वै.

सब शुभ हैं व व्या शू व्य गं वि प ये योग अरु मंगल रवि ये वार त्यागिके गृहकी नीव दीजे ॥३४।३५।३६॥ ३७ ॥ इति वास्तु० ।

आर्द्राशतभिषाऽऽश्लेषाविशाखाभरणीद्वयम

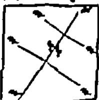
त्याज्यौचद्वादशीरिक्तापष्ठीचंद्रक्षयोऽष्टमी॥ ॥ ३८ ॥ प्रतिपच्चतिथिर्वारौत्याज्यौशनिकुजौतथा ॥ देवमूर्तिप्रतिष्ठायांस्थिरेलग्नेोत्तरायणे ॥ ३९ ॥ विशाखाभरणीहेयाश्लेषास्यान्चमघातथा॥अमावास्याचरिक्ताचवारेभौमेरवौतथा ॥ ४० ॥ गृहप्रवेशोवैशाखेश्रावणेफाल्गुनेतथा ॥ आश्विनेचस्थिरेलग्नेग्राह्यःपक्षोबुधैःसितः ॥ ४१ ॥

टीका—आर्द्रेति। अथ वापीकूपतडागबागमुहूर्त्त. इनकी प्रतिष्ठाभी ऐसेही जानिये, आर्द्रा,शततारका,आश्लेषा,वि. भ. कृ. ये नक्षत्र, १२।४।९।१४।३०।६।८।१। ये तिथि, शनि भौमवार ये सब त्याज्य हैं. अरु वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ, उत्तरायण,सूर्य इनमें वाप्यादिनिर्मित प्रतिष्ठा कीजे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ इतिवापीदेवालयादिप्रतिष्ठा॥अब गृहप्रवेशकहतेहैं. विशाखेति वि.भ.श्ले.म. नक्षत्र, ३०।४।९।१४। ये तिथि;भौम, रविवार ये सब गृहप्रवेशाविषे वर्जितहैं॥ ४०॥वैशाख, फाल्गुन,श्रावण, आश्विन वृष,सिंह, वृश्चिक,कुंभ ये स्थिर लग्न अरु शुक्लपक्षइनमें

गृहप्रवेश उत्तम है ॥ ४१ ॥ इति वापीकूपदेवप्रतिष्ठागृहप्रवेश०

देवालययंत्रम्.								गृहप्रवेशयंत्रम्.							
अ	रो	मृ.	पु.	पू.	म.	पू.	उ	अ	रो.	मृ	अ	पु.	पु.	उ.	उ.
उ	चि.	स्वा.	अ.	ज्ये.	मू.	उ	रे.	चि	स्वा	श	ज्ये.	मू	श	ध	रे.
श	ध	रे	ह	६	म.	११	१	६	न	च.	तृ.	पू	शु.	ध	रा
५	७	१०	११	१२	ति	सु	बु	बे.	आ	पौ	मा.	फा.	ज्ये.	मा	श
बृ	शु	श.	बा	२	५	८	६	२	५	८	११	बे.	स.	म.	ग

अनुराधाच्चतुष्कंचमघादितियुगेकरे ॥ स्वा
तिश्रुतिविधिद्वंद्वेरेवत्यामुत्तरात्रयम् ॥४२॥
गोस्त्रीझषेहलकार्येहेयःसूर्यःशनिःकुज ॥ ष
ष्ठीरिक्ताद्वादशीचद्वितीयाद्यपर्वच ४३ त्रि
भिस्त्रिभिस्त्रिभिः पचत्रिभिः पंच
त्रिभिर्द्वयम् ॥ सूर्यभाद्दिनभं
यावद्धानिवृद्धिर्हलेक्रमात ॥४४



टीका–अनुराधाइति।अनुरा ज्ये मू पू षा म पु.पु ह.
स्वा श रो मृ रे. उत्तरात्रय ये नक्षत्र हलकर्मको शुभ हैं.
वृष, मी क ये लग्न लीजे अरु रवि, शनि, मंगलवार. ६।४
,१४।९।१२।२।१२।१० तिथि। व्यतीपात योग ये त्याज्यहैं

अरु सूर्यके नक्षत्रते दिनके नक्षत्रतांई गनिये सो क्रमते हलचक्रमें समझलीजै. प्रथम हानि फिर वृद्धि फिर हानि फिर वृद्धि इस प्रकारसे ॥ ४२॥ ४३॥ ४४ ॥

हलचक्रम्.							
श	ज्ये	मू	पू	म	पु.	पु	ह:
स्वा	अ.	रो	मृ	उ ३	रे.	न	०
२	६	१२	क	र	चं	बु	बृ
शु	वा	१	५	७	१०	११	ति
३	३	३	५	३	५	३	२
हा	वृ	हा	वृ	हा.	वृ	हा	वृ

इति हलचक्रमुहूर्तः ।

अनुराधात्रयंहस्तमृगाश्वीचादितिद्वयम्॥ या
त्रायांरेवतीशस्तानिंद्यार्द्राभरणीद्वयम्४५॥
मघोत्तराविशाखाचसर्पश्चान्येचमध्यमाः ॥
षष्ठीरिक्ताद्वादशीचपर्वाणिचविवर्जयेत् ४६
लग्नेकन्यामन्मथश्चमकरश्चतुलाधरः ॥ या-
त्राचंद्रबलेकार्याशकुनंचविचारयेत् ॥ ४७॥
शनौचंद्रेत्यजेत्पूर्वांदक्षिणांचदिशंगुरौ ॥ सू-
र्येशुक्रेपश्चिमांचबुधभौमेतथोत्तराम्॥ ४८ ॥

टीका—अनुराधाइति. अनु. ज्ये. मू. ह. मृ, अ. पु. पु. रे. ये

नक्षत्र शुभ हैं. ६।४।९।१४।१२।६०।१५। ये तिथि अरु व्यतिपात वर्जित हैं कन्या मि मकर तु ये लग्न शुभ हैं अ रु चंद्रबल शकुन विचार यात्रा कीजे ४५।४६।४७ ।इति यात्रा ॥ अथ दिक्शूलम्. शनि सोम पूर्वको त्यागिये.गुरु द क्षिण, रवि, शुक्र पश्चिम मगल, बुध उत्तरको त्यागिये॥४८॥

सर्वदिग्गमनेहस्त पूषाश्वोश्रवणोमृग ॥सर्व सिद्धिकर पुष्योविद्यार्याचगुरुर्यथा ॥ ४९ ॥ प्रतिपत्सुनवम्यांचपूर्वस्यांदिशियोगिनी ॥ अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यांतुसास्मृता ॥ ५० ॥ त्रयोदश्यांचपंचम्यांदक्षिणस्यां शिवप्रिया ॥ द्वादश्यांचचतुर्थ्यांचनैर्ऋत्य-कोणगामिनी ॥ ५१ ॥ चतुर्दश्यांचप ष्ठ्यांचपश्चिमायांचयोगिनी ॥ पूर्णिमायांच सप्तम्यांवायुकोणेतुपार्वती ॥५२ ॥ दशम्यां चद्वितीयायामुत्तरस्यांशिवावसेत्।ईशान्यां दर्शेचाष्टम्यांयोगिनीसमुदाहृता ॥५३॥ यो

गिनीसुखदावामेपृष्ठेवां
छितदायिनी ॥ दक्षिणेध
नहंत्रीचसन्मुखे मरणप्र
दा ॥५४॥ मासस्यप्रतिप

ई		पू		आ.
	८।३०	१।९	३।११	
उ.	२।१०	योगि.	५।१३	द
	७।१५	६।१४	४।१२	
वा		प		नै.

च्छ्रेष्ठा द्वितीयाकामकारिणी ॥ आरोग्यदा
तृतीयाचचतुर्थीकलहप्रदा ॥ ५५ ॥ पंचमी
चश्रियायुक्ताषष्ठीकलहकारिणी ॥ भक्षपान
समायुक्तासप्तमीसुखदामुदा ॥ ५६ ॥ अष्ट
मीव्याधिदानित्यंनवमीमृत्युदास्मृता ॥
दशमीभूरिलाभास्याद्वैकादशीचहेमदा ॥
॥ ५७ ॥ द्वादशीप्राणसंदेहासर्वसिद्धात्रयो-
दशी ॥ शुक्लावायदिवाकृष्णावर्जनीयाचतु-
र्दशी ॥ ५८ ॥ पौर्णिमायाममायांचप्रस्थानं
नैवकारयेत् ॥ तिथिक्षयेचमासांतेग्रहणांते
दिनत्रयम् ॥५९ ॥

टीका—सर्वेति। अथ सर्वदिशामकी यात्राके नक्षत्र सर्व दिशा द्वार वर्णित हैं ह. रे अ म मृ पु ये नक्षत्र सर्व शुभहैं. अरु पुष्य अधिक सिद्धिप्रद है, जैसे विद्याविषे बृहस्पति ॥ ४९ ॥ इति सर्वदिग्गमने नक्षत्राणि ॥ प्रतिपदिति, पड़िवा नवमीको योगिनी पूर्वमें बसतहै अग्नेय ३।११ दक्षिणे ५।१३ नैर्ऋत्ये १२।४ पश्चिमे १४।६ वायव्ये १५।७ उत्तरे १०।२ ईशाने ३०।८ ऐसे योगिनीवास कहिये ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ यात्रायामिति। यात्राको वामे योगिनी सुखप्रद है, पीछे वांछाप्रद है, दाहिने हानिप्रद है-सन्मुखे मृत्युप्रद है ॥ ५४ ॥ इति यात्रायांयोगिनी फलम् ॥ मासस्येति ॥ मासारंभमें १ श्रेष्ठहै, २कामकारिणी, ३आरोग्यप्रद, ४कलहप्रद, ५भीप्रद,६कष्टहप्रिय,७भोजनप्रद, ८व्याधिप्रद, ९ मृत्युप्रद, १०लाभप्रद, ११स्वर्गप्रद, ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ द्वादशीइति। १२ द्वादशी प्राणसंदेहा, १३ सर्व सिद्धिप्रदा, १४ दोनों अवश्य त्याज्य हैं १५।३० । भूलिके प्रस्थान नहीं कीजे तिथिहानि मासांतमें न कीजे अरु ग्रह णांतके तीन दिन त्यागिये ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इतियात्राविषय ।

अष्टसुप्रहरार्द्धेषुप्रथमाद्येष्वहर्निशम ॥ पूर्व

स्यांवामतोराहुस्तुर्याचतुर्यदिशंव्रजेत् ॥६०॥
राहुःप्राच्यांततोवायुर्दक्षिणेशानपश्चिमे ॥
अग्न्यावुत्तरनैर्ऋत्येप्रहरार्द्धंचतिष्ठति ॥ ६१ ॥
जयश्चदक्षिणेराहुर्योगिनीवामतःशुभा ॥ पृ-
ष्ठतोद्वयमाख्यातंचंद्रमाःसंमुखःशुभः ६२॥

अथदिवसेपूर्वादिवासचतुर्थघटिकाराहुचक्रम्.								
पूर्व	वा	द	ई	प	आ	उ	नै	दिशा
३३॥ यावत्	७॥ या	११। या	१५ या	१८॥। या	२२॥ या	२६। या	३० या	०घटीउपरा ३॥। यावत्
अथरात्रौचतुर्थघटिकाराहुविभागचक्रम्.								
पूर्व	वा	द	ई	प	आ	उ	नै	दिशा
३३॥। यावत्	३७॥ या	४१। या	४५ या	४८॥। या	५२॥ या	५६। या	६० या	३०घटीउपरा ३॥। यावत्

चंद्रश्चरतिपूर्वादिक्रमेणदिक्चतुष्टयम् । मेषा
दिकेषुयात्रायांसंमुखेदक्षिणेशुभः ॥ ६३ ॥
मेषेचसिंहेधनुपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेच
याम्ये॥ युग्मेतुलाकुंभसुपश्चिमायांकर्कालि
मीनेदिशिचोत्तरस्याम् ॥ ६४ ॥

टीका—अथराहुचौघटिका-अष्टस्विति।आठों दिशामें राहु जिसप्रकार दिन रात्रि विषे चलताहै सो चक्रनमें विचारि लीजै ॥ ६० ॥ यात्राविषे राहु दक्षिणे शुभ है, योगिनी वामें शुभ है अरु पीछे दोनों शुभ हैं, चन्द्रमा सम्मुख वा दक्षिण शुभ है ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ अथ चन्द्रमा जिसप्रकार चारोंदिशन-में चले सो कहिये, चन्द्रइति। मेषादि सर्वराशिनको यात्राके समय सम्मुख अरु दहिनोचन्द्रमा शुभ है निरंतर ॥ ६३ ॥ मेषइति।मेष, सिंह धनुको चन्द्रमा पूर्वमें रहताहै, अरु वृष, कन्या, मकरके दक्षिणमें, मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिममें, कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तरमें, ऐसे चारों दिशा३तीन आवर्तकरि चलेहैं ॥ ६४ ॥ इतिचंद्रमावासचक्रम्

ई		पू		आ
	ई	ध मे सि	आ	
उ.	क मी वृ	●	वृ क म	द
	वा.	मि तु ●कुं	नै	
वा.		प		नै

संमुखेत्वर्थलाभायपृष्ठेचंद्रेधनक्षय ॥ दक्षिणेसुखसंपत्तिर्वामेतुमरणंभवेत् ॥ ६५ ॥

टीका—संमुखेइति । सन्मुख चन्द्रमाते अर्थलाभ होइ पीछे धनहानि, दहिने संपत्ति करै वामे मृत्यु करै ॥ ६५ ॥

यामयुग्मेचरात्रौच्चवामेपूर्वादिगोरविः ॥ या
त्रास्मिन्दक्षिणेवामेप्रवेशेपृष्ठकेद्वयम् ६६ ॥

टीका—यामइति । पहर रात्रि रहे ते पहरदिन चढ़ेतांई सूर्य पूर्वमें वसैहै, फिर द्वि २ भहर दक्षिणमें, फिरि भहर दिन रहते भहररात्रिगएतांई पश्चिममें, फिरि २ भहरगएतांई उत्तरमें सो यात्राविषे दहिने वाये शुभ है, भवेशमें संमुख पीछे शुभ है ॥ ६६ ॥ इति रविविचारः ।

मनुभानुदिशासर्परसवेदाश्विनःक्रमात् ॥ र-
विवारान्मुहूर्तोयंकुलिकोनिंदितःशुभे॥६७॥
गतानाड्योद्विगुणिताःपंचभिश्चविभाजिताः
॥ शेषंत्याज्यंयुतश्चैकःसप्तशेषेप्रशंसितम् ॥
॥६८॥ कालहोरेतिविख्यातंसौम्येसौम्यफ-
लप्रदा ॥ सूर्यशुक्रबुधाश्चंद्रोमंदजीवकुजाः
क्रमात् ॥ ६९ ॥ योवारोयत्रादिवसेतदादि
गणयेत्क्रमात् ॥ शुभग्रहस्यसुखदोमुहूर्तो
निष्टदुःखदः ॥ ७० ॥

टीका—मन्विति ।अथ कुलिक योग कहते हैं रविवारको १४ हो मुहूर्त कुलिक है सोमको १२,भौमको १०,बुधको८ गुरुको ६, शुक्रको ४, शनिको २, कहिये सो शुभकार्य में कुलिकयोग वर्जितहै, मुहूर्त दुइ घटिका प्रमाणहै ॥ ६७ ॥ षत्वाइति । रविवारमें सातोंवार भोगकरे सो कालहोरा कहिये, यथा उदाहरण, सूर्योदयते गतघटी द्विगुणित करि पांचको भाग दीजे, तिसमें बचे शेषको घटाइके एक मिलाय दीजे, फिर सातको भागदीजे, शेष बचे सो होरादिवस कहिये १बचे तो रवि, २ चंद्र,३ मंगल, ४ बुध, ५ गुरु, ६ शुक्र, ७शनि,सो क्रमसूंशुक, बुध, चंद्र, शनि, गुरु, मंगल या प्रकार होरा दिवस प्रथम लीजे, सूर्यते गिनिये २ घटी ३० पल प्रथम दिनको५।० दूसरे७।३० तीसरे,१०।०चौथे, १२। ३०पंच, १५। ० छः १७।३० सातवां॥६८॥६९॥७०॥ इतिमुहूर्त देवताकालहोराप्रकार ।

तिथिवारंचनक्षत्रनामाक्षरसमन्वितम् ॥द्वि-त्रिचतुर्भिर्गुणितंरससप्ताष्टभाजितम् ॥७१ ॥ आदिशून्येभवेद्धानिर्मध्यशून्येरिपोर्भयम्॥

अंत्यशून्येभवेन्मृत्युःसर्वांकेविजयीभवेत् ॥
॥ ७२ ॥ शशिप्रवाहेगमनादिशस्तंसूर्यप्र
वाहेनहि किंचनापि ॥ प्रष्टुर्जयःस्याद्वसुमा
न्भागेरिक्तेचभागेविफलंसमस्तम् ॥ ७३ ॥
दक्षिणेदुःखदःशुक्रःसन्मुखेहंतिलोचनम् ॥
वामेपृष्ठेशुभोनित्यंशोधयेच्चास्तगःशुभम् ॥
॥ ७४ ॥ पुष्यंभाद्रपदायुग्मंमैत्रश्रवणमश्वि
नी ॥ हस्तोत्तरामृगस्वातीतथाश्लेषाच्चरेव
ती ॥ ७५ ॥ ग्राह्याणिभानिचैतानिक्रयविक्र
यणेबुधैः ॥ चंद्रभार्गवजीवाश्चवाराःशकुन
मुत्तमम् ॥ ७६ ॥

टीका—अथ युद्धे वादे सर्वांकचक्रम्। तिथीति। तिथि, वार नक्षत्र अरु नामके अक्षर सब जोरिकै पिंड कीजे ताको दूनो करि ६ को भाग दीजे, फिरि वाहि पिंडको चौगुनो करि आठको भाग दीजे, जो प्रथमशून्य आवे तो हानि होई, मध्य शून्यमें शत्रुभय, अंतशून्यमें मृत्यु होई, अरु जो तीनोंमें शेष

टीका—मन्विवि। अथ कुलिक योग कहते हैं रविवारको १४ दो मुहूर्त कुलिक है सोमको १२,भौमको १०,बुधको८ गुरुको ६, शुक्रको ४, शनिको २, कहिये सो शुभकार्य में कुलिकयोग वर्जितहै, मुहूर्त दुइ घटिका प्रमाणहै ॥ ६७ ॥ भवाद्यवि। रविवारमें सातोंवार भौमकरे सो कालहोरा कहिये, तथा उदाहरण, सूर्योदयते गतघटी द्विगुणित करि पांचको भाग दीजे, तिसमें बचे शेषको घटाइके एक बढाय दीजे, फिर सातको भागदीजे, शेष बचे सो होरादिवस कहिये १बचे सो रवि, २ चंद्र,३ मंगल,४ बुध,५गुरु, ६ शुक्र, ७शनि,सो क्रमसूशुक्र, बुध, चंद्र,शनि, गुरु, मंगल या प्रकार होरा दिवस प्रथम लीजे, सूर्यते गिनिये २ घटी ३० पल प्रथम दिनको५।० दूसरे७।३० तीसरे,१०।०चौथे, १२। ३०पंच,१५। ० छः१७।३०सातवाँ॥६८॥६९॥७०॥ इतिमुहूर्त देवताकालहोराप्रकार।

तिथिवारंचनक्षत्रनामाक्षरसमन्वितम् ॥द्वि- त्रिचतुर्भिर्गुणितंरससप्ताष्टभाजितम् ॥७१॥ आदिशून्येभवेद्धानिर्मध्यशून्येरिपोर्भयम॥

अंत्यशून्येभवेन्मृत्यु [illegible]
॥ ७२ ॥ शशिप्रवाहे [illegible]
वाहेनहि किंचनापि ॥ [illegible]
नभागेरिक्तेचभागेविफलं [illegible]
दक्षिणेदुःखदःशुक्र [illegible]
वामेपृष्ठेशुभोनित्यंतोय [illegible]
॥ ७४ ॥ पुष्यंभाद्रपदा [illegible]
नी ॥ हस्तोत्तरामृगस्वाती [illegible]
ती ॥ ७५ ॥ ग्राह्याणिभानि [illegible]
यणेबुधैः ॥ चंद्रभागंवजा [illegible]
मुत्तमम् ॥ ७६ ॥

टीका–अथ युद्धे वादे [illegible]
वार नक्षत्र अरु नामके अक्षर [illegible]
दूनो करि ६ को भाग दीजे, [illegible]
आठको भाग दीजे, जो [illegible]
यन्यमें शत्रुक्षय, अंतशून्यमें मृत्यु होय, [illegible]

भंक यथै तो विजय होय ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ इतिसर्वाकमुहूर्त्तचक्र॥ शशीति। जो चंद्रस्वर वायें चलै तो यात्रा कीजे, सूर्यस्वर दाहिनेमें अशुभ न कीजे, अरु गणक पृच्छकको एक स्वर होइ तो सर्व कार्य सिद्ध है, जो सुषुम्णा चलै तो सर्व कार्य निष्फल होई ॥ ७३ ॥ दक्षिणेति। जो यात्रामें शुक्र दहिनो होइ तो दुःख देई, सम्मुख नेत्रपीडा करै, अरुवायेंपीछे परे तो शुभ है ॥ ७४ ॥ इतिशुक्रविचारः ॥ पुष्पइति। पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, अनु, भ, अश्वि, हस्त, उत्तराषाढ, मृ, स्वा, ज्येष्ठे, रे, ये नक्षत्र क्रयविक्रयकार्यको शुभ हैं, यह पंडित कहतेहैं अरु चंद्र, शुक्र, बृहस्पति ये वार अरु शुभ शकुन देखिकै भी, भैंस अरवादि लीजे अरु वेचिये ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ इतिक्रयविक्रय०

धनिष्ठापचकेत्याज्यस्तृणकाष्टादिसंग्रहः ॥ त्याज्यादक्षिणदिग्यात्रागृहाणांछादनतथा ॥ ७७ ॥ वैलाभ्यंगेरवौताप सोमेशोभाकुजेमृतिः ॥ बुधेधनंगुरौहानि शुक्रेदुःखशनौसुखम् ॥ ७८ ॥ रवौपुष्पंशनौद्र्वाभौमवारेचमृत्तिका ॥ गोमयंशुक्रवारेचवै

लाभ्यंगेनदोषभाक् ॥ ७९ ॥ हस्तत्रयेऽक्षयुगेमघायांपुष्येधनिष्टाश्रवणोत्तरेषु ॥ मूलानुराधाहयरेवतीच्चास्थिरेषुलग्नेषुवधूप्रवेशः ॥ ८० ॥ आश्लेषाद्वितयंस्वातीरोहिणीच पुनर्वसु ॥ रोगस्नानेरेवतीचवर्जयेदुत्तरात्रयम् ॥ ८१ ॥ रिक्तातिथौचरेलग्नेवारेचरविभौमयोः ॥ स्नानंचरोगिणांप्रोक्तंद्विजभोजनसंयुतम् ॥ ८२ ॥

टीका—धनिष्ठाइति ।धनिष्ठादि रेवतीतांई ये कार्य न कीजे तृणकाष्ठादिसंचय, दक्षिणयात्रा, गृहछावनी, प्रेतदाह शय्याका वितरण ॥ ७७ ॥ इति पंचकम् ॥ तैलइति। रविवारको तैल लगाये तो तापहोय, चंद्रको शोभा, मंगलको मृत्यु, बुधको धन, गुरुको हानि, शुक्रको दुःख, शनिको सुख होय ॥७८॥ अरु जो अवश्य लगाना होय तो रविको पुष्प, शनिको दूर्वा, मंगलको मृत्तिका, शुक्रको गोबरसंयुक्त लगावे तो दोष न होइ ॥ ७९ ॥इतितैलाभ्यंगः॥ हस्तेति । ह. चि. स्वा. रो. मृ. म.पुष्य.ध. श्र. उ.मू.अनु. अ. रे. इन नक्षत्रोंमें अरु वृ.

क मृ कु इन लग्नोंमें वधूप्रवेश कीजै ॥ ८० ॥ इतिवधूप्रवेशः ॥
अथ रोगी स्नानमें वर्जित भाग्य कहतेहैं, आश्लेषेति । आश्ले
म स्वा रो पुन रे तीनों उत्तरा इन नक्षत्रोंमें रोगी स्नान न
करे अरु४।९।१४।ये तिथी मेष क.तु मकर ये लग्न, रवि,
मंगल ये वार ६।८।१२। ये चन्द्रमामें रोगिस्नान कराइये
अरु ब्राह्मणभोजनइत्यादि शुभहै८१।८२।इतिरोगिस्नानम्॥

आनंदःकालदण्डश्चधूम्राक्षश्चप्रजापतिः ॥ सौम्योध्वांक्षोध्वजश्चापिश्रीवत्सोवज्रमुद्गरो ॥ ८३ ॥ छत्रमित्रमानसाख्यपद्माख्यलुंबकस्तथा ॥ उत्पातमृत्युकाणाश्चसिद्धिश्चाथशुभोऽमृतः ॥ ८४ ॥ मुशलगदमातंगराक्षसाश्चचरःस्थिर ॥ वर्धमानश्चविज्ञेयाअष्टाविंशातिरित्यपि ॥ ८५ ॥ फलतुनामसदृशयोगादैवज्ञभाषिताः ॥ अश्विनीरविवारेचयोगोह्यानंदसंज्ञक ॥ ८६ ॥ मृगशीर्षेशीतरश्मि श्लेषायांक्षितिनंदन. ॥ बुधेहस्तोनुराधाचदेवराजपुरोहिते ॥ ८७ ॥ भार्गवेचोत्त

राषाढाश्विनौशतभिषायदा ॥ तदानंदाख्य

योगःस्यात्कालदंडादयःक्रमात् ॥ ८८ ॥

सू.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ	आ.	पु	पु	श्ले	म.	पू.	उ	ह.	चि.
चं.	मृ	आ.	पु.	पु.	श्ले	म.	पू	उ	ह.	चि.	स्वा	वि	अनु	ज्ये.
मं.	अ.	म	पू	उ	ह.	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये.	मू.	पू.	उ	अ.
बु	ह	चि	स्वा	वि	अनु.	ज्ये	मू.	पू.	उ	अ.	श्र.	ध.	श	पू.
गु	अ	ज्ये	मू	पू.	उ.	अ	श्र	ध	श	पू	उ.	रे.	अ	भ.
शु	उ	अ.	श्र	ध	श	पू	उ	रे.	अ.	भ	कृ	रो	मृ	आ.
श.	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो.	मृ.	आ.	पु	पु.	आ	म.
योग	आ	का	धू	म	सौ	ध्वां	ध्व	श्री	व	मु	छ	मि	मा	प.
नाम	नद.	ड.	स्र.	ला.	म्य.	क्ष.	ज.	वत्स	ज्र.	द्गर	म.	त्र	नस	ख

सू	स्वा	वि.	अनु	ज्ये	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
चं.	मू	पू	उ	अ.	श्र.	ध.	श	पू.	उ.	रे.	अ.	भ	कृ	रो.
मं.	अ.	ध.	श	पू.	उ	रे.	अ.	भ	कृ.	रो	मृ	आ.	पु.	पु.
बु	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ	रो	मृ	आ.	पु.	पु	श्ले.	म	पू	उ.
गु.	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ.	ह	चि	स्वा	वि.
शु	पु.	पु	आ	म	पू	उ.	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये.	मू	पू
श	पू.	उ.	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये.	मू.	पू	उ.	अ.	श्र	ध.
धा र	लुं बक	उत्पा त	मृ त्यु	का ण	सि द्धि	शु भ	अ मृत	मुस ल	ग द	मा तंग	राक्ष स	चर	स्थि र	वर्ध मा

टीका–आनंदइति। दैवज्ञ जो हैं ज्योतिषी सो इन योग-

नके फल नामानुसार कहते हैं, अश्विनी रविको आनंदयोग

कहिये, इसीभांति क्रकचादि जानिये ॥ ८८ ॥इति आनंदादियोगाः ।

हस्त सूर्येमृग सोमेवारेभौमेतथाऽश्विनी ॥
बुधेमैत्रगुरौपुष्यंरेवतीभृगुनंदने ॥ ८९ ॥
रोहिणीरविपुत्रेचसर्वसिद्धिप्रदायक ॥ अ
यचामृतसिद्धि स्याद्योग प्रोक्त पुरातनै ९०

टीका–अब अमृतसिद्धियोग कहते हैं हस्तइति। हस्त रविवार परै तो अमृत सिद्धि योग कहिये मृ सो अ म अ बु पु गु रे शु रो श, ॥ ८९ ॥९० ॥ इत्यमृतसिद्धियोगः ।

अथ अमृतसिद्धियोगचक्रम्.							
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
ह.	मृ.	अश्वि.	अनु.	पुष्य.	रे.	रो.	नक्ष.
अमृ.	अमृ.	अमृ.	अमृ.	अमृ.	अमृ.	अमृ.	योग

मघादित्येविशाखेंदौभौमेचार्द्रानिलेगुरौ ॥
बुधेमूलविधि-शुक्रेयमघंट-शनौकर ॥९१ ॥

टीका–मघा रविको यमघट योग कहिये, वि सोम, आ भौमको, कृ गुरु, मू बुध रो शुक्र, शनिको हस्त होय तो यमघटयोग कहिये सो शुभकार्यमें वर्जित है ॥ ९१ ॥

अथ यमघण्टयोगचक्रम्.							
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	वार
म	वि	आ.	मू.	कृ.	रो	ह	नक्ष.

नंदासूर्येचभौमेचभद्राभार्गवचंद्रयोः ॥ बु-
धेजयागुरौरिक्ताशनौपूर्णाचमृत्युदा ॥१२॥

टीका—रवि भौमको नंदा, शुक्र सोमको भद्रा, बुधको जया, गुरु रिक्ता, शनिको पूर्णा ये मृत्युयोग शुभकार्यमें वर्जित हैं ॥१२॥ इति मृत्युयोगः।

मृत्युयोगचक्रम्.

रवि भौम	शुक्र चन्द्र	बुध ०	गुरु ०	शनि ०	वार
१	२	३	४	५	तिथि
६	७	८	९	१०	
११	१२	१३	१४	३०	

तिथ्यंकेनसमायुक्तोवारांकोयदिजायते ॥
त्रयोदशांकःक्रकचोयोगःप्रोक्तःपुरातनैः १३

टीका—क्रकचयोगजो चक्रमें लिखाहै; सो समझलेना ॥१३॥ इतिक्रकचयोगः

अथक्रकचयोगचक्रम्.

सू.	च	म.	बु	बृ	शु.	श	वार
१२	११	१०	९	८	७	६	तिथि

अंधाक्षश्चिपिटाक्षश्चकाणाक्षोदिव्यलोचनः
गणयेद्रोहिणीपूर्वंसप्तवारमनुक्रमात् ॥१४॥
अंधेचलभतेशीघ्रंमंदेचैवदिनत्रयम् ॥ का
णर्क्षेमासमेकंतुसुनेत्रेनैवलभ्यते ॥ १५ ॥

टीका—अंधाक्ष इति। अब अंधाक्ष, चिपिटाक्ष, काणाक्ष

अरु सुलोचन ये चारि पांति नक्षत्र नष्टवस्तुमें विचारियें सो रोहिणी आदि सातवार गनिये

अथ अंधादिनक्षत्राणांचक्रम.							
रो.	पु	उ	वि	पू.	ध	रे.	अंध
मृ.	अश्ले	ह	अनु	उ	श.	अ.	चिपिट
आ	म	चि.	ज्ये.	अ	पू.	भ	काण
पु.	पू	स्वा	मू	अ.	उ.	कृ.	सुलो

रो अंध; मृ चिपि;आ काणाक्ष;पुन.सुलोचन,फिरि या रीतिसे समझ लीजे ॥ ९४ ॥ अंधइति। अंधनक्षत्रमें वस्तु नष्ट होय तो शीघ्र मिलै अरु जो चिपिटाक्ष मंददृष्टिवालेमें जाय तो तीन दिनमें मिलै जो काणनक्षत्रमें जाय तौ महीने भरमें मिलै अरु जो सुलोचनमें जाय तौ फिरि न आवै ॥ ९५ ॥

इति अंधादिनक्षत्रफलम् ।

पुनर्वसुमृगश्चार्द्राज्येष्ठामैत्रकरस्तथा ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढेमूलंदक्षिणचारिणः ॥ ९६ ॥ कृत्तिकारोहिणीपुष्यश्चित्राश्लेषाचरेवती ॥ शतंधनिष्ठाश्रवणोनवमध्यमचारिणः ॥ ९७ ॥ अश्विनीभरणीस्वातीविशाखाफाल्गुनीद्वयम् मघाभाद्रपदायुग्मंनवचोत्तरचारिणः ९८ ॥

टीका-पुनर्वस्विति।पु मृ आ ज्ये अनु ह. पू०षा उ० षा मू ये नक्षत्र पुर्वसे दक्षिणचारी हैं। कृ रो पु चि आश्ले

रे. श्र. ध. श्र. ये पूर्वते गमनको अर्थात् आकाशको चलते हैं अश्वि. भ. स्वा. चि. पू० फा. उ० फा. म. पू० भा. उ० भा. ये पूर्वते उत्तरचारी, हैं ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथ नक्षत्रभ्रमणचक्रम्.

पू.	मृ.	आ.	ज्ये.	अनू.	ह.	पु.	उ.	मू.	दक्षिण
कृ.	रो.	पु.	श्ले.	धनि.	रे.	श.	भ.	अ.	मध्य
अश्वि.	भ.	स्वा.	चि.	पू.	उ.	म.	पूभा.	उभा.	उत्त

भ्रमतींद्रादिशोवत्सोयामासांस्त्रिकंत्रिकम् आदौभाद्रपदंकृत्वासव्यतोदिक्चतुष्टयम् ॥ यात्राविवादसंबंधेद्वारेचगृहहर्म्ययोः ॥भूपतेर्मिलनेयुद्धेवत्सस्याभिमुखंत्यजेत् १०० ॥

टीका–पूर्वआदि चारों दिशाविषे वत्सरूपतीन तीन मास सव्यमार्ग चलके भ्रमते हैं. भा. आ. का. पूर्व में, मा. पौ. मा. दक्षिणमें, फा. चै. वै. पश्चिमें, ज्ये. आ.

पू
भा
ई　आ　का　आ
ज्ये　मा
द　वत्सचक्र　द
आ　श्रा　पौ　मा
वा　फा　नै
चै　वै
प

मा उत्तरमें, सो यात्रा विवाहसंबंध, गृहद्वार, राजामिलन,युद्ध ये कार्य भौर पीछे वत्सयोग देखकर कीजे॥९९॥१००॥

इति वत्सयोगचक्रम् ।

त्रयंयमेश्वेचाग्नौषड्विधौपंचमृगेत्रयम् ॥ए-
कमार्द्राचनक्षत्रेचत्वारिचपुनर्वसौ ॥ १ ॥
पुष्येत्रयंरसाःसर्पेमघायांचैषपंचकम् ॥ द्व-
यंद्वयंफाल्गुनयोर्द्वयंहस्तेतुपंचकम् ॥ २ ॥
चित्रास्वात्योरेकमेकंचतुष्कंचद्विदैवते ॥त्र-
यस्त्वादनुराधायांज्येष्ठायांचत्रयंस्मृतम् ३॥
मूलेरुद्राश्चतुष्कंचपूर्वापाढेतथोत्तरे ॥ त्रयं
चाभिजितःप्रोक्तंश्रवणेचत्रयंतथा ॥ ४ ॥
धनिष्ठायांचचत्वारःशतंशतभिषासुच ॥ द्व-
यद्वयभाद्रयोश्चद्वात्रिंशदपिचांत्यके ॥ ५ ॥

टीका—त्रयमिति। अ ३ भ ३ क ६ रो ५ मृ ३ आ-
१ पु ४ पु ३ आश्ले० ६ म ५ पू० फा २ उ० फा २ ह ५
चि १ स्वा १ वि ४ अनु ३ ज्ये ३ मू ११ पू० षा ४ उ० षा ४

अभि. ३ श्र. ३ ध. ४ श.१००पू०भा.२उ०भा.२रे.३२या-
गकारतारकासंयुक्तनक्षत्र उदयहोताहै ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

अथअठावीस २८ नक्षत्रतारासंख्याचक्रम्

अ.	भ	कृ	रो	मृ.	आ.	पु	पु	आ	म.	पू	उ	ह	चि
३	३	६	५	३	१	४	३	६	५	२	२	५	१
स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
१	४	३	३	११	४	४	३	३	४	१००	२	२	३२

इतिनक्षत्रतारासंख्याचक्रम्.

लग्नेष्टमेव्ययेसूर्येक्षेत्रपालस्यदूषणम् ॥ आ
काशदेव्याश्चंद्रेतुलग्नेषष्ठेष्टमेव्यये ॥ ६ ॥ द्वा-
दशेदशमेभौमेडाकिनीदूषणंस्मृतम् ॥ वन-
देव्युद्भवोदोषःसप्तमेद्वादशेबुधे ॥ ७ ॥ जामि
त्रेद्वादशेजीवेदेवदोषोनिगद्यते ॥ अस्तेव्य
येदैत्यपूज्येजलदेव्याश्चदूषणम् ॥ ८ ॥ शनै
श्चरेव्ययेचास्तेदोषःस्याद्वातवातजः ॥ जा-
मित्रेद्वादशेराहुःकुमातिज्ञातिदूषणम् ॥ ९ ॥

टीका—लग्ने इति।जो सूर्य ८।१२ होय अथवा लग्न १ में
होय तौ क्षेत्रपालको दोष जानियें. जब शरीरमें कुछ व्यथा

होई तौ क्षेत्रपालको पूजन कीजे, जो चन्द्रमा १।६।८।१२होय तो आकाशदेवीको दोष जानियें ताकी पूजा माता करै कष्ट दूर होय ॥ ६ ॥ अरु जो जन्मकालविषेमगळ १०।१२। होय तो डाकिनीदोष कहिये अरु जो बुध ७।१२ होय तो वनदेवीदोष कहिये ॥७॥ अरु जो बृहस्पति १२।७ होय तो देवदोष जानियें अरु जो शुक्र ७।१२ होय तो जलस्थदेवीदोष जानियें ॥ ८ ॥ जो शनैश्चर १२।७ होय तो आमवात दोषकरै अरु जो राहु ७।१२ होय तो कुमतीजन्य स्वभावविषे दोष उत्पत्ति होय ॥ ९ ॥

पितृदोषोभवेन्मेषेक्षुधाहानिर्विवर्णतः ॥ वृषे गगनदेव्यास्तुज्वरोद्धु स्वप्नमक्षिरुक् ॥१०॥ मिथुनेचमहामायादोषोवेलाज्वरोनिलः ॥ कर्केचशाकिनीदोषोहास्यरोदनमौनताः११ सिंहेजलेप्रेतदोषोदिवाशीतज्वरोऽरुचि ॥ ग्रहदोषश्चकन्यायांक्रोधालस्यैतथारुचिः ॥ ॥१२।क्षेत्रपालभवोदोषस्तुलेसंतानपीडनम् वृश्चिकेनागदोषश्चज्वालादेहेकण्डूदिवा१३॥

चापेदेहेभवेद्दोषोज्वरःशोकोदरव्यथा ॥
मकरे चंडिकादोषोदेहभंगोज्वरोऽनिलः ॥
१४॥ मलिनप्रेतदोषश्चकुंभेदेहस्यपीडनम्॥
मीनेचापेंगनादोषोज्वरोजंजालदर्शनम् १५
व्ययेधर्मेतृतीयेचषष्ठेपापग्रहोयदा ॥ हतो
गरेजलेशस्त्रेतस्यदोषःकुलोद्भवः ॥ १६ ॥

टीका—पित्रिति।जो मेष लग्नमें जन्महोय अरु ऐसे ग्रहपरैं तो पितृदोष जानें.क्षुधाहानि अरु कुरूप होय. जो वृषमें जन्म होय तो आकाशदेवी दोष करे,ज्वर होई, भयानक स्वप्न देखे, नेत्र पीडा पावे ॥ १० ॥ मिथुनमें होय तो महामाया दोषकरे साम-यिक ज्वर आवे अनिल भय होय. जो कर्कमें होय तो शाकिनी दोषते रोवै. हँसै. कबहूं मूक हो रहे ॥ ११ ॥ जो सिंहमें होय तो प्रेत बाधा करे. दिलमें ज्वर आवे. जो कन्यामें होय तो दुष्ट ग्रहदोषसे शारीरकै बाधा, क्रोध, आलस्य, अरुचि होय ॥ १२ ॥ जो तुलामें जन्म होय तो क्षेत्रपाल दोष करै संतानकी पीडा करे. जो वृश्चिकमें होय तो सर्पते भय. देहपीडा ज्वरको उपजावे. कुबुद्धि होय॥ १३॥ धनमें होय तो देहदोष

ज्वर शोक पेटपीडा शूल होय अरु जो मकरलग्नमें जन्म होवै तो चंडिकाको दोष होय अगम्यगम होय अरु ज्वर होय ॥ १४ ॥ कुंभमें होय तो प्रेतदोष करै. मलिन रहै देहपीडा हो मीनमें जन्म होय तो योगिनीदोष महाज्वर करै ॥ १५ ॥ जो १।२।९।३।६ इनमें पापग्रह होय तो विष भक्ष शस्त्रते मृत्यु पावै वा समोभी ऐसी घातकरे ॥ १६ ॥

शनौजलेकुजेशस्त्रेयुतेसूर्येस्ववंशभुज ॥ राहोविक्रमतोनष्टःशांतिपूजाद्विजार्चनैः१७॥ स्वक्षेत्रेगोत्रदोषोपिपरक्षेत्रेपरोद्भवः ॥ शत्रुक्षेत्रेशत्रुदोषोऽमित्रेस्वजनसंभवः ॥ १८॥

टीका–शनाविति । जो इन स्थानविषे शनि होय तो जलमें डूबै अरु मंगल होय तो हथियारसे मरै.अरु सूर्य होय तो निजवंशवालेके हाथसों मरै वा विषसों अरु राहु होय तो कुत्सितप्रकृति उपजे चोर अरु कुमार्गगामी होय जो ऐसे ग्रह होयँ तो ब्राह्मणकी पूजा करे तो संतान भली होय अरु जो स्वक्षेत्री ग्रह परे तो गोत्रते दोष होय अरु जो परक्षेत्री दूषित ग्रह परे तो परमनुष्यजनित पीडा होय जो शत्रुक्षेत्र होय

तो शत्रुते क्लेश पावै. मित्र क्षेत्री होय तो मित्रनते क्लेश पावै. ॥ १७ ॥ १८ ॥ इतिक्षेत्रदोषः ।

अथ नक्षत्रतिथिवारशुभाशुभयोगचक्रम्.												
वार	नक्षत्र						तिथि				शुभाशुभयोग
र.	अ.	ह.	मू	पु	उ.३	ध	८	०	०	०	शुभ
र.	वि.	भ.	ज्ये	श्र	म	०	१४	१२	७	०	अशुभ
चं	पु	श्र	श्र	रो	मृ	०	९	१०	०	०	शुभ
च.	चि.	वि	पू षा	उ षा	०	०	११	६	१२	०	अशुभ
मं.	मू	श्र	आ.	मृ.	उ भा	०	८	३	७	१३	शुभ
मं	श.	आ.	ध.	पू.	म.	उ.षा उ भा	२	१०	०	०	अशुभ
बु.	अ.	पु.	कृ.	रो.	मृ.	०	१२	२	७	०	शुभ
बु	मू.	श्र	रे.	श्र	मृ.	०	३	९	१	०	अशुभ
बृ	रे	अ	पु.	पु	०	०	१०	५	१५	०	शुभ
बृ	श	आ	कृ	उ	रो	मृ	८	६	९	०	अशुभ
शु	चि.	उ फा	रे	श्र.	पु.	०	११	६	१	१३	शुभ
शु	रो.	पु.	ज्ये.	आ	म.	०	२	७	०	०	अशुभ
श.	रो.	स्वा	श्र.	पू फा	म	०	९	४	१३	०	शुभ
श	ह.	उ षा	चि	उ फा	रे	०	६	७	०	०	अशुभ

आदित्येचाश्विनीहस्तमूलंपुष्योत्तरात्रयम् सिद्धियोगोधनिष्ठाचतिथिरष्टमीतथा ॥ ॥ १९ ॥ सूर्येविशाखाभरणीज्येष्ठामैत्रंम-घातथा ॥ चतुर्दशीद्वादशीचविरुद्धासप्तमी

तिथि ॥ २० ॥ सोमेपुष्यानुराधाचश्रवणो रोहिणीमृगः ॥ नवमीदशमीचापिसिद्धियोगा प्रकीर्तिता ॥ २१ ॥चन्द्रेचित्राविशाखा चतथापाढाद्वयंबुधे ॥एकादशीतथापष्ठीवर्जनीयात्रयोदशी ॥ २२ ॥ भौमेमूलाश्विनीसर्पेमृगश्चोत्तरभाद्रपाद् ॥ सिद्धाष्टमीतृतीयाचसप्तमीचत्रयोदशी ॥ २३ ॥ निंद्याशतभिषाद्राचधनिष्ठापूर्वभाद्रपाद् ॥ मघाचोत्तरषाढेच द्वितीयादशमीकुजे ॥२४॥ बुधानुराधापुष्येचकृत्तिकारोहिणीमृग ॥ द्वादशीसिद्धियोगाश्चद्वितीयासप्तमीतिथि ॥ ॥ २५ ॥ बुधेमूलंधनिष्ठाचरेवतीचाश्विनी मृग ॥ तृतीयांनवमींचापिवर्जयेत्प्रतिपत्तिथिम् ॥ २६ ॥ गुरौचदशमीपंचपौर्णमासी विशेषत ॥ पौष्णाश्विन्यनुराधाचसिद्धिः पुष्य पुनर्वसुः ॥ २७ ॥ जीवेशतभिषाद्राच

कृत्तिकोत्तरफाल्गुनी ॥ विधिर्मृगोऽष्टमीष-
ष्ठीचतुर्थीचविवर्जिताः॥ २८ ॥ शुक्रेचित्रा-
र्यमापूषाश्रवणश्चपुनर्वसुः ॥ सिद्धाचैकाद-
शीषष्ठीप्रतिपच्चत्रयोदशी ॥ २९ ॥ भार्गवे
रोहिणीपुष्योज्येष्ठाऽश्लेषामघातथा ॥ द्वि-
तीयासप्तमीचापिवर्जनीयासदाबुधैः ॥३०॥
शनौचरोहिणीस्वातीश्रवणःपूर्वफाल्गुनी ॥
मघाचनवमीसिद्धाचतुर्थीचत्रयोदशी ३१॥
शनौहस्तोत्तराषाढाचित्राचोत्तरफाल्गुनी ॥
रेवतीचसदावर्ज्यातिथिःषष्ठीचसप्तमी॥३२॥

टीका–अष्टमी रविको अ. ह. मू. पुष्य उ. ३ धनिष्ठा होय तो सिद्धि योग कहिये ॥ १९ ॥ जो रवि १४ । ७ । १२ को विशा. भर. ज्ये. अनु. मघा होय तो कुयोग कहिये ॥ ॥ २० ॥ जो सोम९।१० को पुष्य अनु. श्रव. रो. मृग. होय तो सिद्धियोग कहिये॥ जो सोम११।६।१३को चित्रा,विशा. पूर्वाषा. उत्तराषा. होय तो कुयोग कहिये ॥ २१ ॥ २२ ॥ जो भौम ८।३।७।१२को मूल, अ. आश्ले.मृ. ह.शा.

होय तो सिद्धयोग कहिये ॥ २३ ॥ जो भौम २। १० को श आ ध पू भा मघा,इपा होय तो कुयोगकहिये॥२४॥ जो बुध १२। २।७वा अ पुष्य कृ रो मृ होय तो सिद्धियोग कहिये ॥ २५ ॥ जो बुध३।९।१।वा मूल,घ रे. श मृ होय तो कुयोग कहिये ॥ २६ ॥ जो गुरु ५। १०।१५वा अ रे अनु पु.पुष्य होयतो सिद्धियोग कहिये ॥ २७ ॥ जो गुरु८।४।९ घा श भा कृ उभा रो मृगहोय तो कुयोग कहिये ॥२८॥जो शुक्र११।६।१।१३षा चि ह भा. रे.श पुनर्वसु ये सिद्धियोग कहिये ॥२९॥ जोशुक्र२।७को रो.पु आश्ले म ज्येष्ठा होय तो कुयोग कहिये ॥ ३० ॥ जो शनि९।४।१३षा रो स्वा श पू फा म होय तो सिद्धियोगकहिये,जो शनि६।७वा ह व पा चित्रा उसरा रे होय तोकुयोग कहिये ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ इति वारनक्षत्रशुभाशुभयोगाः।

चरंचलंस्मृतंस्वातीपुनर्वसुश्रुतित्रयम्॥ क्रूर मुग्रंमघापूर्वात्रितयंभरणीतथा ॥३३ ॥ ध्रुवंस्थिरंविनिर्दिष्टंरोहिणीचोत्तरात्रयम् ॥ तीक्ष्णदारुणमाश्लेषाज्येष्ठार्द्रामूलमेवच ३४

लघुक्षिप्रंस्मृतंपुष्योहस्तोश्विन्यभजित्स्मृ-
तम् ॥ मृदुमैत्रंस्मृतंचित्राऽनुराधारेवतीमृगः
॥ ३५ ॥ मिश्रंसाधारणंप्रोक्तंविशाखाकृ-
त्तिकातथा ॥ नक्षत्रेष्वेषुकर्माणिनामतुल्या
निकारयेत् ॥ ३६ ॥

टीका—चरमिति. अब अट्ठाईस नक्षत्रनकी सात संज्ञा कहिये।सो भिन्न भिन्न कहते हैं. सो प्रथम स्वाती.पु. श्र. ध. श.ये नक्षत्र चरसंज्ञक हैं.ये चरकार्यको शुभ हैं. अरु पूर्वात्रय म. भ. ये क्रूरसंज्ञक नक्षत्रक्रूरकार्यमेंलीजिये. अरु रोहिणी उत्तरात्रय ये ध्रुवसंज्ञकन क्षत्र स्थिरकार्यमें लीजिये. अरु

नक्षत्राणां सप्तधासंज्ञाचक्रम्.

स्वा	पुन	श्र.	ध.	श.	चर चल.
म	पू	पू	पू.	भ.	क्रूर उग्र
रो	उ.	उ	उ	०	ध्रुव स्थिर
श्ले	ज्ये	आ	मू	०	तीक्ष्ण दारुण
ह	पुष्य	अ	अभि	०	लघु क्षिप्र
चि.	अनु.	मृ.	रे.	०	मृदु मैत्र
वि.	कृ.	०	०	०	मिश्र साधारण

आश्ले. ज्ये. आ. मूल ये तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तीक्ष्णकार्यविषे ग्राह्य हैं. ह.पु.अभि. ये लघुक्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र शीघ्र स्वल्प कार्यमें ग्राह्य हैं. अरु चित्रा. अनु. मृग. रेवती ये मृदु मैत्रसंज्ञक

नक्षत्र कोमल मैत्री कार्यको शुभ है पि क ये मिश्र साधारण नक्षत्र सामान्य कार्यनको शुभ हैं ये सबोंका सभाफल नामा-नुसार जानियें ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ इति नक्षत्रसभा ।

शनिचक्रनराकारंलिखेद्यत्रशनिर्भवेत् ॥ तन्नक्षत्रमुखेदत्वायावन्नामनरस्यच ॥ ३७ ॥ तावद्विचारयेत्तन्नक्षेयतत्रशुभाशुभम् ॥ एकमुखेचनक्षत्रचत्वारिदक्षिणेकरे ॥ ३८ ॥ त्रयत्रयपादयोश्चवामहस्तेचतुष्टयम्॥लला टेद्वित्रयनेत्रेहृदिपचगुदेद्वयम्॥ ३९ ॥ एकैकंदक्षिणेकुक्षौनक्षत्राणिक्रमेणच ॥ हानिर्मुखेदक्षहस्तेलाभोवामेचरोगवा ॥ ४० ॥ हृदि श्रीमेस्तकेराज्यंपादेपर्यटनंफलम् ॥ नेत्रेसुखंगुदेमृत्युःकुक्षौशोकंविचिंतयत्॥४१॥ जपादिपूजनार्चामि कल्याण जायतेसदा ॥ अन्यान्येषंविचार्याणिवाहनादिषहूनिच ४२

टीका—अब शनिचक्रको विचार कहते हैं शनिरिति।

अथनराकारे शनिचक्रम्।



शनिचक्रनराकारलिखे जा नक्षत्रको शनिहोयतिस्सेजन्म नक्षत्रलों ठानियें. फिर शनि-नक्षत्रादिदे अंगप्रति सबनक्षत्र स्थापित कीजे जिसअंगमें जन्मनक्षत्र परे तहांका फल जानिये. एक नक्षत्र मुखमें धरिये, ४ दहिने हाथमें, ३ दक्षिण पाय, ३ वामपाय, ४ वामहाथ, २ ललाट, ३ नेत्र, ५ हृदय, २ गुदा, १ दक्षिणकोणमें ये क्रमपूर्वक राखिये जो मुखमें जन्मनक्षत्र परे तो हानि करे. वामहस्त रोग, हृदय लक्ष्मी, ललाटे राजपद, दक्षिणहस्ते लाभ, चरणनमें भ्रमावे, नेत्रमें सुख, गुदामें मृत्यु, कांखमें परे तो शोक करे, तिसनिमित्त जप दान पूजा ब्राह्मण भोजनादिसे कल्याणसुख होय अरु अनेक वाहनादि विचारकोभी फल होतेहैं सो अन्य ग्रंथनविषे कह्योहै ॥ ३७ ॥ ॥३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ इति शनिफलचक्रम्।

मेषेशनौगुर्जरेषुप्रभासेचार्बुदेवृषे ॥ मिथुने जायतेपीडास्थलेमूलस्थलेषुच ॥ ४३ ॥

कर्केकाश्मीरकेवाधाशक्रप्रस्थेमृगाधिपे । शनैश्चरेचकन्यायांमालवाख्येचसंक्षयम् । ॥ ४४ ॥ तुलावृश्चिकचापेषुयदियातिशनैश्चर ॥ नवर्षेतितदामेघा पृथ्वीदुर्भिक्षपीडिता ॥ ४५ ॥ सुभिक्षंमकरेकुंभेजायतेनइधाशनौ ॥ मीनेचसर्वलोकानांदुर्भिक्षंतुक्षयो भवेत् ॥ ४६ ॥

टीका—मेषइति। मेषको शनि होय तो गुर्जरदेशमें पीडा करे.वृषको प्रभासक्षेत्र अरु अर्बुददेशमें मिथुनको मूलस्थली देशमें कर्कको काश्मीर देशविषे सिंहको इन्द्रप्रस्थ देशमें कन्याको मालवा देशमें पीडा करे तुला वृश्चिक धनको होय तो मेघ थोरो वर्षे पृथ्वी दुर्भिक्षते दुःखित होय कुंभ मकरको होय तो मनका सुकाल करे मीनको होय तो सर्वत्र काल परे. दुर्भिक्ष ते पीडा होय ॥४३॥४४॥४५॥४६॥

इति शनिराशिफलम् ।

यत्रमासेरवेर्वारापंचसंततम् ॥ दुर्भिक्षंछत्रभंगंचतदास्त्वेचमहद्भयम् ॥ ४७ ॥सो-

मस्यपंचवाराश्चयत्रमासेभवंतिहि ॥ धनधा-
न्यसमृद्धिश्चसुखीभवतिमेदिनी ॥ ४८ ॥
यत्रमासेमहीसूनोजायंतेपंचवासराः ॥रक्ते-
नपूरितापृथ्वीछत्रभंगस्तदाभवेत् ॥ ४९ ॥
बुधस्यपंचवाराश्चजायंतेचनिरंतरम् ॥प्रजा
श्चसुखसंपन्नाःसुभिक्षंचप्रजायते ॥ ५० ॥
यत्रमासेपंचवाराजायंतेचबृहस्पतेः ॥ वि
ग्रहःपश्चिमेदेशेपीडायुद्धंचजायते ॥ ५१ ॥
शुक्रस्यपंचवाराश्चयत्रमासेनिरंतरम् ॥ प्र-
जावृद्धिःसुभिक्षंचसुखंतत्रप्रवर्तते ॥ ५२ ॥
शनिवारायदापंचपातालेकंपतेफणी ॥ ई-
शानदेशभंगश्चवह्निदाहोमहर्घता ॥ ५३ ॥

टीका—यत्रेति। जो महीनेमें पांचरविवार परें तो अन्न महंगो.छत्रभंग तथा महाभय होय ॥ ४७ ॥ सोमस्येति। जो महीने में पांच सोमवार परें तो धनधान्यकी वृद्धि अरु सर्वत्र

सो पृथ्वी रुधिर कर पूरित तथा छत्रभंग होय ॥ ४९ ॥
बुध इति। जो मासमें पांच बुधवार परें तो प्रजा सुखी होय सु-
भिक्ष रहै ॥ ५० ॥ यत्रेति। जो मासमें पांच गुरुवार परें तो
पश्चिममें विग्रह पीडा युद्ध होई ॥ ५१ ॥ शुक्रस्येति। जो
महीने में पांच शुक्रवार परें तो प्रजा बढै सुभिक्ष अरु सुख
होय ॥ ५२ ॥ शनाविति। जौनमासमें पांच शनैश्चर परें तो
पातालमें शेष कंपै ईशानदेशभंग अग्निकोप अरु अन्न
महँगो होय ॥ ५३ ॥ इति मासे पंचवारफलम्.

अंगुल्योर्विंशतिःसूर्येशंकु सोमेचषोडश ॥
कुजेपंचदशांगुल्योबुधवारेचतुर्दश ॥ ५४ ॥
त्रयोदशगुरोवारेद्वादशार्कजशुक्रयो ॥ शं-
कुमूलेयदाछायामध्याह्नेचप्रजायते ॥५५॥
तदाचाभिजिदाख्यावाघटिकैकास्मृताबुधै
॥अत्रकार्याणिसर्वाणिसिद्धियांतिकृतानिच
॥ ५६ ॥ जातोभिजिविराजास्याद्व्यापारे
सिद्धिरुत्तमा ॥ महाक्रूरवियोगेनसर्वमंग
लदायकः ॥ ५७ ॥

टीका–अंगुल्यइति । रविवारको वीस अंगुल शीक ठाढी कीजे. सोमको १६ मं. १५बु. १४ बृ. १३शु. १२ शनिको १२ जब दोय प्रहरके अंतमें सीककी छाया सीकके मूलमें आवे तब अभिजिव् मुहूर्त एक घटीको होता है. सो सर्वकार्यव्यापारमें सिद्धिप्रद होताहै. अरु इस मुहूर्तपर जन्म होय तो राजा होय ॥५४॥५५॥५६॥५७॥

अथाभिजिवमुहूर्तचक्रम्.

वार.	र.	चं.	मं.	बु	गु	शु.	श.
अंगु.	२०	१६	१५	१४	१३	१२	१२

इत्यभिजिन्मुहूर्तक्रियाफलम् ।

अर्थवृद्धिःफाल्गुनेस्याच्चैत्रेचधनसंपदः ॥ वैशाखेविग्रहोराज्ञांज्येष्ठेवृष्टिश्चभूयसी ॥५८॥ आषाढेचोदितेशुक्रेजलंभवतिदुर्लभम् ॥ श्रावणेतुपशोःपीडाभाद्रेधान्यसमृद्धये ॥५९॥ आश्विनेसर्वसंपत्तिःशुभंकार्तिकमार्गयोः ॥ पौषमाघेछत्रभंगोयद्युदेतिभृगोःसुतः ॥६०॥

टीका–अर्थेति।जो शुक्रको उदय फाल्गुनमें होय तो अन्न सस्ता होय. चैत्रको होय तो मेघ नीके वर्षे और चौपाएनको सुख होय. धनसंपदा अधिक होय. वैशाखमें उदय होय तो

राजनमें विग्रह करे. ज्येष्ठमें उदय होय तो वर्षा विशेष करे ५८ आषाढइति । आषाढमें होय तो मन्नामकरे. श्रावणमें होय तो परामकोपीडा करे. भादोंमें होयतो अन्नबहुत उपजावे ॥ ५९ ॥ आश्विन इति । जो आश्विनमें होय तो सर्व संपत्ति करे. जो कार्तिक तथा अगहनमें होय तो शुभहै जो पौष माघमें उदय होय तो छत्रभंग करे ॥ ६० ॥ इतिशुक्रोदयफलम् ।

पूर्वेवायुर्होलिकायाः प्रजाभूपालयो सुखम्॥
पलायनंचदुर्भिक्षदक्षिणेजायतेध्रुवम् ॥६१॥
पश्चिमेतृणसंपत्तिरुत्तरेधान्यसंभवः ॥ यदि
खेचशिखावृद्धिर्दुर्गराज्ञोपिसंक्षय ॥ ६२ ॥

टीका—पूर्वइति । जो होलिको पूर्ववायु चले तो राजा प्रजाको सुख करे. अरु दक्षिणपौन चले तो देशभागे दुर्भिक्षकरे. पछवाय चले तो तृणसंपत्ति बढे उत्तर पौन चले तो धान्य वृद्धि होय जो होलीकी धुवां आकाशको सूधा चलेतो राजगढ छूट जाय ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इति होलिकाधूमफलम् ।

एकादश्यांकार्तिकस्यन्नदिमेघःसमीक्ष्यते ।
आषाढेचतथावृष्टिर्जायतेनात्रसंशयः ॥६३॥
मार्गशीर्षस्यचाष्टम्यांदृश्यतेविद्युतोयदा ॥

तदावृष्टिःश्रावणेचमासिसंजायतेध्रुवम् ॥ ६४ ॥
कृष्णपक्षेदशम्यांचवृष्टिःपौषेचजायते ॥ त-
दाभाद्रपदेमासेवृष्टिर्भवतिभूयसी ॥ ६५ ॥
वृष्टिश्चेन्माघसप्तम्यांज्येष्ठेमूलेचवर्षते ॥ न-
क्षत्रेवारिवाहश्चतदान्नैःपूर्यते मही ॥ ६६ ॥
पंचम्यांप्रथमेपक्षे श्रावणेचप्रवर्षते ॥ पयो-
वाहस्तदाधान्यैर्धराढ्याभाजलैरपि ६७ ॥

टीका—एकादश्यामिति। जो कार्तिक एकादशीको मेघ छाया करे तो आषाढमें वर्षा हो ॥ ६३ ॥ मार्गशीर्षस्येति मार्गशीर्षके अष्टमीको विद्युत् देखे तो श्रावणमें उत्तम वृष्टि होय ॥ ६४ ॥ कृष्णेति। जो पौषकृष्णदशमी मेघ वर्षे तो भादोंमें अधिक वर्षे ॥ ६५ ॥ वृष्टिरिति। जो माघमें सप्तमीकोवर्षे अरु ज्येष्ठमें मूल नक्षत्र वर्षे तो वर्षाके सर्व नक्षत्र उत्तम वर्षे अरु अन्न उपजे ॥ ६६ ॥ पंचम्यामिति। जो श्रावणकृष्णपंचमीमें वर्षे तो वर्षा बहुत होय ॥ ६७ ॥ इति वर्षाशकुनम्।

आषाढेपूर्णिमायांतुयन्नक्षत्रंविचारयेत् ॥ पू-
र्वाषाढेअभिक्षंचमूलेदुर्भिक्षमुच्यते ॥ उत्तरा-

पादकेश्वानांपीडाकटकसंगतिम् ॥ ६८ ॥

टीका—आषाढ इति। जो आषाढ़ पौर्णिमाको नक्षत्र होय वाको विचारिये जो पूर्वाषाढा होय तो सुभिक्ष होय मूलहोय तो दुर्भिक्ष परे. उत्तराषाढा होय तौ योद्धानको पीडा होय ॥ ६८ ॥ इत्याषाढपूर्णिमाफलम् ।

ज्येष्ठस्यप्रथमेपक्षेप्रतिपच्चयदाभवेत् ॥ रवेर्वारस्तदावायुर्वातिधूक्षांतकारक ॥ ६९ ॥ अत्यंतविग्रहोभौमेबुधेदुर्भिक्षमुच्यते ॥ अनावृष्टिःशनेर्वारेजलकापिनलभ्यते ॥ ७० ॥ सोमशुक्रसुरेज्यानांयदिवारःप्रजायते ॥ धनधान्यसुतोत्पत्तिर्गेहेगेहेमहोत्सव ॥ ७१ ॥ पौषमासस्यसंक्रांतौरविवारोयदाभवेत्॥धान्यानांत्रिगुणंमौल्यंभौमवारेचतुर्गुणम् ॥त्रिगुणशनिवारेचबुधेशुक्रेसमंभवेत् ॥ ७२ ॥ सुराचार्येप्रसोमेचमौल्यमर्धंसुनिश्चितम् ॥ क्रूरोहिलाभकृद्धान्येसौम्योहानिप्रदोभवेत् ॥ ७३ ॥ मीनसंक्रमणेसूर्येवारेवातिसमीर

ग: ॥ भौमेपीडापशूनांचदुर्भिक्षंचशनैश्वरे ॥ ७४ ॥ वृक्षपातःप्रजापीडामिथ्यासंचरते मही ॥ हिंसाकामातुरालोकायदिवृष्टिश्चतद्दिने ॥ ७५ ॥ संक्रांतौयदिमीनस्यबुधवारः प्रजायते ॥ छत्रभंगोमहामारीरोदनंभयचिंतया ॥ ७६ ॥ संक्रांतौसोमवारश्चेत्प्रजानां परमंसुखम् ॥ भानुभौमार्किवारेषुपापयुद्धं महर्घता ॥ ७७ ॥

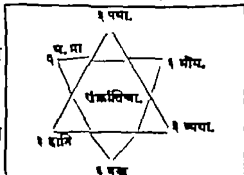
टीका—ज्येष्ठस्येति। जो ज्येष्ठ कृष्ण १ रविवार परे तो पवन अतिवेग चले.अरु वृक्ष टूटें. भौम परे तो विग्रह बढे बुध परे तो दुर्भिक्ष होय. शनि परे तो वर्षाजल न मिले .सोम शुक्र गुरु परें तो धनधान्यसंतानते सुख होय॥६९॥७०॥७१इति ज्येष्ठप्रतिपत्फलम् ॥ पौषेति। पौषसंक्रांति रविको परे तो अन्न त्रिगुण मोल बिके. भौमको चौगुने. शनिको तिगुने. गुरु सोमको आधे.शुभवार परे घाटा क्रूर परे नफा होय॥७२॥ ॥ ७३ ॥ इति पौषसंक्रांतिफलम्॥ मीनेति। जो मीनसंक्रांति रविवारको होय तो वर्षभर पवन चले. मं० होय तो पशु

पीडित होंय शनि परे दुर्भिक्ष रहे अरु ये दिन वर्षा होय तो वृक्ष गिरें. प्रजा दु:खी,मिथ्यावादी,हिंसक अरु कामातुर होय बुधमें परे तो छत्रभंग, महामारी, चिंताचिंता अरु भय उप जावे सोम परे तो सुख होय रवि, भौम शनिवारमें परे तो पापयुक्त अरु महंगाई करे ॥७४॥७५॥७६ ॥ ७७ ॥

इति मीनसंक्रांतिफलम् ।

संक्रांत्याधनक्षत्रादात्मभावोधिगण्यते ॥
त्रिकंषट्टंत्रिकंपट्टंत्रिकंषट्टंपुन पुन ॥ ७८ ॥
पंथाभोगोव्यथावस्त्रंहानिश्चविपुलंधनम् ॥
षट्भागेफलश्रेष्ठंमासेमासेविचारयेत्॥७९॥

टीका-संक्रांत्येति । संक्रांतिसमयके नक्षत्रते २७ नाम नक्षत्रतांई गनिये जो तीनतांई होय तोपथ चलावे नव तांई सुख भोग १२ लौं व्यथा १८ लौं वस्त्रसुख



२१ लौंहानि २७लौं विपुलधन तथा भोगमिले. याप्रकार मास मास विचारिये॥ ७८॥ ७९॥ इति संक्रांतिदिननक्षत्रफलम् ।

राशिचक्रंलिखित्वादौमेषसंक्रांतिभादिकम्
अष्टाविंशतिकंतत्रालिखेन्नक्षत्रसंकुले ॥८०॥
सिंधौद्वयंद्वयंदद्यादन्यत्रैकैकमेवच॥ चत्वा
रःसागरास्तत्रसंधयश्चाष्टसंख्यया ॥ ८१ ॥
शृंगाणितत्रचत्वारितटान्यष्टौस्मृतानिच ॥
रोहिणीपतितायत्रज्ञेयंतत्रशुभाशुभम् ८२॥
जाताजलप्रदस्येषाचंद्रस्यपरमाप्रिया ॥समु
द्रेतिमहावृष्टिस्तटेवृष्टिश्चशोभना॥पर्वतेबिंदु
मात्राचखंडवृष्टिश्चसंधिषु ॥ ८३ ॥

टीका—अब वर्षानिर्णयविषे मुख्य विचार. प्रथमरोहिणीपतनको कहिये. राशीति । पहिले द्वादशकोठा कुंडलीचक्करी रोहिणीचक्रमें गर्भित कीजे तो रोहिणीचक्रमें २८ नक्षत्र राखिये. द्वि द्वि २ समुद्रमें. एक एक १ शृंगनमें. एक एक १ नक्षत्र संधिनमें. अरु एक एक १ नक्षत्र तटनमें धरिये

यहां मेषकी संक्रांति जौन नक्षत्रमें होय तिसनक्षत्रमें धरिये जो रोहिणी समुद्रमें परे तो वर्षा अधिक होय शृंगनमें परे तो वर्षा थोरि होय संधिनमें परे तो कभी वर्षे कभी न वर्षे तटमें रोहिणी परे तो शोभनवृष्टि होय अश्विनीके स्थानमें संक्रांति दिन नक्षत्र धरिये ॥८०।८१।८२।८३॥ इतिरोहिणीनिर्णय।

अथरोहिणीचक्रं

संधि शतभिष / उ.भा [illegible]	तट. रे.	सिंधु अश्विनी भरणी	तट. कृ.	संधि रोहिणी / मृ. [illegible] आ.
तट. धनिष्ठा	शृंग		शृंग	तट. पुनर्वसु.
सिंधु. अभिजित,श्रवण		२, १२, ३, १, ११, ४, १०, ५, ७, ९, ६, ८		सिंधु पुष्य,आश्लेषा.
तट.उत्तरा षा	शृं.		शृं	तट. मघा.
संधि पूर्वाषाढ मू. / [illegible]	तट. अनु.	सिंधु. स्वाती विशाखा	तट. चि	संधि पूर्वाफा. / उ.फा. [illegible] ह.

नराकारंलिखेच्चक्रंसूर्योयत्रव्यवस्थित ॥ व

नक्षत्रादिकंकृत्वात्रयंदद्यात्स्वमस्तके ॥ ८४ ॥
मुखेत्रयंस्कंधयोश्चदद्यादेकैकमेवच ॥ बाहु-
द्वयेतथैकैकंपाण्योरेकैकमेवच ॥ ८५॥ हृदि
पंचगुदेचैकंनाभौचैकंप्रदापयेत् ॥ जंघयो-
रेकमेकंचषडंकाःपादयोर्द्वयोः ॥ ८६ ॥ म-
स्तकेपट्टबंधीशान्मुखेमिष्टान्नभोजनम्॥स्कं
धेगजेंद्रगामीस्याद्बाहुस्थानेच्युतोभवेत् ॥
॥ ८७ ॥ पाणौचजायतेचौरोहृदयेपीश्वरोन
रः ॥ स्वल्पतोषीभवेन्नाभौपरदाररतोगुदे ॥
॥ ८८ ॥जंघयोःपरदेशीस्यादल्पायुश्चपदद्व
ये॥नृचक्रेसूर्यनक्षत्राज्जन्मभावोधिगण्यते ॥

टीका—नराकारमिति । अब नरचक्र कहते हैं ताको गणि-
तचक्रमें समुझिये. सूर्यते जन्मनक्षत्रतक गनिये. जिस अंगमें
जन्मनक्षत्र परे ताको फल कहिये. जो माथेविषे जन्मनक्षत्र
परे तो कुटुंबनायक होय. अरु जो मुखमें परे तो गजगामीस-
खीया होय. अरु जो भुजनमें परे तो भूमि छूटिजाय. हथा

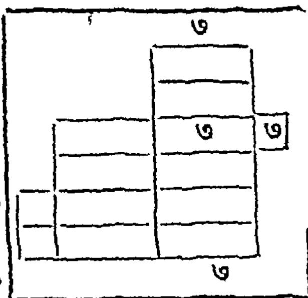


नमें परे तो चोर होय हृदयमें परे तो ठाकूर होय ऐश्वर्य अधिक पावे ईश्वरतुल्य सम्मान पावे और जो नाभिमें परेतो थोडे जोवनमें संतुष्ट रहे अरु जो गुदामें जन्मनक्षत्र परे तो परस्त्रीगामी होय जांघनमें परे तौं पर देशवास करे. अरु जो जन्मनक्षत्र चरणमें आवे तो आयुष्य थोरी पावे थोरी अवस्थामें मृत्यु होय इतिनराकारचक्रे नक्षत्राणि शुभाशुभफलम् ॥ ८४।८५।८६।८७।८८।८९॥

ग्रामनाम्नाभवेदृक्षतदाद्या सप्तमस्तके ॥ पृष्ठेसप्तहृदेसप्तपादयो सप्ततारका ॥ ९० ॥ मस्तकेचधनीमान्य पृष्ठेहानिश्चनिर्धनः॥ हृदयेसुखसंपत्ति पादेपर्यटनंफलम् ॥ ९१ ॥

टीका—ग्रामइति । जिस ग्राममें वा नगरमें बसा चाहे तिस ग्रामके नामसे नक्षत्र कर लीजे जो नक्षत्र ग्रामको पाइये ताहिके प्रथम नक्षत्रपर्यंत अट्ठाइसों जानियें तामेंसे ग्रामका

नक्षत्र आदि देके सात नक्षत्र ग्रामके माथेपर दीजे अरु ७ पीठ-पर दीजे. ७ हृदयपर दीजे. ७ पांय-नपर दीजे. तब अपने नक्षत्र देखिये. जो माथे परे तो वंश धनी होय. स-न्मान पावे. पीठमें हानि पावे, और हृदयमें परे तो सुखसंपत्ति पावे. पांयनमें परे तो परदेशनमें पर्यटन करावे ॥ १० ॥ ११ ॥



इति ग्रामवासफलम् ।

मूलेष्टौमूलवृक्षस्यघटिकाःपरिकीर्तिताः ॥ स्तंभेषुषट्घटिकास्त्वाचिचैकादशस्मृताः ॥ ॥ १२ ॥ शाखायांचनवप्रोक्ताःपत्रेप्रोक्ताश्चतुर्दश ॥ पुष्पेपंचफलेवेदाःशिखायांचत्रयंस्मृतम् ॥ १३ ॥ मूलेनाशोहिमूलस्यस्तंभेहानिर्धनक्षयः ॥ त्वचिभ्रातुर्विनाशश्चशाखायांमातृपीडनम् ॥१४॥ परिवारक्षयंपत्रेपुष्पेमंत्रीचभूपतेः । फलेराज्यंशिखायांचेदल्पजीवीचबालकः ॥ १५ ॥

टीका—अथ मूलसंज्ञक जो नक्षत्र हैं तिनके विचारवेकी रीति मूलचक्रकरि कहते हैं मूल इति। मूलवृक्ष बनायके घरी ८ मूलमें धरिये ६ स्तंभमें ११ त्वचमें ९ शाखा १४ पत्र ५ पुष्प ४ फल ३ शिखामें ये ६० घटिका क्रमसों धरिये उसका फल जो मूल ८ घरिनमें बालकका जन्म होय तो मूलनाश होय स्तंभकी ६ घरिनमें होय तो धनहानि होय, त्वचाकी ११ घरिनमें होय तो मातृका नाशहोय शाखाकी ९ घरिनमें होयतो पीडा करे. जो पत्रनकी १४ घरिनमें होय तो परिवारक्षय करे. फूलनकी पांच घरिनमें राजमंत्री होय फलनकी ४ घरिनमें जन्मे तो राजा होय अथवा वंशमें वा देशमें श्रेष्ठ होय शिखाकी ३ घरिनमें जन्मै तो आयु अल्प पावे ॥ ९२॥९३ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ इति मूलवृक्षफलम्।

मूलवृ०		फलम्
शिखा	३	अल्पायु
फल	४	नृपत्व
पुष्प	५	राजमंत्री.
पत्र	१४	परिवारक्ष.
शाखा	९	मातामा.
त्वचा	११	धातामा
स्तंभ	६	धनहानि
मूल	८	कुलनाश

रेवत्यादिमृगांतचयावत्तिष्ठतिचंद्रमाः ॥ तावच्छुक्रो

भवेदंधःसंमुखेदक्षिणेशुभः ॥९६॥ प्राक्प-
श्चादुदितःशुक्रःपंचसप्तादिनंशिशुः ॥विपरीतं
तुवृद्धत्वंतद्वद्देवगुरोरपि ॥९७॥ तृतीयेदशमे
षष्ठेप्रथमेसप्तमेशशी ॥शुक्लपक्षेद्वितीयस्तुपं-
चमेनवमेशुभः॥ ९८॥ ताराःशुभप्रदाःसर्वा-
स्त्रिपंचसप्तवर्जिताः ॥ प्रथमेदशमेषष्ठेवृती-
यैकादशेतथा ॥९९ ॥ यदिस्यात्सबलश्चंद्र-
स्तारापिक्लेशदायिनी ॥ तृतीयेपंचमेतारा
सप्तमेचनृणांभवेत् ॥ १०० ॥

टीका—रेवतीति। रेवतीते मृगशिरतांई शुक्र अंध रहते हैं सो सन्मुख अरु दहिनों शुभ है. ॥ ९६ ॥ इति शुक्रनिर्दोषः ॥ प्रागिति। जब पूर्व पश्चिममें शुक्र उदय होय तो पांच सात दिन बालक रहै. अस्तमें

अथ तारावलचक्रम्.

सू	म	रा	के	३	३	६	१०	१२	शु
ब	१	१०	६	३	७	शु	२	५	ऽशु
तारा	९	६	४	शु	२	१	८	म॒ध्य	३
शु	६	८	२	४	१०	११	शु	१	७।०
पू	२	५	७	९	११	शु	शु	भा	०
शु	१	२	३	४	५	८	९	११	१२शु.

पांच सात दिन बुध है तैसेही बृहस्पति जानिये ॥ ९७ ॥ तृतीये इति। शशी३।१०।६ शुभ हैं अरु शुक्लपक्षमें २।५।९ शुभ हैं अरु ३।५।७ त्यागिके सब तारा शुभ हैं १।१०९।३।११ जो चंद्रमा भली होय तो तारा क्षेमकर न होय अरु जो तारा ३।५।७ जो मनुष्यको होय तो चंद्रतारा क्षयकारी होय ॥ ९८॥९९॥ १००॥ इति चन्द्रताराबलफलम्।

जन्मभाद्गणयेद्धीमान्क्रमाच्चदिनभावधि ॥ नवभिस्तुहरेद्भागंशेषताराविनिर्दिशेत् ॥१॥ जन्मसपद्विपत्क्षेमप्रत्यरिःसाधकोवधः ॥मैत्रातिमैत्रंतारा स्युस्त्रिरावृत्त्यानवैवहि ॥२॥ त्रिषष्ठेदशमेभौमोराहु केतुःशनिःशुभः॥षष्ठेष्टमेद्वितीयेवाचतुर्थेदशमेबुधः॥३ ॥ द्वितीये पंचमेजीव सप्तमेनवमेशुभः ॥ विवाहशुक्रो दशमेषष्ठेस्यात्सप्तमेशुभः ॥४॥ एकादशेग्रहा सर्वेसर्वकार्येषुशोभनाः॥ ग्रहाणांगोचरं ज्ञेयफलंविशेःशुभाशुभम् ॥५॥दशम्यषविक्र

ष्णेतुपक्षेपूर्णोहिचंद्रमाः ॥ ततःपरंक्षीणचं-
द्रःशुभकार्येविवर्जितः ॥ ६ ॥

टीका—जन्मनक्षत्रते दिननक्षत्रताई गिनके नवका भाग हरिये शेष बचे सो तारा कहिये सो जन्म. संपत्ति,विपत्ति,क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र, ये संज्ञा तीन आवृत्ति विचारिके ॥ १ ॥ २ ॥ इति ताराविचारः ॥ त्रिषष्ठेति। ३।६।१०भौम, राहु, केतु, अरु शनि ये शुभ हैं. ६।८।२।४। १० बुधशुभहै.९।२।५।७ गुरु शुभ है. ११ सर्व ग्रह शुभ हैं. ॥३॥४॥५॥इति गोचरसिद्धिः।दशमीति । कृष्णपक्षकी १० दिन ताई चंद्रमा पूर्ण है सो शुभहै. फिर १०दिन ताई क्षीण है. सो शुभकार्यको वर्जितहै ॥ ६ ॥ इतिपूर्णक्षीणचंद्रमानिर्णयः।

पुनर्वसुद्वयंक्षौरेश्रुतिश्रवणत्रयम् ॥ रेवती
द्वितयंज्येष्ठामृगशीर्षंचगृह्यते ॥ ७ ॥ क्षौरेप्रा
णहरास्त्वाज्यामघामैत्रंचरोहिणी ॥ उत्तरा
कृत्तिकावाराभानुभौमशनैश्चराः ॥८॥ रिक्ता
षष्ठयष्टमीज्ञेयाक्षौरंचंद्रक्षयोनिशि ॥ संध्या
विष्टिश्चगंडांतेभोजनांतेचगोग्रहे ॥ ९ ॥

अथ क्षौरकर्ममुहूर्त						
पु.	पु	श्र	ध	ह	चि	स्वा.
रे.	अश्वि	ज्ये	मृ.	श	छ	च.
बु.	चं	शु	१	२	३	५
७	१०	११	१२	१३	ति	ति

टीका—पुनर्वस्विति उ-त्तरा पु पु श्र ध ह चि स्वा रे अ ज्ये मृ ये प्राय हैं अरु, जो प्राणहर्ता है तिन्हें त्यागिये म भ रो म उ ३ क अरु, भौम शनि रवि ये वार ४।६।८।९।१४ ये तिथि रात्रि अरु सन्ध्या ये समय अरु संक्रांति, मूल भद्रा भोजन करके गोशाल ये वर्ज्य हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ इति नित्यक्षौरनिर्णय ।

रेवतीयुगलेपुष्येरोहिण्यांमृगमैत्रयो ॥ श्रवणोत्तरशक्रेषुराज्ञांस्यादभिषेचनम् ॥१०॥

टीका—रे अ पु रो मृ अनु श्र उ ज्येष्ठा इन नक्षत्रमें राज्याभिषेक कीजे ॥ १० ॥ इति राज्याभिषेक ।

रेवतीयुगलज्येष्ठामैत्रहस्तत्रयंमृगः ॥ पुनर्वसुश्रविज्ञेयोगणस्थिरयंमुखोद्भवेः ॥ ११ ॥
वृक्षारोपणवाणिज्यसर्वसिद्धिश्चकारयेत् ॥
वाहनानिचयंत्राणिगमनञ्चविधीयते ॥१२॥
पूर्वात्रयंमघाश्लेषाविशाखाकृत्तिकायमः॥ मू

ऊंचाधोमुखोज्ञेयोनवकोयंगणोबुधैः ॥ १३ ॥
भूकार्यंसुप्रकार्यंचखननंविवरस्यच ॥ ऊर्ध्वं
चाधोमुखंयच्चतत्कार्यंकारयेद्बुधः ॥ १४ ॥
उत्तरात्रितयंपुष्योरोहिण्यार्द्राश्रुतित्रयं॥ ऊ
र्ध्ववक्त्रोगणोज्ञेयोनक्षत्राणांमनीषिभिः १५॥
प्रासादच्छत्रगेहानिप्राकारध्वजतोरणम् ॥
नानाभिषेकमखंचकुर्यादूर्ध्वमुखेगणे १६॥

टीका--रेवतीति। रे. अ. ज्ये. अनु. ह. चि. स्वा. मृ. पुन. इन तिर्यङ्मुख नक्षत्रनमें ये कार्य कीजे वृक्षारोपण. वाणिज्य

अथ तिर्यङ्मुखाधोमुखऊर्ध्वमुखचक्रम्.									
रे	अश्वि	ज्ये	अनु	ह	चि	स्वा	मृ	पुन	तिर्य
पु	पू	पू	म.	श्ले	वि	कृ	भ	मू	अधो.
उ	उ.	उ	पु	रो.	आ	श्र	ध	श	ऊर्ध्व

वाहन. यंत्र. रहाटादि अरु गमन ये शुभ हैं ॥ ११ ॥ १२॥
पूर्वेइति। पूर्वात्रयम्. आश्ले. वि. कृ. भ. मू. इनअधोमुखनक्षत्रनमेंये
कार्य कीजे. भूमिग्रामादि कार्य. वप्र संवातादि खनन कूपादि
इतने कार्य शुभ हैं ॥ १३॥ १४ ॥ उत्तरा इति। उत्तरात्रय.
पुष्य. रो. आ. श्र. ध. श.. इन ऊर्ध्वमुख नक्षत्रनमें ये काम

टीका–पुनर्वस्विति उ- श्रा पु पु श्र ध ह चि स्वा रे अ ज्ये मृ ये मास हैं अरु, जो माणहर्ता है तिन्हें त्यागिये प अ रो म उ ३ क अरु, भौम शनि रवि ये वार ४। ६। ८। ९। १४ये तिथि रात्रि अरु सन्ध्या ये समय अरु संक्रांत, मूल मघा भोजन करके मोराल ये वर्ज्य हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ इति नित्यक्षौरनिर्णयः।

अथ क्षौरकर्ममुहूर्त						
पु.	पु	श्र	ध	ह	चि	स्वा.
रे.	अश्वि	ज्ये	मृ.	श	श.	च.
बु	शु	बृ.	१	२	३	५
७	२	११	१२	१३	ति	चि

रेवतीयुगलेपुष्येरोहिण्यांमृगमैत्रयोः ॥ श्रवणोत्तरशक्रेषुराज्ञांस्यादभिषेचनम् ॥१०॥

टीका–रे अ पु रो मृ अनु श्र उ ज्येष्ठा इन नक्षत्रमें राज्याभिषेक कीजे ॥ १० ॥ इति राज्याभिषेकः।

रेवतीयुगलंज्येष्ठामैत्रंहस्तत्रयंमृग ॥ पुनर्वसुश्रविज्ञेयोगणस्त्रियंरूसुसोम्बुधे ॥ ११ ॥ वृक्षारोपणवाणिज्यंसर्वसिद्धिश्चकारयेत् ॥ वाहनानिचयश्राणिगमनंचविधीयते ॥१२॥ पूर्वात्रयंमघाश्लेषाविशाखाकृत्तिकायमः॥ मू

कीजे शिरो पांव देय छत्र धारे. पट्टादि.राज्योपकरण अभि-
षेक अश्वारोहण ये शुभ हैं ॥ १५ ॥ १६ ॥

पुनर्वसुद्वयपौष्णंमृगाश्वीचकरत्रय ॥मूलंश्रु
तित्रयंमैत्रंभिषक्कर्मणिगृह्यते ॥ १७ ॥ सोम
शुक्रसुरेज्यानांवार शकुनमुत्तमम् ॥ लग्नेषु
चापमीनेषुवृषोग्राह्यस्तुलाधर ॥ १८ ॥

टीका—पुनर्वस्विति । पु. रे. मृ अ ह चि स्वा मू
श्र ध श अनु सोम
शुक्र.गुरुवार. ध मी
वृ तु ये लग्न उत्तम

अथ भैषज्यमुहूर्तचक्रम्. —

पु	पु	रे.	मृ.	अश्वि	ह	चि	स्वा
मू	श्र	ध	श.	अ	म	श	व
ध.	मृ.	तु	१	१२	२	७	लग्न

इन सब विचारके वैद्यसे औषध कराइये ॥ १७ ॥ १८ ॥

इति भैषज्यकर्ममुहूर्तः ।

अमावास्याष्टमीत्याज्यापूर्णिमाचचतुर्दशी
रविवारेवर्जनीयोगोपशूनांचनिर्गम ॥१९॥
चित्रोत्तरारोहिणीचश्रवणोपिविवर्जितः ॥ प
वेषुपशुजातीनामशुभोनिर्गमोभवेत् ॥२०॥

टीका–अमेति । ३० ।८।१५। १४।ये तिथि. रविवार अरु तीनों उत्तरा, श्र. चि. रो. ये नक्षत्र पशुनके देनेमें वर्जित हैं. इतनेते अन्यमें दीजिये ॥ १९ ॥ २० ॥ इति पशुनिर्गमनिर्णयः ।

अथ पशुनिष्कासनमुहूर्तचक्रम्.

अ	भ	कृ	मृ	आ.	पु	पु	आ	म	पू.
ह	स्वा.	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	ध	श	उभे
रे	नक्ष	च	म	बु	बृ	शु	श	ना	र.
२	३	४	५	६	७	९	१०	१२	१३

उत्तरायांविशाखायांरोहिण्यांचपुनर्वसौ॥न वम्यांचचतुर्दश्यामष्टम्यांनानयेत्पशून् २१

टीका–उत्तरेति । तीनों उत्तरा, वि. रो. पुन. ये नक्षत्र अरु ९ । १४ । ८ ये तिथि पशु लेनेमें त्याज्य हैं ॥ २१ ॥

पूर्वामैत्रद्वयंमूलंवासवंरेवतीकरः ॥ पुनर्वसुद्वयंग्राह्यंपशूनांक्रयविक्रये ॥ २२ ॥ पुष्याभाद्रपदायुग्मस्वातीश्रुतिरथाश्विनी ॥ कृत्तोत्तरामृगोमैत्रंतथाश्लेषाचरेवती ॥ २३ ॥ ग्राह्याणिभानिचैतानिक्रयविक्रययोर्बुधैः॥चंद्रभार्गवजीवानांवाराःशकुनभुसमय ॥ २४ ॥

टीका-पूर्वात्रय, अनु ज्ये मू ध रे. ह पु पु इन नक्षत्र-नमें पशु लीजै ॥ २२ ॥ पुष्य, पू शा स्वा म अश्वि ह. उत्तरात्रय, मृ अनु आश्ले रे. ये नक्षत्र अरु चंद्र, गुरु, शुक्र ये वार उत्तम शकुनहैं ये सब क्रयविक्रयविषे शुभ हैं ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ इति क्रयविक्रयः ।

नंदातिथेश्चनामादौपूर्णानांचतथांतके।घटिकैकाशुभेत्याज्यातिथिगंडघटीद्वयम्२५॥

टीका-नंदातिथिन के आदि पूर्णाकेअंत एकएक घटीअशुभहै

अथ तिथिगंडांतचक्रम्,					
१५	अंत	घटी	आ	प	१
५	अंत	घटी	आ.	न.	१
१०	अंत.	घटी	आ	प.	१

ज्येष्ठाश्लेषारेवतीचनामांतेघटिकाद्वयम्
आदौमूलमघाश्विन्याभगंडघटिकाद्वयम्

टीका-ज्येष्ठा, आश्ले रे अंत२घटी, मू म अश्विनीके आदि २ घटी शुभ कार्यमें अशुभ हैं ॥ २६ ॥

अथ नक्षत्रगंडांतचक्रम्.							
ज्ये	अं	घ	२	मू.	आ	घ	२
अश्ले.	अं	घ	२	म.	आ	घ.	२
रे.	अं.	घ.	२	अश्वि	आ	घ.	२

मीनवृश्चिककर्कांते घटिकार्धं परित्यजेत् ॥
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ॥

टीका—मीन वृश्चिक कर्कके अंत घटीमें धन सिंहके आदि घटिनमें शुभ कार्य न कीजे ॥ २७ ॥ इति लग्नगंडांतम् ।

अथ लग्नगंडांतचक्रम्.

१२	अं	प	३०	आ.	प.	३०	१
८	अं	प	३०	आ.	प.	३०	९
४	अं	प	३०	आ.	प.	३०	५

तिथिगंडे भगंडे च लग्नगंडे च जातकः ॥ न जीवति यदा जातो जीवेत्तु धनी भवेत् ॥ २८ ॥

टीका—तिथीति। तिथि नक्षत्र लग्नके गंडांतोंमें जन्में हुए न जीवे. अरु जो जीवे तो धनी होय ॥ २८ ॥ इति गंडांतफ० ।

सप्तम्यां च रवेर्वारे बुधश्च प्रतिपद्दिने ॥ संवर्ताख्यस्तदा योगो वर्जनीयः सदा बुधैः ॥ २९ ॥

टीका—सप्तम्यांचेति। सप्तमी रवि परे वा बुधको प्रतिपद् तिथि आवे तो संवर्ताख्य योग कहिये सो शुभकार्यको वर्जित है ॥ २९ ॥ इति संवर्ताख्ययोगः ।

शुक्रे नंदा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ॥ गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ३० ॥

टीका—शुक्रइति। शुक्रेनदा बुधे भद्रा, शनौ रिक्ता, कुजे जया गुरौ पूर्णा, होय तो सिद्धियोग कहिये ये शुभकार्यको सिद्धिप्रद हैं ॥ ३० ॥ इति सिद्धियोगः।

अथ सिद्धियोगचक्रम्.					
शु.	बु.	श.	मं.	गु.	वार.
१	२	३,	४	५	तिथि.
६	७,	८	९	१	तिथि.
११	१२.	१३,	१४.	१५.	तिथि.

विष्कंभ प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अतिगंडःसुकर्माचधृतिःशूलस्तथैवच ॥ ३१ ॥ गंडोवृद्धिर्ध्रुवश्चैवव्याघातोहर्षणस्तथा ॥ वज्रसिद्धिर्व्यतीपातोवरीयान्परिघ शिवः॥ ३२ ॥ सिद्ध साध्यःशुभ शुक्लो ब्रह्मापेंद्रोथवैधृति ॥ सप्तविंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥ ३३ ॥

टीका—विष्कंभेति। विष्कंभ १, प्रीति २, आयुष्मान् ३, सौभाग्य ४, शोभन ५, अतिगंड ६, सुकर्मा ७, धृति ८, शूल ९, गंड १०, वृद्धि ११, ध्रुव १२, व्याघात १३, हर्षण १४, वज्र १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १७ वरीयान् १८ परिघ १९ शिव २ सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३,

शुक्ल २४, ब्रह्म २५, ऐंद्र २६, वैधृति २७, ये योग नाम-तुल्य फलप्रद हैं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इति योगाः ।

तिथिंतुद्विगुणीकृत्वाहीनमेकेनकारयेत् ॥ सप्तभिस्तुहरेद्भागंशेषंकरणमुच्यते ॥ ३४ ॥ ववश्चबालवश्चैवकौलवस्तैतिलस्तथा ॥ गरश्चवणिजोविष्टिःसप्तैतानिचराणिच ॥३५॥ कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांशकुनिःपश्चिमेदले ॥ चतुष्पदश्चनागश्चअमावास्यादलद्वये ॥३६॥ शुक्लप्रतिपदायांचकिंस्तुघ्नःप्रथमेदले ॥ स्थिराण्येतानिचत्वारिकरणानिजगुर्बुधाः ३७॥ शुक्लप्रतिपदांतेचबवाख्यःकरणोभवेत् ॥ एकादशञ्चविज्ञेयाश्चरस्थिरविभागतः ॥३८॥

टीका—शुक्लप्रतिपदाते गततिथि वर्तमान तिथिसमेत दूनी करै एक घटावै. सातको भाग दीजै. जो अंक बचै सो करण जानियें ॥ ३४ ॥ वव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, ये सात करण चरसंज्ञक कहियें ॥ ३५ ॥ कृष्णेति। कृष्ण चतुर्दशीको अंतदल शकुनिनाम करण कहिये,अरु अमावा-

क्षाके पूर्वदलको चतुष्पद करण तथा अंतदलको नागनाम करण कहिये ॥ ३६ ॥ शुक्लप्रतिपदाके पूर्वदलको किंस्तुघ्ननाम करण कहिये इनचारोंको ध्रुवमन स्थिर कहतेहैं. अंतदलको बव कहैं, ये ग्यारह करण चर स्थिर विभाग कर जानियें अरु कृष्ण १ के पूर्वदलमें बालव धरिके क्रमसों कृष्ण चतुर्दशीके पूर्वदलतांई फिरि शुक्ल प्रतिपदाके अंतदलमें बव धरि ये या क्रमसों सदा गुनवें हैं ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इति करणनिर्णयः।

कृष्णपक्षकरणानि															
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	ति.
बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	चतुष्प	पूर्व
कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	शकुनि	नाग	अं

शुक्लपक्षकरणानि															
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	ति.
किंस्तुघ्न	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	पूर्व
बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	अं

दस्रोयमोनलोधाताचंद्रोरुद्रोदितिर्गुरुः ॥ भु
जंगमश्चपितरोभगोर्यमादिवाकरौ ॥ ३९ ॥
त्वष्टावायुःशक्रवह्नीमित्रःशक्रश्चनिर्ऋतिः ॥
जलंविश्वेविधिर्विष्णुर्वासवोवरुणस्तथा४०॥
अजैकपादहिर्बुध्न्यःपूषेतिकथिताबुधैः॥ अ
ष्टाविंशतिसंख्यानांनक्षत्राणामधीश्वराः४१

टीका—अश्विनीका स्वामी अश्विनीकुमार. भरणी यम. कृत्तिका अग्नि. रोहिणी ब्रह्मा. मृग चंद्रमा. आ० रुद्र. पु० अदिति. पुष्य गुरु. आश्ले० सर्प. म० पितर. पू० फा० भग. उ० फा० अर्यमा. ह० सूर्य. चि० त्वष्टा. स्वा० वायु. वि० इंद्राग्नी. अनु० मित्र. ज्ये० इंद्र. मू० राक्षस. पू० षा० जल. उ० षा० विश्वेदेव. अभि० विधि. श्र० विष्णु. ध० वासव. श० वरुण पू० भा० अजैकपाद्. उ० भा० अहिर्बुध्न्य. रे० पूषा ये नक्षत्रनके स्वामी कहियें. जिस देवताकी प्रतिष्ठा पूजा करै ताको नक्षत्र लीजे ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ इतिनक्षत्राधिपतयः ।

अथ नक्षत्रदेवताकोष्ठकम्

(१)														
म	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	[illegible]
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	देवता
(२)														
स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अभि	श्र	ध	श	पू	उ	रे	[illegible]
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	देवता

इतिनक्षत्रदेवताकोष्ठकम्.

इतिश्रीकाशिनाथभट्टाचार्यविरचिते शीघ्रबोधसंग्रहे

नक्षत्रप्रकरणं नाम द्वितीयप्रकरणं संपूर्णम्.

इति द्वितीयप्रकरणम्.

श्रीः ।

अथ तृतीयप्रकरणप्रारंभः ।

श्लोक.

शिरोमुखंकर्णनेत्रंस्पृष्ट्वापृच्छतियोनरः ॥
सुवर्णधनधान्यानांलाभस्तत्रनसंशयः ॥१॥
स्कंधग्रीवाकंठहस्तस्पर्शेलाभोहिदुःखतः ॥
कुक्षिनाभिसमालंभेभक्ष्यपानादिसिध्यति
॥ २ ॥ जंघालिंगकटिस्पर्शेकन्यालाभःसु-
तोद्भवः ॥ जानुगुल्फपदस्पर्शेमहाक्लेशःप्र-
जायते ॥ ३ ॥ केशस्पर्शेभवेन्मृत्युःफलस्प-
र्शेशुभंभवेत् ॥ तृणांगारकसंस्पर्शेकार्यसि-
द्धिर्नजायते ॥४॥ काष्ठकंकपटस्पर्शेग्रहपी-
डाभयंभवेत् ॥ सुगंधमद्यभांडादिस्पर्शेसि-
द्धिःप्रजायते ॥ ५ ॥ शून्यालयश्मशाने
चशुष्ककाष्ठक्षतेतरौ॥गुल्फभस्माधमस्था-
नेप्रश्नक्लेशःप्रजायते ॥ ६ ॥ देवगृहेनदीती-

रेदिव्यस्थानेशुभंभवेत् ॥ शुभंदिक्स्त्रीरिवसिद्धिर्विदिक्षुचनजायते ॥ ७ ॥

टीका–शिरइति। जो प्रश्न पूछे सो माथे, मुख, कान, नेत्र अपने हाथ छुए तो निःसंदेह धनधान्य पावे कंध, ग्रीवा, कंठ, हाथ छुए होइ तो लाभ दुःखते होइ जो कान, नाभि छुए तो सामला मोक्षमादिक पावे जो बन लिंग कटि छुए तो कन्या वा पुत्र होइ अरु मोढा पांव छुए तो महाक्लेश पावे केश छुए तो मृत्यु होइ फल छुए शुभ होइ तृण अग्निते सिद्धि न होइ काष्ठ, कीच, वस्त्र छुए महभय होइ सुगंध वा मद्यपात्र छुए सिद्धि होइ अरु शून्यगृह, मसान, सूखे काठ पर धापल तरुलता विषे भस्मपै बैठे पूछैतो क्लेश पावे ।१।२।३ ४।५।६ ॥ देवेति। देवस्थान, नदीके तीर, पवित्र ठौरमें अरु शुभ दिशानके सन्मुख हो पूछे तो शुभ कहे. जो विदिशा व्हैके पूछे तो अशुभ है ॥ ७ ॥ इत्यमस्पर्शनादि प्रश्नः ।

तिस्रोमीनेचमेषेचघटीपचश्रुतिःपलम् ॥ च तस्रश्चवृषेकुंभेपला प्रोक्तास्तुषोडश॥८॥ मिथुनेमकरेपंचघटिकाधि. । ॥ पंच-

कर्कैचचापेचशशिवेदाःपलाःस्मृताः ॥ ९ ॥ कन्यांपंचतुलेपंचपलश्चंद्रस्तथाग्नयः॥ घटिकाःपंचसिंहेऽलौद्व्यवेदाःपलाःस्मृताः ॥ एवं लग्नप्रमाणंस्यात्कथितंपूर्वसूरिभिः ॥ १० ॥

टीका–तिस्र इति. मी. मे. ३।४५ वृ. कुं. ४।१६ मि. म. ५।५ क. ध. ५।४१ क.तुला५।३१ सिं.वृश्चिक.५।४२ या प्रकार लग्नप्रमाण पंडित कहै हैं॥८।९।१०॥ इतिलग्नप्रमा०

सूर्येधेनुश्चताम्रंचगोधूमंरक्तचंदनम्॥चंद्रेशंखंचंदनंचवस्त्रंचसिततंडुलाः॥ ११ ॥ कुजेवृषःप्रदातव्योरक्तवस्त्रंगुडौदनम् ॥ बुधेकर्पूरमुद्गाश्चहरिद्राचहरिन्मणिः॥ १२ ॥ पीतवस्त्रद्वयंजीवेहरिद्राचणकानिच ॥ अश्वःशुक्रेसितोदेयःशुक्लधान्यानियानि च ॥ १३ ॥ शनौतैलंतिलादेयाःकृष्णागोदानमुत्तमम् ॥ राहोश्चमहिषीछागौमाषाश्चतिलसर्षपाः ॥ ॥ १४ ॥ अजमेषौच्छलातव्यौकेतोचाग्नंच

मिश्रिवस् ॥ स्वर्णगोविप्रपूजाभिःसर्वेषां शांतिरुत्तमा ॥ १५ ॥

टीका—अथ महाणां दानानि॥ सूर्येति॥ सूर्यको लालगाई, तांबा, गेहूं, रक्तवस्त्र चंद्रको शंख, चंदन, श्वेतवस्त्र, श्वेत चावल भौमको वृषभ, रक्तवस्त्र, गुडौदन बुधको कर्पूर, मूंग, हलदी, हरितमणि बृहस्पतिको दो पीतवस्त्र, हलदी, चणाकी दाल शुक्रको श्वेत घोडा, श्वेत धान्य शनिको तैल, तिल, काली गाई राहुको भैंसी, बकरा, उडद, तिल,सरसों केतुको बकरा, मेंढा, सवत्सा अरु घी सोना, गेहूं, ब्राह्मणपूजा इत्यादिक सर्व ग्रहनके दोषोंको शांत करते हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ इति महदानानि।

मेषेगुरौसुभिक्षंचसुवृष्टिश्चसुखीनरः ॥ १६ ॥ वृषेगुरौस्वल्पवृष्टिःप्रजापीडाचविग्रहः ॥ अनावृष्टि प्रजानाशोरौरवंमिथुनेगुरौ ॥ १७ ॥ कर्केगुरौमहावृष्टिर्देशभंगोमहर्घता॥ सिंहेगुरौसुभिक्षंचसुवृष्टिश्चप्रजासुखम् ॥ १८ ॥ क-

न्यागुरौरोगपीडासुभिक्षंसस्यजन्मच॥ तुले गुरौसस्यनाशोबहुक्षीरंप्रजायते ॥१९॥ अलौजीवेचदुर्भिक्षंराजचौरोरगाद्भयम् ॥ चापे गुरौशुभावृष्टिःशुभंसस्यमहर्घता ॥२०॥ दुर्भिक्षंमकरेजीवेराजयुद्धंपशुक्षयः ॥ कुंभेगुरौ चदुर्भिक्षंधातुमूलंमहर्घता ॥ २१ ॥ दुर्भिक्षं दक्षिणेदेशेझषेजीवेनचान्यगे ॥ २२ ॥

टीका—मेषइति । जब मेषराशिमें बृहस्पति आवै तब सुभिक्ष होइ. वर्षा अधिक होइ. मनुष्य सुखित रहैं. अरु वृषराशिमें बृहस्पति आवे तो वर्षा थोड़ी होइ. प्रजाको पीडा होइ विग्रह फैले. अरु मिथुनका बृहस्पति होइ तब वर्षा अति अच्छी होइ. वैर बाढै. प्रजाको पीडा होइ. अरु कर्क उच्चस्थानमें बृहस्पति आवे तो वर्षा बहुत होइ. अरु देशभंग होइ. अन्न महँगा होइ. सिंहको बृहस्पति होइ तो सुभिक्ष करै. वर्षा अधिक होइ.प्रजा सुखित रहे. कन्याका गुरु होइ तो रोगपीडा धान्योतपत्ति अरु अन्न सस्ता होइ तुलाके गुरु खेतीनाश करैं, दूध बहुत,वृश्चिकके राज,चोर,सर्प,भय दुर्भिक्ष करे.धनके वर्षा

खेती पहुत करे. रस महँगो करे. मकरके महादुर्भिक्ष, राज-नको पुष्ट पशुनको नाश करे कुंभके दुर्भिक्ष, धातु महँगी करे. मीनके गुरु होइ तो, दक्षिणदेशमें दुर्भिक्ष करे अन्यदेशमें नहीं ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

इति द्वादशराशिगतगुरुफलम् ।

मार्गकार्तिकसंक्रांतौवृष्टिर्वर्षतिमध्यमा ॥ पौषेमाघेनृणांसौख्यंसस्यपूर्णावसुधरा ॥ २३ ॥ चैत्रफाल्गुनवैशाखज्येष्ठानांसंक्रमेघनः ॥ यदिवर्षतिसर्वत्रसुभिक्षंचप्रजासुखम् ॥ २४ ॥ आषाढेसंक्रमेवृष्टौव्याधिश्चश्रावणेसुखम् ॥ भाद्रेचवहवोरोगाःसुखंसर्वत्रचाश्विने ॥ २५ ॥ इत्येषामपिसंक्रांतौवृष्टिश्चापिशुभाशुभम् ॥

टीका—अर्थ संक्रांतिवृष्टिपरीक्षायां शुभाशुभम्। मार्ग इति। जो मार्ग, कार्तिकके दिन थोरी वा बहुत वर्षा होइ तो वर्षाऋतुमें मध्यम वर्षा होइ अरु समय मध्यम होइ पौषहवि पौष माघमें संक्रांतिदिन मेघ वर्षे तो प्रजा सुखी रहे अरु सर्व अन्न अधिक प्राप्ति होइ अरु चैत्र फाल्गुन, वैशाखमें तथा

ज्येष्ठमें संक्रांतिके दिन मेघवर्षे तौ सर्वत्र सुभिक्ष रहै. अरु अन्नादिक सकल पदार्थनते संतुष्ट आरोग्यता पूर्वक प्रजासुखी रहै. यदिति । जो आषाढमें संक्रांतिके दिन जल वर्षे तो प्रजाको रोग अधिक होय अरु जो श्रावणमें संक्रांतिके दिन जल वर्षे तौ प्रजाको अधिक सुख होय. भाद्रेति। जो भादोंमें संक्रांतिके दिन मेघ वर्षे तो अनेक रोग होंयँ अरु जो आसोजमें संक्रांतिको जल वर्षे तो आनंद होय. ऐसे संक्रांतियोंसे वर्षा दीसके शुभाशुभ फल कहना ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

इति मासे संक्रांतिवृष्टिफलम् ।

चैत्रस्यशुक्लपंचम्यांपूर्ववायुर्घनागमः॥ भाद्रे
गुणत्रयेमौल्यंरसानांजायतेतदा ॥ २७ ॥
ज्येष्ठस्यशुक्लपंचम्यांवृष्टौपश्चिममारुतः॥ त
दाचतुर्गुणंमौल्यंधान्यानांकार्तिकेभवेत् २८
श्रावणेशुक्लपंचम्यांवृष्टिर्वातोदिनद्वयम् ॥
दक्षिणपश्चिमेज्ञेयंदुर्भिक्षंधान्यसंक्षयः॥२९॥
चित्रास्वातीविशाखासुश्रावणेचैववर्षति ॥
सर्वरत्नंपरित्यक्त्वाकर्तव्यश्चान्नसंचयः ३०॥

टीका—चैत्रेति। जो चैत्र शुक्ल पंचमीको पूर्व पवन चले और मेघ वर्षे तो भादोंमें रस, मोरस, घृत तिगुनेमोल बिकै जो ज्येष्ठ शुक्लपंचमीको पश्चिम पवन चले तो मेघ वर्षे और कार्तिकमें अन्न चौगुने मोल बिकै जो श्रावण शुक्लपंचमीको दो दिन पवन चलै तो मेघ वर्षे दक्षिण पश्चिममें धान्य क्षय होय॥२७॥२८॥२९॥ इति शुक्लपंचमीफलम्॥ जो श्रावणमें चित्रा, स्वाती, विशाखा इन नक्षत्रोंमें वर्षे तो सर्वरत्न बेचके अन्न संचय कीजे ॥ ३० ॥ इति नक्षत्रवृष्टिफलम् ॥

आषाढपूर्णिमायांचेदनिलोवातिनिर्ऋतौ ॥
अनावृष्टिर्धान्यनाशोजलंकूपेनदृश्यते ३१ ॥
आषाढपूर्णिमायांतुवायव्येयदिमारुत ॥
धर्मसिद्धिस्तदालोके धनधान्यगृहेगृहे ३२॥
आषाढपूर्णिमायांतुईशान्ये वातिमारुत ॥ सु
खिनोहि वदालोकागीतवाद्यपरायणाः ३३॥
वह्निकोणेवह्निभीति पश्चिमेचजलाद्रयस्तथा
न्यत्रयदिवायु स्यात्सुभिक्षंजायतेतदा ३४ ॥

सर्वमासेपूर्णिमायांभूमिकंपोयदाभवेत्॥ उ
ल्कातारावज्रपातैर्ग्रसितौशशिसूर्यकौ ३५
धूम्रकेतुःशक्रचापग्रहणेबहुधायदा॥ तदासौ
सर्ववस्तूनांजायतेचमहर्घता ॥ ३६ ॥

टीका—आषाढेति। आषाढके पूर्णिमाको नैर्ऋत पवन चहै तौ वर्षा थोरी होय अरु धान्यभी थोरे उपजैं,तृण थोरे उपजैं कूप सूख जायँ, जो आषाढ पौर्णिमाको वायव्य पवन चलै तौ लोक धर्मशील रहैं और धनधान्य होय. अरु जो ईशान मारुत वहै तौ लोक सुख आनंदसों रहैं. अरु जो आग्नेय पवन चलै तौ अग्निभय होय. पश्चिम पवन चलै तो जलभय होय. जो और दिशनकी पवन चलै तौ सुभिक्ष होय. और जो कोई पौर्णिमाको भूमिकंप वा दिनमें तारा टूटैं उल्कापात वा वज्रपात होय. वा चंद्रसूर्य ग्रसै वा केतु उदय होय इंद्रधनुष कटै तौ सब वस्तु महँगी होंय। ग्रहणमें अवश्य॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ इत्युत्पाताः ॥

आषाढेशुक्लपंचम्यां द्वितीयायांचवर्षति॥ग्र

दिमेघस्तदावृष्टि श्रावणे जायतेध्रुवम्॥ ३७
तृतीयायांपूर्ववायुः पूर्वेयातिचवारिद ॥ य
दिज्योन्नितदाभाद्रेवर्षतिविपुलंजलम् ३८॥
चतुर्थ्यांदक्षिणेवायुर्मेघ पूर्वेचगच्छति॥ आ
श्विनेचतदामासेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम्॥३९॥

टीका—आषाढ शुक्लपंचमी वा द्वितीयाको वर्षे तो श्राव-
णमें विशेष वर्षे अरु ज्येष्ठ ३ पूर्वको पवन चले अरु मेघ
पूर्व आकाशमें जावें भादोंमें जल ज्यादा वर्षे चौथको पवन
दक्षिणदिशाका चले अरु पूर्वको मेघ जावें तौ क्वारमें विशेष
वर्षे ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

पंचम्यामुत्तरेवायुर्दृश्यतेचयदाबुधैः ॥ तदा
चकार्तिकेमासेवृष्टिर्भवतिभूयसी ॥ ४० ॥
चतुष्टयेचदिवसेयदावर्षतिवारिदः ॥ अति
वृष्ट्याचदुर्भिक्षंजायतेनात्रसंशयः ॥ ४१ ॥
दिनद्वयंयदावातावातिदक्षिणपश्चिमे ॥ व
दानश्यंतिधान्यानिदुर्भिक्षंचप्रजायते॥४२।

तृतीयायांचपंचम्यांवातःपूर्वोत्तरेयदि ॥ तदाधान्यानिजायंतेसर्वंकृतयुगोपमम्॥४३॥

टीका–पंचम्यामिति। जो आषाढ शुक्लपंचमीको उत्तर पवन वहै तौ कार्तिकमें अधिक वर्षै. जो आषाढकी।२।३।४।५। को वर्षै तौ पृथ्वीपर अतिवृष्टिसे दुर्भिक्ष परै. जो आषाढ सुदी।२। ३।को पवन दक्षिणते पश्चिमको जावै तो धान्यका नाश होय और दुर्भिक्ष परै. जो आषाढ सुदी ३।५ को पूर्ववाही वा उत्तरवाही पवन चलै तौ बहुत अन्नसमृद्धि होय और सतयुगकी समान सर्व होय ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ इत्याषाढे द्वितीयादिदिनचतुष्टयफलम्.

पौषेमूलभरण्यंतंचंद्रचारेणगर्भति ॥ आर्द्रादितोविशाखांतंसूर्यचारेणवर्षति ॥ ४४ ॥

यदितिष्ठतिभौमस्यक्षेत्रेकोपिग्रहस्तदा ॥ षण्मासंतुषधान्यानांजायतेचमहर्घता ॥४५॥

शुक्रक्षेत्रेकुजेमासद्वयंनूनंमहर्घता ॥ चंद्रेच दिननाथेचसर्वरोगःशुभंतदा ॥ ४६ ॥ शनौ

राहौसर्वधान्यसमर्घराजविग्रहम् ॥ बुधक्षेत्रे रवौचंद्रेविरोध सर्वभूभुजाम् ॥४७॥उत्पत्ति स्तुसुधान्यानांपंचमासंप्रजायते ॥ सुभिक्षतु महावृष्टि पशूनांतृणसंकुलम् ॥ ४८ ॥

टीका—पौषइति । जो पौषमासमें मूलते भरणीपर्यंत चंद्र-नक्षत्रमें बादर न होय तौ आर्द्राते विशाखालौं, सूर्यनक्षत्र बर्षे जो भौमके क्षेत्रमें कोऊ ग्रह होय तौ ६ छह मासताईं धान्य महँगे रहैं. जो शुक्रके क्षेत्रमें भौमको उदय होय तौ२ मास महँगो रहै जो चंद्रमा अथवा सूर्य उदय होय तौ रोगकरै परंतु क्षेमरहै. शनि वा राहु उदय होय तौ रोगकरै. परंतु क्षेम रहै जो शनि वा राहु उदय होय तौ सर्वान्न महँगो होय अरु राजविग्रह करै जो बुधके क्षेत्रमें चंद्र सूर्य उदय होय तौ रा-जनमें विरुद्धकरै.अरु पांच मासमें धान्य उपजै अतिवृष्टिहोय-पशुनको तृण बहुत होय ॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥

शुक्रक्षेत्रेबुधश्चंद्रश्चंद्रक्षेत्रेभृगोःसुतः ॥ पार्थ डीनांभवेद्वृद्धिर्धान्यानांचमहर्घता ॥ ४९ ॥ बुधक्षेत्रेशनौचंद्रेसमधान्यमहर्घता ॥ शुक्रक्षे

त्रेगुरौभौमेकार्पासादिमहर्घता ॥ ५० ॥ भौ
मक्षेत्रेशनौराहुस्ताम्रादीनांमहर्घता ॥ शनि
क्षेत्रेशनीराहुःसुभिक्षंचंद्रभास्करे ॥ ५१ ॥
पशुनाशोधान्यवृद्धिर्गुडादीनांमहर्घता॥ गुरु
क्षेत्रेशनौराहौस्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः॥ ५२ ॥
भौमेराज्ञांविरोधःस्याद्बुधेवृष्टिश्चभूयसी॥ तृ
णवृद्धिःपशूनांचसौख्यं धान्यंबहूनिच ॥५३
भौमक्षेत्रेयदासंतिराहुभौमार्कभार्गवाः ॥ ष
ण्मासंगुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता ॥ ५४ ॥
मंदक्षेत्रेयदासंतिमंदराहुबुधास्तथा ॥ चतु
ष्पदानांनाशश्चवृद्धिगदानांचजायते ॥ ५५ ॥

टीका—शुक्रेति।जो शुक्रकी राशिमें बुध अरु चंद्रमा होय अरु चंद्रमाकी राशिमें शुक्र होय तौ पाषंड बढै. अन्न महँगो होय. बुधके गृहमें शनि वा चंद्रमा होय तौ सातों अन्न महँगे बिकैं. शुक्रके घरमें गुरु वा भौम होय तौ कपासादिनीरस महँगे बिकैं जो भौमके घरमें शनि वा राहु होय तौ ताम्रादि

धातु महँगी बिकै जो शनिके घरमें राहु होय तो सुभिक्ष होय, जो सूर्यचंद्रके घरमें शनि राहु होय,तो पशु मरे अरु गुडादिक महँगे होंय धान्य अधिक होय जो गुरुके घर शनि राहु होय तो स्वल्पवृष्टि अरु तृणादिक क्षय होय जो गुरुके क्षेत्रमें मंगल होय तो राजनमें विरोध होय जो गुरुके घर बुध होय तो वर्षा अधिक होय, तृण विशेष, पशुनको सुख होय धान्य विशेष होय, भौमके घर राहु,भौम, सूर्य वा शुक्र, होय, तो ६ छह मांसताईं गुड, कपास, घृत, दुग्ध, महगे रहैं. अरु जो शनिक्षेत्रविषे राहु, शनैश्चर अरु बुध ये ग्रह स्थित होंय तो चौपायनको नाश होय अरु द्विपद जो पक्षी अरु मनुष्य उन को नाश होय ॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥

भौमक्षेत्रेयदासंतिशुक्रमंदनिशाकराः ॥ व
हामुक्तापशूनांचशंखस्यचमर्धता ॥ ५६ ॥
भौमक्षेत्रेभार्गवश्चधान्यानांचमहर्घता ॥ श
निक्षेत्रेरवौचंद्रेवस्त्राणांचमहर्घता ॥ ५७ ॥
शुक्रक्षेत्रेगुरुर्भौम प्रजापीडाप्रजायते ॥ ग्रह
राशिसमायोगेफलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥५८ ॥

चंद्रोदयेकुजक्षेत्रेतुपधान्यस्यवृद्धये ॥ चंद्रो
दयेभृगुक्षेत्रेस्वल्पवृद्धिःक्रयाणके ॥ ५९ ॥ प्र
जापीडाबुधक्षेत्रेसोमशुक्रोदयोभवेत् ॥ रवि
क्षेत्रेतुलावृद्धिःशनिसोमभृगूदये ॥ ६० ॥
चंद्रक्षेत्रेशुक्रचंद्रबुधानामुदयोभवेत्॥ षण्मा
संस्याद्वदुर्भिक्षमतिवृष्टिश्चजायते ॥ ६१ ॥
उदितौचबुधक्षेत्रेयदिराहुशनैश्चरौ ॥ पशुक्ष
यःप्रजापीडाधान्यानांचमहर्घता ॥ ६२ ॥
शुक्रक्षेत्रेसोमसूर्यसूर्यपुत्रोदयोयदा ॥उदया
स्तमहापीडाजायतेचमहर्घता ॥ ६३ ॥

टीका—जो भौमक्षेत्रमें शुक्र, शनि, चंद्रमा, उदय करैं तौ मोती, शंख, पशु महँगे होंय. जो भौमक्षेत्रमें शुक्र उदय करै तो अन्न महँगा होय शनिक्षेत्रमें रवि, चंद्र उदयसे वस्त्र महँगे होंय. अरुण पीत अवश्य. जो शुक्रक्षेत्रमें गुरु वा भौम उदय करै तो प्रजाकों पीडा होइ अरु ग्रहराशिको योग परै तो ऐसे फल करैं जो भौमक्षेत्रमें चंद्रोदय होय तो धान्यवृद्धि करै

शुक्रके क्षेत्रमें चन्द्रोदय होय तो खरीद करनेवालेको लाभ वृद्धि करै. जो बुधके क्षेत्रमें चंद्र शुक्र उदय करै तो प्रजाको पीडा करै. जो रविक्षेत्रमें शनि चंद्र उदय करैं तो चोर बढे. जो चंद्रक्षेत्रमें शुक्र,चन्द्र,बुध उदय करैं तो६ छह मास दुर्भिक्ष रहै अरु वर्षा अधिक होय जो बुधके क्षेत्रविषे राहु अरु श नैश्चरका उदय होय तो पशुनका क्षय होय अरु प्रजाको पीडा होय अरु अन्न महँगो होय अरु शुक्रके क्षेत्रमें बुध सूर्य,शनि उदय करैं तो उदयअस्तपर्यंत संसारपीडित होय अरु अन्न महँगोहोय ॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥६३॥

यदोदयःशनिक्षेत्रेभौमभास्करयोर्भवेत् ॥ घृतानांचतदावृद्धिर्गुडानांचमहर्घता ॥ ६४ ॥
यदासावुदितश्चैवशनिक्षेत्रेशनैश्चरः ॥ तदा सौतृणकाष्ठानांलोहानांचमहर्घता ॥ ६५ ॥

टीका—यदेति। जो शनिके क्षेत्रमें सूर्यभौमको उदय होइ तो घृतकी वृद्धि होइ अरु एक वस्त्र तथा मंगलिक वस्तु सब सस्ती होवैं तथा गुडादि महँगो होइ जो शनिक्षेत्रमें शनिउदय होइ तो तृण, काठ, लोह महँगे होवैं ॥६४॥६५॥इतिमहोदे०

आर्द्रायांतुयदाभौमःशनिरग्नेस्तथाभवेत् ॥ बुधोभाद्रेचदुर्भिक्षंसुभिक्षंभृगुनंदने॥६६॥ गुरुर्यदाविशाखायांतदाधान्यमहर्घता॥ मंगलंवर्षकालश्चशनौसर्वत्रमंगलम् ॥ ६७ ॥ सुभिक्षंचानुराधायांयदिकोपिग्रहोभवेत्॥कल्याणंचसुभिक्षंचाऽऽश्लेषायांचास्थितेगुरौ॥६८॥ कार्पासाबहवोमंदेभौमेकटकपीडनम् ॥बुधेतिलाश्चमाषाश्चमहर्घेवर्षकालतः ॥ ६९ ॥ सूर्येसर्वाणिधान्यानिमहर्घाणिभवंतिच ॥ शुक्रेचमहतीवर्षासस्यानिसकलानिच॥ ७०॥

टीका–आर्द्रायामिति । जो आर्द्राके भौम होय वा कृत्तिकाके शनि,अरु भाद्रपदाके बुध होयँ तौ दुर्भिक्ष करैं अरु जो शुक्र होय तौ सस्ता होय॥६६॥ जो विशाखाके गुरु होय तौ अन्न महँगो होइ.परंतु वर्षपर्यंत मंगल रहै अरु जो शनि होइ तौ सर्व मंगल विनोद होइ अरु मंगल,कार्य होइ ॥ ६७ ॥ सुभिक्षमिति।जो अनुराधाको कोऊ ग्रह होइ तौ सुभिक्ष होइ.

अरु जो आश्लेषाको गुरु होइ तौ प्रजाके कल्याण होइ अरु अन्नका सुभिक्ष होइ ॥ ६८ ॥ कार्पासइति। जो आश्लेषा शनि होइ तौ कार्पास बहुत होइ जो भौम होइ तो फौजको पीडा करै अरु जो आश्लेषाके बुध होइ तौ वर्षसे तिल अरु उड़द महँगे होइ जो आश्लेषाके सूर्य होइ तौ सब अन्न महँगे होवें अरु जो आश्लेषाके शुक्र होवें तौ वर्षा बहुत होइ अरु सकल अन्न बहुत उत्पन्न होवें ॥ ६९ ॥ ७० ॥

मूलेकुलित्थमुद्गानांगुरौवृद्धिःप्रजायते॥ भौमेमुद्गस्यनाश स्याद्बुधेचसर्वसंपदः ॥ ७१ ॥ पूर्वाषाढागतेभौमेपीडाचपशुपक्षिणाम् ॥ केतौमहर्घतामंदेजायतेचमहर्घता ॥ ७२ ॥ उत्तराषाढकेजीवेगुडानांचमहर्घता॥ भौमेचपशुजातीनांजायतेचमहर्घता ॥ ७३ ॥ अभिजिन्नामनक्षत्रेयदाछायासुतोभवेत् ॥ सर्वसस्यानिजायंतिसुभिक्षंचकुजेतथा ॥७४॥ श्रवणेचयदाजीवस्तदास्युःसर्वसंपदः ॥ बु

धेराजसुतत्रासःशनौभूरिक्षुकारकः ॥७५॥ कृत्तिकायांचरोहिण्यांयदाजीवोहितिष्ठति॥ मध्यमानिचसस्यानितदावृष्टिश्चमध्यमा ॥ ॥७६॥ आर्द्रायांमृगशीर्षेचयदावाचस्पतिः स्थितः ॥ दुर्भिक्षंस्यादनावृष्टिःप्रजानांचस दाशिवम्॥ ७७॥ फाल्गुनीद्वयहस्तेषुमघा यांचयदागुरुः ॥ सुभिक्षंचसुवृष्टिश्चप्रजानां स्यादरोगता॥ ७८॥

टीका--मूल इति। जो मूलके गुरु होयँ तौ कुलित्थ अरु मूंग बहुत होयँ. जो भौम होय तौ मूँगनाश होय बुध होय तौ सर्व संपदा होय ॥७१॥ पूर्वेति। जो पूर्वाषाढाको भौम होइ तो पशुपक्षिनको अतिपीडा होइ. केतु होइ तौ सब वस्तु महँगी करै. तैसेही शनैश्चर करै ॥७२॥उत्तरेति। जो उत्तराषाढाके गुरु होयँ तौ गुड महँगा होय भौम होइ तौ चौपाए महँगे होयँ जो अभिजित्के शनि वा भौम होयँ तौ सर्वान्न उपजैं. सुभिक्ष होइ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ श्रवणे इति। श्रवणके गुरु होयँ तौ सर्व संपदा करैं, बुध होइ तौ राजपुत्रनको पीडा करै. शनि होइ

तो ईख उपारे अधिक होवें ॥ ७५ ॥ कृत्तिकेति । जो कृत्तिका वा रोहिणीको गुरु होइ तो अन्न मध्यम उपजें वर्षा मध्यम होइ ॥ ७६ ॥ आर्द्रेति । जो आर्द्रा तथा मृगशिरके गुरु होवें तो दुर्भिक्ष होइ।वर्षा अधु प्रजाको सदा अकल्याण होइ ॥ ७७ ॥ फाल्गुनेति । मघा, पूर्वा, उत्तराफाल्गुनी, हस्तके गुरु होवें तो सुभिक्ष अरु आरोग्यता होय ॥ ७८ ॥

चित्रास्वात्योर्यदाजीवस्तदाचित्रपयोधरः॥ विचित्राणिमर्त्येवसस्यानिचक्कचित्कचित् ॥ ७९ ॥ विशाखामैत्रयोर्जीवेधान्यंवर्षाच मध्यमम् ॥ ज्येष्ठामूलेमासयुग्मंवृष्टिर्मास द्वयेनच ॥ ८० ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढेस्थितो यदिबृहस्पतिः ॥ तदारोग्यसुभिक्षंचसुवृष्टिश्चप्रजायते ॥ ८१ ॥ अनावृष्टिश्चदुर्भिक्षं रेवत्यांसंस्थितेगुरौ ॥ धनिष्ठायांचशुक्रेपिपीडामपातिहस्तिनाम् ॥ ८२ ॥ इतिश्रीकाशिनाथभट्टाचार्यकृतौशीघ्रबोधसंग्रहेतृतीयप्रकरणंसमाप्तम् ॥ ३ ॥

टीका–चित्रेति। चित्रा तथा स्वातीको गुरु होइ तौ विचित्र वर्षा होइ. अरु कहूं विचित्र पृथ्वी फलै फुलै अरु धान्य क्वचित् क्वचित् होइ ॥ ७९ ॥ विशाखेति। विशाखा अरु अनुराधाको गुरु होइ तौ वर्षा अरु अन्न मध्यम रहे. ज्येष्ठा,मूलके गुरुमें दो मास वर्षे ॥ ८० ॥ पूर्वेति। पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढाके गुरुमें प्रजा आरोग्य रहे वर्षा अच्छी होइ अरु सुभिक्ष होइ ॥ ८१ ॥ अनावृष्टिरिति। जो रेवतीके गुरु होयँ तौ वर्षा न गिरे. तथा अन्न महँगे होयँ धनिष्ठाके शुक्र होयँ तौ हाथीनको पीडा होइ ॥ ८२ ॥ इति नक्षत्रे गुरु विचारः ॥ ७ ॥

इति श्रीकाशिनाथभट्टाचार्यविरचिते शीघ्रबोधे लोकोपकारक तिलकवार्तिके तृतीयप्रकरणं समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थप्रकरणप्रारम्भः।

अथ होडाचक्रम्।

अथ नक्षत्र विचार कहते हैं. एक नक्षत्रके चारिचरण हैं जिस चरणमें जन्म होइ तिस चरणके अक्षरको आदिदैके नाम पुत्र कन्याको राखिये सो कहै हैं चू, चे, चो, ला अश्विनी १ ली, लू, ले, लो, भरणी २ आ, ई, ऊ, ए, कृत्तिका ३ ओ, वा, वी, वु, रोहिणी४ वे, वो, का, की, मृग०५ कू, घ, ङ, छ, आर्द्रा६ के, को, हा, ही, पुनर्वसु ७ हू, हे, हो, पुष्य ८ डी, डू, डे, डो, आश्लेषा ९ मा, मी, मू, मे, मघा १० मो, टा, टी, टू, पूर्वा०११ टे, टो, पा, पी, उत्तरा०१२. पू, ष, ण, ठ, हस्त १३ पे, पो, रा, री, चित्रा १४ रू, रे, रो, ता, स्वाती १५. ती, तु, ते, तो, विशाखा १६ ना, नी, नू, ने, अनुराधा १७ नो, या, यी, यू, ज्येष्ठा १८ ये, यो, भा, भी, मूल १९ भू, धा, फा, ढा, पूर्वाषाढा २० भे, भो, जा, जी, उत्तराषाढा २१ जू, जे, जो, खा, अभिजित्२२. खी, खू खे खो श्रवण २३ गा गी गू, गे. धनिष्ठा २४ गो सा, सी सू

शतभिषा २५. से, सो, दा, दी, पूर्वाभाद्रपदा २६. दू, थ, झ, ञ, उत्तराभाद्रपदा २७. दे, दो, चा, ची, रेवती २८ इति होडाचक्रम्।

अथ लघ्वंकराशयः।

आला मेष १. ऊवा वृषभ २. काछा मि. ३. डाहा कर्क ४. माठा सिं. ५. पाठा क. राता तु. ७. नोया वृ. ८. भाधा धन ९. खागा मकर १०. गोसा कुंभ ११. दाचा मीन ॥ १२ ॥ इति लघुराशिः।

तनुर्धनंसहजसुहृत्पुत्रशत्रुकलत्रकाः ॥ मरणंधर्मकर्मायव्ययोद्वादशराशयः ॥ १ ॥

द्वादशभावानां कोष्ठकम्.											
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तनु	धन	सह	सुह	पुत्र	श	कलत्र	मृत्यु	धर्म.	कर्म	आय	व्यय.

अथ सपादनक्षत्रद्वयतोराशिक्रमः।

सप्तविंशतिभानांचनवभिर्नवभिःपदैः ॥ अश्विनीप्रमुखानांचमेषाद्याराशयःस्मृताः २ ॥

टीका—अश्विनीभरणीकृत्तिकापादं मेषः १, कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणीमृगशिरार्द्धं वृषभः २, मृगशिरार्द्धमार्द्रा

पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनम् ३, पुनर्वसुपादमेकंच पुष्याश्लेषांत कर्कः४,मघापूर्वाउत्तराफाल्गुनीपादमेकसिंहः५,उत्तराफाल्गुनी त्रयः पादाः हस्तचित्रार्द्धं कन्या६, चित्रार्द्धं स्वाती विशाखा-पादत्रय तुला७,विशाखापादमेकमनुराधाज्येष्ठांतं वृश्चिकः ८, मूलंच पूर्वाषाढोत्तराषाढापादमेक धनुः ९, उत्तराषाढत्रयपाद अभिजिच्छ्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरः १०, धनिष्ठार्द्धं शतभिषापू र्वाभाद्रपदापादत्रयकुंभः ११, पूर्वाभाद्रपदापादमेकमुत्तराभा द्रपदरेवत्यंतं मीनः १२ ॥ इति सपादनक्षत्रराशिक्रमः ।

तृतीयेदशमेपंचनवपंचमयोर्दश ॥ दशपंचा ष्टमेतुर्येसप्तमेविंशविस्तथा ॥ ३ ॥ विश्वा स्तुग्रहदृष्टीनामेषुस्थानेषुउच्यते ॥ पंचवि शोपकंप्रोक्तपादमेकंक्रमोच्यते ॥ आयव्य येधनेषष्ठेलग्नेसेटोनदृश्यते ॥ ४ ॥

टीका—अथ महाणांदृष्टिनिर्णयः । पांच विस्वे दृष्टिको १ चरण कहिये ऐसेही २० विस्वेतौं चरण जानियें आय कहे ११ व्यय १२ धन २ लग्न १ षष्ठ ६ इन स्थानोंमें कोई ग्रहकी दृष्टि नहीं होती है ॥ ३ ॥ ४ ॥

तृतीयेदशमेमंदोनवमेपंचमेगुरुः ॥ विंशते
वींक्ष्यतेविश्वांश्चतुर्थेचाष्टमेकुजः ॥५॥ रवि
वारेणसंयुक्तायदास्यान्माघज्येष्ठयोः।अमा
वास्यातदापृथ्वीरुंडमुंडाचजायते ॥६॥ अ
यनास्त्रिगुणामासाएकपंचाशतायुताः॥ दलि
ताघटिकाज्ञेयाःपलास्त्रैगुण्यवासराः ॥ ७ ॥
एकपक्षेयदायांतितिथयश्चत्रयोदश ॥ त्रय
स्तत्रक्षयंयांतिवाजिनोमनुजागजाः ॥ ८ ॥

टीका—तृतीयेति। तिसरे ३ दशमें १० शनि. अरु नवमें ९ पांचएं ५ गुरु. चौथे ४ आठयें ८ मंगल. या प्रकार तीनों ग्रह वीसौं विश्वा संपूर्ण दृष्टि जहां परैं तहां ते देखते हैं ॥५॥ इति ग्रहाणां विंशोपका दृष्टिः॥रवीति।माघ ज्येष्ठकी अमावास्याको जो रविवार परै तौ रुंड मुंड पृथ्वीमें परै ॥ ६ ॥ अयनेति।मकरको अयन लगै तिस दिनते वर्तमानदिनताईं जे मास पूरे वीते होयँ सो तिगुने करै. तामें ५१ जोरिके आधे करै जो रहै सो घटी जानियें. अरु महीननते अधिक जो दिन बढैं सो तिगुने करै. जो अंक होइ तनते पल तन घरियें

जोरिके दिनप्रमाण शुद्ध, या प्रकार जानिये अरु कर्ककी अयनके दिलते गिमके या प्रकार पनितर्यों रात्रिप्र माण जानिये परतु उत्तरायणके सूर्य विषे दिन बढते हैं वहां दिन दिन प्रमाण अरु दक्षिणायनमें रात्रि बढती है. तहां रात्रि प्रमाण बनाइये ॥ ७ ॥ एक इति । जो एक पक्षमें तेरह तिथि होयँ तो मनुष्योंको नाश करैं अरु घोडनका नाश करैं अरु हाथिनका क्षय होय यह पर्योक्त दिनका पक्ष तीनों घोनिको विपित है ॥ ८ ॥

सूर्ययुक्ताच्चनक्षत्राद्दिनभंचत्रयंत्रयम् ॥ आ
दित्यश्चबुधश्शुक्रःशनिश्चंद्र कुजस्तथा ॥९॥
जीवोराहुश्चकेतुश्चहोमेकूरानशोभना ॥ आ
दित्येतुभवेच्छोकोबुधेसंपत्तिरुत्तमा ॥ १० ॥
शुक्रेचैवधनप्राप्तिःशनौपीडाचजायते ॥ चंद्रे
भवतिलाभश्चभौमेचबंधुबंधनम् ॥ ११ ॥
गुरौपरमकल्याणंराहौहानिश्चसर्वदा॥ केतौ
चप्राणसंदेहोषह्निचक्रमुदाहृतम् ॥ १२ ॥
सैकातिथिर्वारयुताकृवासाशेषेग्रणेभ्रेभुविश्

द्दिवासः ॥ सौख्यायहोमेशशियुग्मशेषेप्रा णार्थनाशोदिविभूतलेच ॥ १३ ॥

टीका—सूर्येति । जिस नक्षत्रके सूर्य होयँ तहांते तीन तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रहोंको बांटि दीजे. सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चंद्र, मंगल, गुरु, राहु, केतु, या क्रमते दिनके नक्षत्रको विचारिये. जो क्रूरके भागमें परे तो शोकप्रद हैं. बुध उत्तम संपत्ति. शुक्र धर्मप्रद. शनि पीडा. चंद्र लाभ. भौम बंधन करै, गुरु परम कल्याण. राहु सदा हानि. केतुके भागमें प्राणसंदेह, या प्रकार वह्निचक्र जानिये ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ अथ होमकर्मण्यग्निचक्रम्. सैकेति । तिथिवार जोरिके एक और मिलाइ चारनको भाग दीजे. ३ और शून्य शेष होइ तौ अग्नि पृथ्वीमें जानिये, सुख प्रद है. अरु १ बचे तौ स्वर्गमें जानिये, अर्थनाश करै. २ बचै तौ पातालमें जानिये, प्राणनाश करै. ॥ १३ ॥ इत्यग्निचक्रम् ।

अथ संवत्सरनामानि.

प्रभवोविभवःशुक्लःप्रमोदोथप्रजापतिः ॥ अंगिराःश्रीमुखोभावोयुवाधातातथेश्वरः १४॥ बहुधान्यःप्रमाथीचविक्रमोवृषभस्तथा । चि

प्रमातु सुभानुश्चतारणःपार्थिवोव्यय १५॥
अष्टाविंशतिरित्येकासृष्टिरत्रप्रजायते ॥
सर्वजित्सर्वधारीचविरोधीविकृतिस्तथा ॥
॥ १६ ॥ खरोनंदननामाचविजयश्च
जयोऽपर ॥ मन्मथोदुर्मुखश्चैवहेमलंबि
विलंबकौ ॥ १७॥ विकारीशार्वरीचाथप्लवं
ग.शुभकृत्तथा ॥ शोभनश्चतथाक्रोधीविश्वा
वसुस्तथापर ॥ १८ ॥ पराभवाख्योह्यपरो
विष्णोरित्येकविंशतिः ॥ प्लवंगः कीलक सौ
म्यस्तथासाधारणोपरः ॥१९॥विरोधकृत्स
माख्यात परिधावीप्रमादकृत् ॥ आनंदोरा
क्षसश्चाथनलश्चपिंगलस्तथा ॥ २० ॥ कालः
सिद्धार्थिरौद्रोचदुर्मतिर्दुंदुभिस्तथा॥अपरो
रुधिरोद्गारोरक्ताक्षीक्रोधनस्तथा ॥ २१ ॥
क्षयकृत्परतश्चान्योरुद्रस्यापितुर्विंशतिः॥व
त्सराःषष्टिराख्यातानामतुल्यफलप्रदाः२१

टीका—प्रभव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति ५ अंगिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ युवा ९ धाता १० ईश्वर ११ बहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृषभ १५ चित्रभानु १६ सुभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० इति ब्रह्मविंशतिः ॥ सर्वजित् १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विकृति ४ खर ५ नंदन ६ विजय ७ जय ८ मन्मथ ९ दुर्मुख १० हेमलंबी ११ विलंब १२ विकारी १३ शार्वरी १४ प्लव. १५ शुभकृत् १६ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वावसु १९ पराभव २० इति विष्णुविंशतिः ॥ प्लवंग १ कीलक २ सौम्य ३ साधारण ४ विरोधकृत् ५ परिधावी ६ प्रमादी ७ आनंद ८ राक्षस ९ नल १० पिंगल ११ काल १२ सिद्धार्थ १३ रौद्र १४ दुर्मति १५ दुंदुभि १६ रुधिरोद्गारी १७ रक्ताक्षी १८ क्रोधन १९ क्षय २० इतिरुद्रविंशतिः ॥ ये ६० संवत्सरहैं. जैसे नाम वैसा उनका फल है १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ इतिषष्टिसंवत्सरनामानि ।

मेषवृश्चिकयोर्भौमःशुक्रोवृषतुलाधिपः ॥ बुधःकन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्यचंद्रमाः ॥

॥ २३ ॥ स्वामीज्योर्मीनधनुषी-शनिर्मकर कुंभयो ॥ सिंहस्याधिपतिःसूर्यःकथितोग णकोत्तमै ॥२४॥कन्याराहुगृहप्रोक्तंकेतोश्च मिथुनस्मृतम् ॥ कार्तिकादिगुणामासागता भिस्तिथिभिर्युताः ॥२५॥ सप्तविंशतिभिर्न्यू नादिनतारैकसयुता ॥ राहोर्मीचंधनश्चैवके तोस्तस्माच्चसप्तमम् ॥ २६ ॥

टीका—मेषेति । मेष वृश्चिकके स्वामी मंगल वृष तुलाके शुक्र कन्या मिथुनके बुध कर्कके चन्द्रमा मीन धनके गुरु मकर कुंभके शनि सिंहके सूर्य जानिये अरु कन्याके पति राहु मिथुनके केतु इति राशीशाः ॥ कार्तिकते गतमास दूने करि गत तिथियें जोरि२७को भाग दीजै शेष पचै सो नक्षत्र जानिये अश्विनीते गनिये धनुके राहु मीन ताके सातवें केतु मीन मिथुन के जानिये ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

धारेरूपतिथौरुद्रावध्यांपंचदशैवच ॥ एकात्रिं शत्पलेदद्यात्सूर्यसंक्रमणंभवेत्॥२७॥ सार्धा

ष्टमासेपूर्वस्मिन्नुदितःपश्यते भृगुः ॥सार्धमा
सद्वयंसूर्यैमंडलेचततोवसेत् ॥२८॥ उदितः
पश्चिमेभागेनवमासंचवीक्ष्यते॥ दशाहंसूर्य
मध्येतुततश्चास्तमितोभवेत् ॥ २९॥एकग्रा
मेपुरेवापिदुर्भिक्षेराजविग्रहे ॥ तीर्थयात्रावि
वाहेचशुक्रदोषोनविद्यते ॥ ३० ॥ दशार्द्रा
द्याःस्त्रियस्ताराविशाखाद्यानपुंसकाः ॥ ति-
स्रस्ततश्चमूलाद्याःपुरुषाश्चचतुर्दश॥ ३१ ॥
स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिःस्त्रीनपुंसकयोःक्वचित् ॥
स्त्रीस्त्रियोःशीतलच्छायायोगःपुरुषयोर्नच ॥

टीका—वार इति । अव संक्रांतिक्रिया. प्रथम वर्षकी संक्रांतिके वारमें १ जोरिये. अरु तिथिनमें ११ जोरिये घरि नमें १५जोरिये. पलनमें ३१ जोरिये. या भाँति जो संक्रांति बनावनी होय तहांकी संक्रांतिमें जोरिके भाग दीजे तो शुद्ध संक्रांति बन जाइ. सार्धेति । साढेआठ मास शुक्र पूर्वमें उदय रहे अरु अढाई मास सूर्यमंडलमें रहे. उपरांत ९मास पश्चिमें

उदय होत है.फिर दशदिन सूर्यमंडलमें, फिर पूर्वमें उदय होइ एकग्राम वसे शुक्रदोष न मनिये अरु दुर्भिक्ष राजविग्रहपरे विवाह तीर्थयात्रामें दक्षिण सम्मुख शुक्रदोष न मनिये ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इति शुक्रदोषनिर्णय । दशइति आर्द्रादि१० नक्षत्र स्त्री हैं विशाखादि ३ नपुंसकहैं मूलादि १४पुरुष संज्ञक हैं जो स्त्रीनक्षत्र होइ अरु सूर्यपुरुषमें आवे तौ महावृष्टि होइ स्त्रीनपुंसकमें थोरो वर्षे स्त्रीस्त्रीमें मेघछाया रहै पुरुष पुरुषमें न वर्षे ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

उदयास्तगवः शुक्रोबुधश्चवृष्टिकारकः ॥ जलराशिस्थितेचद्रेपक्षांतेसंक्रमेतथा ॥ ३३ ॥ बुध शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवींमहीं॥ तयोरंतर्गतोभानु समुद्रमपिशोषयेत् ॥३४ ॥ चलत्यंगारकेवृष्टिस्त्रिधावृष्टिःशनैश्चरे ॥ वारिपूर्णां महींकृत्वापश्चात्संचरतेगुरुः ॥३५॥ भानोरग्रेमहीपुत्रोजलशोषःप्रजायते ॥ भानो पश्चाद्धरासूनुर्वृष्टिर्भवतिभूयसी ॥ ३६ ॥

टीका–उदयइति। शुक्र बुधके उदय अस्तमें वर्षा होइ. अरु जलराशि चंद्रमामें पक्षके अंत संक्रांति परै तो वर्षा होइ. ॥ ३३ ॥ बुधेति। जो बुध शुक्र समीप होइ तौ पृथ्वीभरमें जल वर्षै अरु जो तिनके बीचमें सूर्य आन परै तो समुद्रके जलको भी शोषलेइ ॥ ३४ ॥ मंगल चलै तौ मेघ वर्षै अरु सनिके उदय अस्त तथा चलवेमें जहां जहां वर्षै अरु तिनके पाछे गुरु आवे तौ पृथ्वीभरमैं वर्षै. ॥ ३५ ॥ अरु सूर्यके आगे भौम भये जल शोष होइ. जो पाछे होइ तौ अति वर्षा करै ॥ ३६ ॥ इति नक्षत्रग्रहवर्षाभेदाः।

कर्कैकुंभेचसिंहेचमकरेचादिवाकरः ॥ पूर्वेवापश्चिमेवापिद्वारंकुर्यान्ववेश्मनः ॥ ३७ ॥ मेषेवृषेवृश्चिकेचतुलेचापियदारविः ॥ गृहद्वारंतदाकुर्यादुत्तरंवापदक्षिणम ॥३८॥धनुमिथुनकन्यायांमीनेचयदिभानुमान् ॥ नकर्तव्यंतदागेहंकृतेदुःखमवाप्नुयात् ॥ ३९ ॥

टीका–क. कु. सिं. म. क.सूर्यमें गृह बनावै, तो घरका द्वार पूर्व पश्चिममें शुभ है. ॥ ३७ ॥ मे. वृष. वृश्चि. तु. ये

सूर्यमें उत्तर दक्षिण घरका द्वार शुभ है ॥ ३८ ॥ प मि
क भी सूर्यमें गृह निर्माण करना अशुभ और दुःखप्रद है
॥ ३९ ॥ इति द्वारमुहूर्तः ।

यद्येकमासेग्रहणजायतेशशिसूर्ययो ॥ शस्त्र
कोपेःक्षययातितदाभयंपरस्परम् ॥ ४० ॥ ग्र
स्तोदितौचग्रस्तास्तौधान्यभूपालनाशकौ ॥
सर्वग्रस्तौचन्द्रसूर्यौदुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥४१॥

टीका—यद्येति । जो एकमासविषे चंद्र सूर्य दोनों ग्रहण
परैं तो राजभमें क्रोधसे युद्ध होई ॥ ४० ॥ जो सूर्य चंद्रमा
ग्रसित उदय होयँ तौ अन्नको नाश करैं अरु जो ग्रसितअस्त
होइ तौ राजाका नाश करै. सर्व ग्रस्त होइ तौ दुर्भिक्ष परै
अरु मरण होइ ॥ ४१ ॥

उपरागोयदामेषेपीड्यंतेचसदाजनाः ॥ कां
बोजाश्चकिराताश्चपांचालाश्चकलिंगकाः ॥
॥ ४२ ॥ वृषेचग्रहणेपीडापशवःपथिकाज
नाः ॥ महांतोमनुजाश्चैवपीड्यंतेचसर्वदा
॥ ४३ ॥ रविचन्द्रमसोग्रस्तौमिथुनेचवरांग

नाः ॥ पीडयंतेबाह्लिकामत्स्यायमुनातटवा
सिनः ॥ ४४ ॥ कर्कटेग्रहणेपीडामल्लादीनां
चजायते ॥ अंतरंसर्वराज्ञांचतदामत्स्यनि
वासिनः ॥ ४५ ॥ सिंहेचग्रहणेपीडासर्वेषां
वनवासिनाम् ॥ नृपाणांनृपतुल्यानांमनुजा
नांचजायते ॥ ४६ ॥ कन्यायांग्रहणेपीडात्रि
पुराणांचशालिनाम् ॥ कवीनांलेखकानांच
जायतेपीडनंतथा ॥ ४७ ॥ तुलायामुपरा
गेचपीडनंबककाकयोः ॥ कौंकणस्थाःपरा
श्चैवपीडयंतेसाधवश्चये ॥ ४८ वृश्चिकेग्र
हणेपीडासर्पजातेश्चजायते ॥ औडुंबरस्यम
द्रस्यचोलयौधेयकस्यच ॥ ४९ ॥ यदोपरा
गश्चापेचतदामत्स्याश्चवाजिनः ॥ विदेहम
त्स्यपांचालाःपीडयंतेभिषक्कोविदौ ॥५०॥म
करेग्रहणेपीडानीचानांमंत्रवादिनाम् ॥ स्था
वराणांजंगमानांचित्रकूटस्थसंक्षयः ॥५१॥

कुंभेचैवोपरागेचपश्चिमस्थैस्तथार्बुदेः ॥ त-
स्करेरोगिणांमृत्यु पीडयंतिबहुधाजना ५२॥
मीनोपरागेपीडयंतेजलद्रव्याणिसागराः ॥
जलोपजीविनोलोकायेचयत्रप्रविष्ठिता ५३

टीका—जो मेष राशिपर ग्रहण परे तो कांबोज, किरात, पांचाल, कलिंग देशको पीडा करे ॥ ४२ ॥ जो वृष परे तो पशु अरु पथिक अरु बडे मनुष्यको पीडा करे ॥ ४३ ॥ अरु जो मिथुनपै परे तो सुंदर श्रेष्ठ स्त्री,अरु बाल्हिक देश मत्स्यादि, जीवजंतु व मत्स्य देशको वा यमुनातटवासिनको पीडा करे, ॥ ४४ ॥ जो कर्कपै तो मल्लादि अरु अंतर्वेदि सर्वारा,मत्स्यदेशको पीडा करे ॥ ४५ ॥ जो सिंहपै परे तो सर्व वनवासि अरु राजा अरु राजनके सब मनुष्योंको पीडा करे ॥ ४६ ॥ जो कन्याराशिपर ग्रहण परे तो त्रिपुष्कर देशवासिनको पीडा करे अरु धनको नाश करे अरु कवि चतुरनको पीडा करे अरु लेखक चित्रकारनको पीडा करे. ॥ ४७ ॥ जो तुला राशि परे तो पश्चिमको काक मकारिनको कौंकणकाण्वनको अरु साधुनको पीडा करे ॥ ४८ ॥ जो वृश्चिकपै परे तो सर्प-

नके जातिनको अरु औदुंबरको अरु चोलवासिनको पीडा करे ॥ ४९ ॥ यदेति । धनराशिग्रहण होय तौ मत्स्य, घोड़े, तपस्वी मल्ल, पांचालवासी, मिथिलावासी अरु वैद्य अरु पंडितको पीडा होइ ॥५०॥ मकरेति । जो मकरराशिको ग्रहण होइ तौ नीच मंत्रवादिनको पीडा करे अरु स्थावर जंगम पशु पीडा पावैं. अरु चित्रकूटवासिनको क्षय होइ ॥ ५१ ॥ कुंभेति। कुंभपै परै तौ अर्बुददेश अरु पश्चिमपर्वतवासी पीडा पावैं. और चोर पीडित होयँ ॥५२ ॥ मीनेति ।मीनेपै परै तो जलजंतु जलजीवि अरु जलद्रव्य पीडा पावैं. ॥५३॥ इति ग्रहणफलम्.

गृहकृत्यांसुवृष्टिश्चनीहारश्चभयंकरः ।। विद्यु
त्पातोऽग्निदाहोथपरिवेषश्चरोगकृत् ॥ ५४ ॥
दिग्दाहोग्निभयंकुर्यान्निर्घातोनृपभीतिदः ॥
झंझावायुश्चंडशब्दश्चौरभीतिप्रदायकौ ५५॥
ग्रहयुद्धेराजयुद्धंकेतुदृष्टेतथैवच ॥ ग्रहणांते
महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥ ५६ ॥

टीका—अथ दैव्यापत्ति कहते हैं. ग्रह इति जो विना पवन आकाशते भयंकर धूरि बर्षै मनुष्य न सूझे विना मेघ

बिजुरी चमके अग्निदाह अरु सूर्यके रक्तमंडल परे तो रोग होइ जो सूर्यास्त गये पीछे फेर दिशनमें अग्नि लगीसी वा पीतरंग आकाश दीसे तो अग्निभय होइ सूखे मेघ गर्जे तो राजनको भय, अतिवेगसे प्रचंड शब्द वायु चले तो चोरभय होइ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ग्रह इति,। ग्रहनको युद्ध होइ वा केतु उदय होइ तो राजनमें युद्ध होइ अरु ग्रहण परे पीछे जलवर्षे तो सर्व दोष मिटैं ॥ ५६ ॥ इतिदैवोत्पातफलम्.।

अश्विन्यामुदितेकेतौ हन्यात्सलकपालकम् ॥ भरण्यांचकिरातेशंकृत्तिकायांकलिंगकम्॥ ५७ ॥ रोहिण्यांशूरसेनेशंमृगेकाशिनराधिपम् ॥ आर्द्रायांजलजाधीशंभस्मकेशंपुनर्वसौ ॥५८ ॥ पुष्येचमगधाधीशसार्पस्य काशिकाधिपम् ॥ मघायांवंगनाथंचपूर्वायांपांड्डनायकम्॥५९॥ उज्जयिन्यांनृपंहंतिउत्तराफाल्गुनीगव ॥ गडकाधिपतिंहस्तेचित्रायांकुरुभूभुजाम् ॥६० ॥स्वात्यांकाश्मारकांबोजभूपतीनांविनाशक ॥ इक्ष्वाकुकुरुदेशानां

विशाखायांविनाशकः ॥ ६१ ॥ मैत्रेयोग्रस्य नाथंचसार्वभौमंतथेंद्रकम् ॥ आंध्रमद्रकनाथं चमूलस्थोहंतिनिश्चितम् ॥६२॥ पूर्वाषाढेका शिराजाउत्तराषाढकेतथा ॥ पौंड्रयशैबवैदेह्य श्रवणेकैकयेश्वरः ॥ ६३ ॥ वसौ पंचनदाधी शंवारुणेसिंहलेश्वरम् ॥ पूर्वाभाद्रपदेवंगनैमि षेशंतथोत्तरे ॥६४॥ रेवत्यामुदितेकेतौकिरा ताधिपतेर्वधः ॥ धूम्राकारःसपुच्छश्चकेतुर्वि श्वस्यपीडकः ॥ ६५ ॥

टीका–अश्विन्यामिति । जो अश्विनीमें केतुको उदय होइ तौ लंकादेशके राजाको पीडा करै. भरणीमें होइ तौ किरात देशके राजाको पीडा करै. कृत्तिकामें होइ तौ कलिंग देशके राजाको पीडा करै ॥ ५७ ॥ रोहिण्यामिति । रोहिणीमें होइ तौ शूरसेन देशके राजाको, मृगशिरमें का शिराजाको,आर्द्रामें जलज कहे पद्मक देशके राजाको पुन र्वसुमें अश्मक देशके राजाको पीडा करै ॥ ५८ ॥ पुष्यमें

मगधदेशाधिपतिको, आश्लेषामें काशिपतिको, मघामें बंगदेशपतिको,पूर्वाफाल्गुनीमें पांडुदेशपतिको पीडा करै ॥ ५९ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें उज्जैननृपतिको, हस्तमें होइ तो मंजनदीके राजाको पीडा करै. चित्रामें कुरुक्षेत्रके राजाको हनन करे ॥ ६० ॥ स्वातीको होइ तौ कासमीरके राजाको अरु कांबोजदेशके भूपतिको विनाश करै. विशाखाको होइ तौ इक्ष्वाकु देशके राजाको अरु कुरुदेशाधिपतिको विनाश करै ॥ ६१ ॥ जो अनुराधामें होइ तौ अवंदेशके नाथको पीडा करै अरु ज्येष्ठामें होइ तौ सर्व पृथ्वीपति चक्रवर्तिको पीडे मूलमें होइ तौ अधकदेश अरु मद्रक देशके राजाको पीडा करै ॥६२ ॥ पूर्वा इति । पूर्वाषाढामें होइ तौ काशिके राजाको पीडा करै. उत्तराषाढमेंहोइ तौ पौंड्रदेश अरु शैव देशके अरु मैथिल देशके राजाको पीडा करै. श्रवणमें होइ तौ कैकेय देशके राजाको पीडा करै ॥६३॥ धनिष्ठामें होइ तौ पंचनदीतटके राजाको पीडा करै. शतभिषामें होइ तौ सिंहल देशके राजाको पीडा करै पूर्वाभाद्रपदामें होइतौ बंगाल देशके राजाको पीडा करै ॥६४॥ उत्तराभाद्रपदाके होइ तौ नैमिषारण्यवासिनको पीडा करै.रेवत्यामिति।जो रेवती

में केतु उदय करे तो किरात देशके राजाको पीडा करे. अरु केतुको स्वरूप धूँवाँके समान पुच्छसहित होता है. सो विश्व को पीडाप्रद होता है ॥ ६५ ॥ इति केतूदयफलम् ।

भानुभौमार्किवारेषु कार्तिके दुक्षयो भवेत् ॥ आयुष्मान्स्वातिसंयुक्तो नृपनाशः पशुक्षयः ॥ ६६ ॥ धनुर्नक्रं च मेषाद्याश्चत्वारस्तु निशाचराः ॥ ते विना मिथुनं पंच ज्ञेयाः पृष्ठोदयास्तु थे ॥ ६७ ॥ शीर्षोदयाश्च चत्वारः सिंहाद्याः कुंभ एव च ॥ दिवाबलास्तु मीनस्तु बली रात्रौ तथा दिने ॥ ६८ ॥

टीका–भानुरिति। जो कार्तिकके अमावस, दिवाली रवि, भौम, शनिवारमें परे तो अरु स्वातीनक्षत्र आयुष्मान् योग संयुक्त होइ तो राजनको नाश करे अरु युद्धादिक अधिक होइ. अरु पशुनका क्षय होइ ॥ ६६ ॥ धनु, मकर, मेष, वृष, कर्क, मिथुन इनकी निशाचर संज्ञा कहिये. अरु मिथुन विना ये पांचोंकी पृष्ठोदय संज्ञा कहते हैं ॥ ६७ ॥ शीर्ष इति। सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ इन राशिनकी

शीर्षोदय संज्ञा कहिये अरु मीन लग्न दिवा बली है. अरु रात्रि विषेभी बलवान् है. जैसे दिनविषे ॥ ६८ ॥

वदर्क्षंद्विगुणंकृत्वारामैर्हीनंचकारयेत्॥मुनिभिश्चहरेद्भागंशेषंकिलभतेफलम् ॥ ६९ ॥चंद्रेवेदेचदुर्भिक्षंसुभिक्षंयुग्मबाणयो रामेरसेचमध्यंचशून्येशून्यंप्रकीर्तितम्॥७०॥अतिचारेगतेसौम्येक्रूरेवक्रत्वमागते॥हाहाभूतंजगत्सर्वंरुंडमुंडंचजायते ॥ ७१ ॥

टीका—वदिति। जिस लग्नमें जो पृच्छक पूछे तिसको द्विगुण करिके तीन ३ घटाय दीजे तिसमें सातको भाग दीजे जो शेष बचे ताको फल कहिये ॥६९॥ चन्द्रेति। जो १।४ बचैं तो दुर्भिक्ष कहिये अरु २।५ बचैं तो सुभिक्ष कहिये, अरु ३।६ बचैं तो भाव सम कहिये अरु शून्य पूर्ण होइ तो बाजारसे वस्तु न आवे ॥७०॥ अतीति। जो सौम्यग्रह अतिचार अरु पापग्रह वक्री होइ तो जगत्में हाहाकार मचावे पुरुषके रुंड मुंड गिरें ॥ ७१ ॥ इति वक्रातिचारफलम्।

मंत्रस्वीकरणंचैत्रेबहुदुःखफलप्रदम् ॥ वैशा
खेरत्नलाभश्चज्येष्ठेचमरणंध्रुवम्॥७२ ॥ आ
षाढेबंधुनाशःस्याच्छ्रावणेतुशुभावहः ॥ प्र
जाहानिर्भाद्रपदेसर्वत्रसुखमाश्विने ॥ ७३ ॥

टीका—अब मंत्रदीक्षा लेनेको शुभाशुभकहते हैं. मंत्रइति। जो चैत्रमासमें दीक्षा लेइ तौ बहुत दुःख पावै. वैशाख मासमें मंत्रदीक्षा लेवै तौ रत्नलाभ होय. ज्येष्ठमासमें लेवै तौ निश्चय मृत्यु होइ ॥ ७२ ॥ आषाढेति । जो आषाढमासमें मंत्र दीक्षा लेइतौ भ्रातृको नाश होइ. श्रावणमासमें मंत्रदीक्षा लेइ तौ शुभ होइ. भाद्रपद मासमें मंत्रदीक्षा लेवै तौ प्रजानाश अरु आश्विन मासमें मंत्रदीक्षा लेवै तौ सब सुख पावै ॥ ७३ ॥

कार्तिकेधनवृद्धिःस्यान्मार्गशीर्षेशुभप्रदम् ॥
पौषेतज्ज्ञानहानिः स्यान्माघेमेधाविवर्धनम्
फाल्गुनेसुखसौभाग्यंसर्वत्रपरिकीर्तितम् ॥
दीक्षाकर्मफलंमासेष्वित्यवंचशुभाशुभम् ॥

टीका—कार्तिक इति। जो कार्तिक मासमें मंत्रदीक्षा लेवै

तो धनकी वृद्धि होइ अगहन मासमें मंत्र सुने तो गुण कहिये पौष मासमें मंत्र सुने तो ज्ञानहानि होइ माघमासमें मंत्र सुने तो ज्ञानकी वृद्धि होइ ॥ ७४ ॥ फाल्गुनेति । जो फाल्गुन मासमें मंत्रदीक्षा लेवै तो सुख सौभाग्य अरु यशस्वी होइ ॥ ७५ ॥ इति मंत्रदीक्षानिर्णयः ।

मासंशुक्रबुधादित्याश्चंद्रःपाददिनद्वयम् भौमश्चिपक्षंजीवोब्दंसार्धवर्षद्वयंशनि ॥राहुःकेतुःसदाभुक्तिसार्धमेकंतुवत्सरम्।७६।सूर्यर्क्षाद्रसपृष्ठमे सुखयुतंवेदे शिरोमृत्युदबाहौना। गसुसौख्यभोगमतुलंगर्भेशरैर्नाशयेत ॥ द्वौ द्वौमुक्तिकरौकलत्रमरणमंघ्रौ द्वयंचक्रमाङ्गुलीचक्रविचारणंसुधिषणे प्रोक्तंदिग्गर्गादिभिः॥७७॥ ॥ इतिश्रीकाशिनाथभट्टाचार्यकृतौशीघ्रबोधसंग्रहेचतुर्थप्रकरणंसमाप्तम्४ ॥

टीका—मासमिति । सूर्य शुक्र बुध एक १ मासपर्यंत राशिमें रहते हैं अरु चंद्रमा २। सवादो दिन रहता है. मंगल १ ॥

डेढमास रहताहै. अरु बृहस्पति १ एक वर्षपर्यंत रहताहै. शनि २॥ अढाई वर्षपर्यंत रहताहै. राहु केतु १॥ डेढ १॥ डेढ वर्ष रहताहै ॥ ७६ ॥

इति ग्रहभुक्तिनिर्णयः । सूर्यर्क्षादिति । सूर्यनक्षत्रते ६ पृष्ठके श्रीप्रद हैं. माथेके ४ मृत्युप्रद हैं. बाहुके आठ ८ सुख प्रद हैं. गर्भके पांच ५ नाशप्रदहैं. भुजके २ भोग. चरण २ नाश ये चुल्हीनिमित्त दिननक्षत्रताईं विचारिये ॥ ७७ ॥

इति श्रीकाशीनाथभट्टाचार्यकृतो शीघ्रबोधसंग्रहे चतुर्थप्रकरणं समाप्तम् ॥ ४ ॥

इति शीघ्रबोधःसंपूर्णः ।

पुस्तक मिलनेका पत्ता-

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-मुम्बई.